ॐ

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

उठो अर्जुन - 5

वे जो, हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में, इतनी गंदी-गंदी बातें कहते हैं

16_04

यदि अपने हितों की सुरक्षा चाहते हो तो पहले सनातन धर्म के हितों की रक्षा करो, अन्यथा, तुम्हारी आज की यह उदासीनता तुम्हारे कल की आने वाली सन्तानों को बड़ी महंगी पड़ेगी

मानोज रखित

मेरा नाम **मा** से प्रारंभ होता है, जो है नारायणी माँ भवतारिणी के प्रति समर्पण का प्रतीक। इसे मनोज का अपभ्रंश न समझें, जो होता है कामदेव का प्रतीक।

© मानोज रखित 2005

हिंदी में प्रकाशित

प्रथम अँग्रेज़ी संस्करण जनवरी 2005
प्रथम हिंदी संस्करण जनवरी 2006

पाँचवी पुस्तक
नवम्बर 2006

अंतर्राष्ट्रीय मानक पुस्तक क्रमांक	संस्करण	प्रतियाँ
ISBN 81-89746-16-2	तृतीय (परिवर्धित)	2,000

वितरण

1000 प्रतियाँ मध्यभारत के आदिवासी क्षेत्रों के लिए, 500 उत्तर भारत के ग्रामीण अंचलों के लिए

मूल्य

लेखक, प्रकाशक, वितरक, तथा

परिकल्पना, शोधकर्म, संकलन, लेखन-टाइपिंग, संपादन, डी-टी-पी, प्रूफ रीडिंग, मुद्रण व्यवस्था, वित्त प्रबंध, पैकिंग, प्रेषण, अभिलेखन, वेबसाइट विकास, ब्लॉगस्पॉट विकास
मानोज रखित, 8-604 डिस्कवरी, दत्तपाड़ा मार्ग, बोरीवली पूर्व, मुम्बई 400 066
मोबाइल फोन +98 69 80 90 12 वायरलेस फोन (022) 64 51 30 51
ईमेल maanojrakhit@gmail.com वेब-साइट http://www.maanojrakhit.com

उत्तर एवं मध्य भारत में संपर्क-सूत्र

श्री रवि कान्त खरे (बाबाजी), DS-13 निराला नगर, लखनऊ 226 020, फोन 0522-2787083
श्री महेश चन्द्र लखनऊ +9235552983 सुश्री शची रैरिकर इन्दौर +9893567122
डॉ मनीष परिहार उन्नाव +9415934778 श्री मुरारी पचलंगिया गुड़गाव (0124) 5578665

कॉपीराइट में सीमित छूट

बिना किसी परिवर्तन के - 1) पत्र-पत्रिकाओं में 'धारावाहिक' रूप से प्रकाशित कर सकते हैं, जन-जागरण के उद्देश्य से। प्रकाशन की एक प्रति मुझे भेजना नहीं भूलेंगे 2) फोटोकॉपी निकाल कर वितरित कर सकते हैं, जन-जागरण के उद्देश्य से 3) स्थानीय भाषाओं में 'अनुवाद' कर, स्थानीय भाषाओं की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कर सकते हैं, जन-जागरण के उद्देश्य से। प्रकाशन की एक प्रति मुझे भेजना नहीं भूलेंगे 4) टाइपिंग एवं प्रूफ-रीडिंग के समय तारीखों एवं संख्याओं पर विशेष ध्यान दें ताकि गलतियाँ न रह जायें।

मुद्रण

देवेन्द्र वारंग, आइडियल प्रेस, अम्बावाडी, दहिसर पूर्व, मुम्बई 400 068, मो 98 92 07 54 31

वन्दना त्रयी

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

(प्रथम पूजा के अधिकारी एवं ज्ञान के देवता श्री गणेश की स्तुति में)

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता या
वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर् देवैस्सदा पूजिता
सा माम् पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा।।

(कला एवं विद्या की देवी माँ सरस्वती की स्तुति में)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुस्साक्षात परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

(गुरुओं के गुरु, अंतिम गुरू ब्रह्मा-विष्णु-महेश की स्तुति में)

समर्पण

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैवा, बुध्यात्मना वा प्रकृते स्वभावात।
करोमि यद्यद् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि।।

(शरीर, वचन, मन, इन्द्रिय, बुद्धि, आत्मा, प्रकृति, स्वभाव से मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व श्रीनारायण के चरणों में समर्पित है)

विषय-वस्तु

ईसाई धर्मावलम्बी, हिन्दू देवी-देवताओं को, किन गंदी नज़रों से देखते हैं? 6

तृतीय संस्करण में परिवर्धित विषयवस्तु 28

आपके सामने केवल दो ही विकल्प हैं 77

परिशिष्ट 77

किस दृष्टि से देखा मैंने अन्य धर्मों को 80

संदर्भ सूची 83

महामण्डलेश्वर श्रोत्रिय ब्रहमनिष्ठ परमहंस परिव्राजकाचार्य
श्री श्री 1008 डॉ स्वामी शिव स्वरूपानन्द सरस्वती
भागवत, ज्योतिष, वेदान्त, षडदर्शनाचार्य (पी-एच.डी.)

श्री मानव कल्याण आश्रम, कनखल, हरिद्वार
पिन कोड 249 408, फोन 01334-240364

12 मार्च 2006

परमप्रिय आत्म स्वरूप - - - मानोज रखित जी

जय श्री कृष्ण।

आपकी पुस्तक मिली। पढ़ कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि कम से कम कोई तो ऐसा व्यक्ति है जो विदेश में अपमानित देवी-देवताओं के विषय में बोलने का साहस रखता है। यह हमारी सनातन संस्कृति का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि सब कुछ होने के बाद भी कोई हिन्दू बोलने को तैयार नहीं है। आज आवश्यकता है कि ईसाइयों एवं मुसलमानों द्वारा जो सनातन धर्म के साथ में कुकृत्य किये जा रहे हैं उनका जवाब दिया जाय। जिसके लिए नवीन पीढ़ी को भी तैयार करना होगा।

मैं भी अपने प्रवचनों में इस बात को उठाता रहता हूँ तथा सभी को इन सभी बातों का विरोध करने के लिए भी कहता हूँ। इस तरह के प्रयास की मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ तथा आगामी समय में मेरे लायक जो भी सेवा हो निःसंकोच बताने का कष्ट करें। जिससे अन्य सभी समाज के सामने इन चीजों को रखा जा सके।

आपकी दूसरी पुस्तक "मज़हब ही सिखाता आपस में बैर रखना" बहुत ही अच्छी लगी। आपने कुरान की सभी आयातें प्रमाण के रूप में दी हैं। आज समय बदला है अतः हमें भी बदलना होगा, अब सन्यासी समाज को भी माला के साथ भाला, व समाज संगठन की विशेष आवश्यकता है; अतः हिन्दू धर्म पर होने वाले आघातों के प्रति जवाब देना होगा, नहीं तो संस्कृति व हिन्दू धर्म समाप्त हो जायेगा। ईसाई व मुसलमानों का हर कीमत पर विरोध भी करना होगा, नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब हिन्दू बाहुल्य देश भारतवर्ष पर मुसलमानों का शासन होगा और हम पुनः गुलाम बन जायेंगे।

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

आपके प्रयास की पुनः पुनः सराहना करते हुए आपसे आग्रह भी है कि अपने इस कार्य को आगे बढ़ाते रहें तथा हम सभी को भी अवगत कराते रहें।

आपका शुभेच्छु

महामण्डलेश्वर डॉ स्वामी शिवस्वरूपानन्द सरस्वती

हस्ताक्षर

22 नवम्बर 2006

महामण्डलेश्वर डॉ स्वामी शिवस्वरूपानन्द सरस्वती जी के विचारों को नमन करता हूँ।

जब तक श्री नारायण चाहेंगे तब तक यह लेखनी चलती रहेगी और आपसे सम्पर्क भी बना रहेगा।

आज हमारे हिन्दू समाज को आप जैसे सच्चे धर्म-प्रेमी धर्म-गुरुओं की नित्तान्त आवश्यकता है। आपके कथन में सत्य के साथ निर्भिकता भी है। नतमस्तक होकर आपसे यही प्रार्थना कर सकता हूँ कि उचित समझें तो, यह निर्भिकता अपने अनुयायियों में कूट-कूट कर भर दें ताकि वे धर्म-रक्षार्थ, आवश्यकता पड़ने पर बलिदान देने के लिए, अपने आपको अभी से तैयार कर सकें।

आशीर्वाद स्वरूप आपसे एक छोटी-सी प्रार्थना कर सकता हूँ कि अपने क्षेत्र में, अपने अनुयायियों कि सहायता से इन पुस्तकों को हिन्दू जन समुदाय के मध्य पहुँचाने की सम्भावना पर, विचार करें।

आपका

विनीत

मानोज रखित

ईसाई धर्मावलम्बी, हिन्दू देवी-देवताओं को, किन गंदी नज़रों से देखते हैं?

उनकी नजर में हिन्दू धर्म एक नारकीय/राक्षसी धर्म है, असभ्य लोगों का धर्म है, केवल ईसाई बनाकर हिंदुओं को सुसभ्य बनाया जा सकता है

अमरीका के ईसाई धर्माध्यक्षों के परिवार में जन्मे डॉ डेविड फ़्रावले (वामदेव शास्त्री) अपनी आत्मकथा स्वरूप पुस्तक में लिखते हैं -

"वे हमेशा धन माँगते हैं अमरीकी जनसमुदाय से कि हम भारतवर्ष में जाकर हिंदुओं का धर्म परिवर्तन करना चाहते हैं। हम यह देखते हैं नित्य विभिन्न टेलिविज़न चैनेलों पर। पैट रॉबर्टसन जो उनके मुख्य धार्मिक नेताओं में से एक हैं उन्होंने कहा है कि हिंदू धर्म एक नारकीय/राक्षसी धर्म है । वे हिंदू देवताओं को जानवरों के सिरों के साथ दिखाते हैं और कहते हैं जरा देखो इन्हें कितने असभ्य हैं ये लोग। वे भारतवर्ष के राज नैतिक एवं सामाजिक समस्याओं को अमरीकी जन समुदाय के समक्ष रख कर कहते हैं यह सब हिंदू धर्म के कारण हैं। वे अमरीकी जन समुदाय से कहते हैं कि हमें धन दीजिए ताकि हम भारतवर्ष जाकर उन्हें इस भयावह हिंदू धर्म के चंगुल से छुड़ाएँ और उन्हें ईसाई बना सकें।"

ISBN 81-85990-60-3

पश्चिमी देशों में लाखों-करोड़ों व्यक्ति, हिंदूधर्म के बारे में, इन धारणाओं के साथ जीते हैं

आप अमरीका में रहते होंगे, पर सैकड़ों में से उन्हीं पाँच-सात चैनलों को देखते होंगे जिनमें आपकी रुचि है। अतः आप न तो बुरा देखते हैं, न बुरा सुनते हैं, न आपको बुरा लगता है। पर अमरीका और कैनेडा में ऐसे लाखों गोरी चमड़ी वाले होंगे जो उन चैनलों को देखते हैं और हिंदुओं के बारे में ऐसी-ही धारणाओं के साथ जीते हैं।

आप भारतवर्ष में रहते हैं, आपको वे अमरीकी चैनल देखने को मिलते नहीं। आप न बुरा देखते हैं, न बुरा सुनते हैं, न बुरा मानते हैं।

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

अधिकांशतः हिंदू धर्मगुरू इन समस्यायों के प्रति जागरूक नहीं हैं और इसकी 'तोड़' के बारे में प्रयत्नशील नहीं दिखायी देते हैं

अमरीका में आप अपने गुरु के पास जाते हैं, उनका अपना एक सम्प्रदाय जैसा होता है। वहाँ पाँच-सौ हिंदुओं में दो-तीन गोरी चमड़ी वाले भी होते हैं। अनुयायी उनके पाँव छूते हैं, उनका पंथ अपने पर फैला रहा होता है। आप भी खुश, आप के गुरू भी खुश। किसी को क्या पड़ी है कि सार्वजनिक रूप से विरोध करें कि हिन्दू धर्म का अपमान हम नहीं सह सकते।

किसी ने आपको सिखा दिया है कि 'बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बुरा मत कहो' और आपने उसे अपना 'कवच' जैसा बना लिया है

आप भारतवर्ष में रहते हैं, अपनी पसन्द की दो-चार चैनलों को देखते हैं। उन चैनलों को आप देखते नहीं जिनमें हिन्दूओं के विरुद्ध उट-पटांग बातें दिखायी जाती हैं। इस प्रकार आप न बुरा देखते हैं, न बुरा सुनते हैं, न बुरा मानते हैं।

वे मुट्ठीभर जो आपको लगातार सचेत किये रखना चाहते हैं, उनसे आपको 'परहेज' है

ऐसी पत्र-पत्रिकायें जो आपको हिन्दू धर्म के विरुद्ध हो रहे अभियानों के बारे में सचेत करते रहते हैं उन्हें आप पढ़ना नहीं चाहते क्योंकि आपकी दृष्टि में वे सब उग्रवादी हैं, साम्प्रदायिक हैं, धर्मनिरपेक्ष नहीं हैं (उदाहरण के लिए 'हिन्दू वॉइस' एवं 'सनातन प्रभात')।

स्वाभिमान को तजकर आप उदार बनने की चेष्टा में लगे हैं

आपकी सोच कुछ ऐसी बन चुकी है कि यदि कोई आपको कहता है कि 'मेरे भाई, तुमने तो मुझे केवल एक थप्पड़ मारा है, एक और मार दो' तो आप उसे महान आत्मा घोषित कर देंगे। मानसिक नपुंसकता की महिमा आपके दिलो-दिमाग पर इस तरह छा चुकी है कि स्वाभिमान जैसा शब्द आपके शब्दकोश से कोसों दूर जा चुका है।

क्षात्रधर्म तो आप भुला बैठे और गीता को जाने क्या समझ लिया है

क्षात्रधर्म तो आपने भुला दिया है क्योंकि आपके दिग्दर्शकों ने आपको समझाया कि भगवद्गीता आपको त्याग का सन्देश देती है, आपको अन्तर्मुखी बन कर ईश्वर की साधना में लीन होने को कहती है। महाभारत तो एक पारिवारिक कलह एवं अनावश्यक रक्तपात की कहानी है, अतः उसमें सीख लेने जैसी कोई बात नहीं है।

कोई आपसे यह नहीं कहता कि भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश कुरुक्षेत्र की रणभूमि में ही क्यों दिया, त्याग और ईश्वर प्राप्ति की बातें करनी थीं तो अर्जुन को

लेकर किसी वन में क्यों न चले गए?

भगवान श्री कृष्ण जानते थे कि एक समय आयेगा जब मानव-जीवन अपने आप में एक रणक्षेत्र बन जायेगा और आज हम उसी स्थिति में पहुँच गए हैं। आज गीता के संदेश को एक बार फिर से समझने की आवश्यकता है, और वह भी एक नई दृष्टि से।

उनके शब्दों में अमरनाथ की यात्रा का उद्देश्य है विनाश के देवता शिव के कामवासना के अंगों की पूजा

डॉ डेविड फ़्रावले (वामदेव शास्त्री) लिखते हैं -

"न्यूयॉर्क टाइम्स अमरनाथ की तीर्थयात्रा के बारे में लिखता है कि हिंदू जा रहे हैं विनाश के देवता शिव के कामवासना के अंगों की पूजा के लिए।"

ISBN 81-85990-60-3

न्यूयॉर्क टाइम्स जैसे ख्याति प्राप्त समचार पत्र, जो अमरीकी जनमत तैयार करते हैं

न्यूयॉर्क टाइम्स जैसे ख्याति प्राप्त समचार पत्र, जो अमरीकी जनमत तैयार करते हैं, वे अपने पाठकों को बताते हैं शिव हैं विनाश के देवता और उनके कामवासना के अंगों की पूजा है अमरनाथ तीर्थ यात्रा का मुख्य उद्देश्य।

जरा सोच कर देखिए क्या प्रभाव पड़ता होगा विश्व जनमत पर हिंदू धर्म के बारे में।

कब तक इस भ्रम में जीयेंगे कि हिंदू धर्म की क्या साख है सारे विश्व में

आप में से अनेक हैं जो फूले नहीं समाते जब देखते हैं मुट्ठी भर गोरी चमड़ी वालों को हिंदू धर्म अपनाते। आप इसी खुशफ़हमी में जीते हैं कि देखो हिंदू धर्म की क्या साख है सारे विश्व में, जो इन गोरी चमड़ी वालों को भी प्रेरित करती है हिंदू धर्म को अपनाने।

कुछ तो यहाँ तक छाप देते हैं कि आज सारा विश्व हिंदू धर्म की महत्ता को मानता है पर हमारे अपने हिंदू उस महत्ता को नहीं समझते। ये अति ज्ञानी लोग उन मुट्ठी भर गोरी चमड़ी वालों को सारे विश्व का प्रतिनिधि मान बैठते हैं।

क्या ऐसा नहीं लगता कि आप अपनी ही नज़रों में इतना गिर चुके हैं कि कोई जरा सा आपकी पीठ थपथपाता और आप फूल कर कुप्पा बन जाते हैं।

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

आपने खो दी अपनी शिक्षा, अपनी संस्कृति, अपनी पहचान

यही तो चाहा था उस टीबी मॅकॉले ने जो 'टी-बी' की तरह घुन लगा गया हमारे स्वाभिमान को, जब वह लेकर आया ईसाई मिशनरियों की बटालियन सन 1835 में, हमें ईसाई-अँग्रेज़ी शिक्षा पद्धति के साँचे में ढालने के उद्देश्य से।

वह तो सफल हो गया अपने उद्देश्य में और उसका मूल्य चुकाया आपने। आपने खो दी अपनी शिक्षा, अपनी संस्कृति, अपनी पहचान।

उनके शब्दों में शिव नशे में धुत्त गाँव-गाँव में नंगा घूमता है, शिव मंदिरों में पाओगे एक खड़ा लंड जो है शिव की निरंकुश कामुकता का प्रतीक, शिव की पत्नि 'शक्ति' मद्यपान, व्यभिचार, लाम्पट्य, मंदिरों में वेश्यावृत्ति को प्रोत्साहित करती है, 'काली' दुष्ट, डरावनी, खून की प्यासी

क्या ये रक्तबीज जैसे किसी असुर की ही संतानें हैं?

माँ काली ने रक्तबीज नामक असुर का संहार किया था, जिसके खून का एक कतरा धरती पर गिरने से एक और वैसा ही असुर पैदा हो जाता था। अतः स्वाभविक है कि कोई भी ऐसा असुर माँ काली को श्रद्धा की दृष्टि से नहीं देखेगा। ईसाई भी माँ काली को श्रद्धा की दृष्टि से नहीं देखते। क्या इसका मतलब यह हुआ कि ये ईसाई भी उसी रक्तबीज जैसे किसी असुर की ही संतानें हैं?

प्रतिदिन पैंतीस हज़ार लोगों के मन में हिंदू धर्म के प्रति कैसा विष बोया जाता है

आज इंटरनेट का बोलबाला है। विश्व के कोने कोने तक अपनी बात पहुँचाने का यह सबसे सस्ता एवं द्रुतगामी माध्यम है। वेब साइट पर एक काउंटर होता है। यह काउंटर गिनता रहता है कितने लोग अब तक इस साइट पर आए हैं। जब भी कोई व्यक्ति विश्व के किसी भी कोने से कंप्यूटर के द्वारा उस साइट पर जाता है तो तत्काल काउंटर उसे रेकॉर्ड कर लेता है। जब मैं गया था तो काउंटर ने 71,11,525 दिखाया। यह कोई साल भर पहले की बात है, 14 फ़रवरी 2005। डॉ जेरोमे का दावा है कि इस साइट को विश्व भर से पैंतीस हज़ार लोग प्रतिदिन देखते हैं। अब सुनिए उनकी जबानी हिंदू धर्म की कहानी।

http://religion-cults.com/Eastern/Hinduism/hindu11.htm

भगवान शिव एवं माँ शक्ति की आज यह छवि प्रस्तुत की जाती है

"हिन्दू धर्म है जमघट विभिन्न पंथों का जिसे कहा जा सकता है धार्मिक अराजकता का ज्वलंत उदाहरण। शिव उनमें से सबसे अधिक लोकप्रिय है। उसके सबसे अधिक भक्त मिलेंगे आपको। नटराज के रूप में वह चार हाथों के साथ नाचता है। चारों ओर नंगा घूमता है गाँव गाँव में, नंदी नामक एक सफ़ेद साँड़ के पीठ पर चढ़ कर। नशे में धुत्त, भूखे रहने और अपने शरीर को विकृत करने की शिक्षा देता वह। भैरव के रूप में अपने पिता की हत्या करने वाला, अपने बाप की खोपड़ी को एक कटोरे के रूप में प्रयोग करने वाला है वह। अर्धनारीश्वर के रूप में स्त्री व पुरुष के काम वासना की छवि है वह। उसके मंदिरों में सदा पाओगे एक बड़ा लिंगपुरुष, रूढ़ शैली का एक खड़ा लंड जो है शिव की निरंकुश कामुकता का प्रतीक (Erect Penis symbolizing his rampant Sexuality)

शिव की पत्नियाँ बड़ी लोकप्रिय हैं। शक्ति रहस्यानुष्ठान, मद्यपान-उत्सव, व्यभिचार, लाम्पट्य, मंदिरों में वेश्यावृत्ति एवं बलि देने की प्रथा को प्रोत्साहित करती है। शक्ति ने आरम्भ किया सती प्रथा का जिसमें विधवा आग में कूद जाती है अपने पति की चिता में। शक्ति काली के रूप में दुष्ट, डरावनी और ख़ून की प्यासी और सबसे अधिक लोकप्रिय है। वह खड़ी होती है एक छिन्न-मस्तक शरीर के ऊपर, गले में मनुष्यों के कटे सरों की माला डाले। ख़बरों के अनुसार प्रति वर्ष सौ व्यक्तियों का ख़ून किया जाता है, बलि के लिए, भारतवर्ष में काली के सम्मान में। हिंदू धर्म के जंगल में न घुसो, निकल भागो इस जंगल से जब यह तुम्हारे बस में हो।"

http://religion-cults.com/Eastern/Hinduism/hindu11.htm

अनुवाद करते समय मैंने लंड जैसे अश्लील शब्द का 'चयन' क्यों किया?

आप पूछेंगे कि मैंने अनुवाद करते समय लंड जैसे अश्लील शब्द का प्रयोग क्यों किया जब कि मेरे पास लिंग एवं जननेन्द्रिय जैसे सभ्य शब्द थे। यहाँ मैं अनुवादक की भूमिका निभा रहा हूँ। मेरा कर्तव्य है मूल लेखक की वास्तविक भावनाओं को पाठक के सामने लाना, न कि उन्हें पाठक से छुपाना। मुझसे इस कलाकारी की आशा न करें कि मैं मूल लेखक की अश्लील भावना को श्लीलता का जामा पहना कर आपके समक्ष प्रस्तुत करूँगा।

उस ईसाई धर्माध्यक्ष ने क्या सोच कर अपने अंग्रेजी मूल में erect penis शब्द का 'चयन' किया, genital का क्यों नहीं ?

आप स्वयं सोच कर देखें कि इस ईसाई धर्माध्यक्ष ने genital (जननेन्द्रिय) शब्द का प्रयोग नहीं किया। उसने erect (खड़ा, तना हुआ) विशेषण का प्रयोग किया है genital के साथ नहीं बल्कि penis के साथ। जब penis erect होता है तब पुरुष के मन में कामुकता की भावना प्रबल होती है। इसी बात पर जोर देते हुए ईसाई धर्माध्यक्ष हमारे भगवान शिव की

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

rampant (निरंकुश) sexuality (कामुकता) का वर्णन करते हुए उन्हें काम वासना की छवि बताया। अतः erect penis की बात करते हुए उनकी भावना स्पष्टतः कामुकता से उद्वेलित खड़े लंड की ओर संकेत करती है, किसी जननेन्द्रिय (सृजन प्रक्रिया का एक अंग) अथवा किसी लिंग (gender जैसे स्त्रीलिंग या पुलिंग) की नहीं।

दो हिंदू संस्थाओं के द्वारा किये गए घोर आपत्ति के बावजूद उस ईसाई धर्म गुरु ने अपने वेबसाइट पर कोई भी परिवर्तन करना स्वीकार नहीं किया

भगवान शिव ने कामुकता पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली थी। उसी भगवान शिव के बारे में, अश्लील भावना का प्रदर्शन करते हुए, उस प्रख्यात ईसाई धर्माध्यक्ष ने अपने शब्दों का चयन किया था बहुत ही सोच-समझ कर। अमरीका में दो हिंदू संस्थाओं के बारे में मैं जानता हूँ जिन्होंने घोर आपत्ति की, भगवान शिव के लिए erect penis एवं rampant sexuality जैसे शब्दों के प्रयोग पर। पर उस ईसाई धर्म गुरु ने अपने वेबसाइट पर कोई भी परिवर्तन करना स्वीकार नहीं किया। ऐसा क्यों?

विवरण - http://www.IndiaCause.com

अब तक एक करोड़ लोग देख चुके होंगे उस वेबसाइट को - क्या प्रभाव पड़ता होगा सारे विश्व पर हिंदू धर्म के प्रति?

- हिंदू धर्म के प्रति अपनी वह कुत्सित भावना, उस ईसाई धर्माध्यक्ष ने, विश्व भर के लाखों लोगों के मन में भरी।
- क्या प्रभाव पड़ता होगा सारे विश्व पर जब पैंतीस हज़ार लोग प्रतिदिन पढ़ते होंगे इसको?

आपके सामने आपके धर्म का बलात्कार हो रहा है और आपकी आत्मा को यह स्वीकार भी है

- यह सब जानकर भी यदि आपका खून नहीं खौलता तो जान लीजिए कि आप का खून ठंडा पड़ चुका है और आप स्वाभिमान के साथ जीने के हकदार नहीं हैं।
- जरा सोचकर देखिए जैसे आपकी माँ अपने दूध से आपके शरीर को सींचती है ठीक उसी प्रकार आपका धर्म आपकी आत्मा को सींचता है।
- कल्पना कीजिए, आपके सामने आपकी माँ का बलात्कार हो रहा है। उसी प्रकार आज आपके धर्म का बलात्कार हो रहा है।
- आपकी आत्मा को यह स्वीकार भी है।

आपकी सोच - हमारा हिंदू धर्म विश्व भर में कितने आदर के साथ देखा जाता है

- और आप हैं कि मुट्ठी भर सफेद चमड़ी वालों को हिंदू धर्म अपनाते देख, फूले नहीं समाते।

- यह सोच कर खुश हो लेते हैं कि हमारा हिंदू धर्म विश्व भर में कितने आदर के साथ देखा जाता है।

- अब तो कम से कम अपने मन को बहलाना बंद कीजिए।

ईसाई ऐसा क्यों करते है? क्या छुपा है उनकी शिक्षा एवं उनके चरित्र में?

- मैं स्वयं अनगिनत बार भगवान शिव शंकर के द्वार पर गया पर मुझे तो वहाँ कभी वह न दिखा जो ईसाइयोंको दिखा। मेरे मन में वैसी भावना कभी जगी तक नहीं।

- उस भावना के अस्तित्व को मैंने तभी जाना जब उसके बारे में पुस्तकों में पढ़ा या दूसरों से सुना और फिर भी मेरे मन में वह भावना कभी घर न कर पायी।

- ऐसा क्या है उन ईसाइयों की सोच में जो उन्हें सदा खड़ा लंड ही दिखाई देता है? आगे चलकर इसी रहस्य को समझने की चेष्टा करेंगे।

यह समझने की भूल न करें कि ये सारे हथकण्डे केवल ईसाई धर्मगुरुओं और चंद कलाकारों के ही हैं - बाकी साधारण ईसाई दूध के धुले हुए हैं

अप्रैल 2003 में अमेरीकन ईगल आउटफिटर्स (American Eagle Outfitters) नामक कम्पनी ने इन चप्पलों को बेचना शुरू किया * जिन पर हमारे पूजनीय श्री गणेश की मूर्ति अंकित थी। इस कंपनी के लगभग 750 स्टोर्स मिलेंगे आपको, अमरीका एवं कैनेडा में।

* डालर 12.50 की कीमत पर अर्थात 500 रुपये के आस-पास उन दिनों में

- यदि साधारण ईसाई दूध के धुले भलेमानुस थे, तो उन्हें इन चप्पलों का बहिष्कार करना चाहिये था, जो उन्होंने नहीं किया, बल्कि उन्हे बड़े चाव के साथ खरीदा और पहना, ताकि वे हमारे परम पूज्य श्री गणेश को अपने पैरों तले प्रतिदिन रौंद सकें।

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

27-4-2003 को अमरीका की IndiaCause नामक हिंदू संस्था ने इस पर आपत्ति करते हुए कम्पनी को लिखा।

29-4-2003 को कम्पनी के वाइस-प्रेसिडेन्ट नील बुलमैन जूनियर ने क्षमायाचना करते हुए IndiaCause को फैक्स भेजा इस आश्वासन के साथ कि वे उन सारी चप्पलों को अपनी दुकानों से वापस मंगा लेंगे।

विवरण - www.indiacause.com

- इस संस्था ने चेष्टा की।
- इस चेष्टा का फल भी मिला।

सिआटल (Seattle अमरीका) की एक कंपनी सिटिन प्रेटी (Sittin Pretty) कोमोड (toilet seat) बेचनी शुरू की श्री गणेश एवं माँ काली की तस्वीरों के साथ।

• अपने चहेते ईसा मसीह की तस्वीर उन्होंने वहाँ न दी।

• पैगम्बर मुहम्मद की तस्वीर देने की बात सोच कर वे अपने ही पैंट में टट्टी कर देते, हलाल कर दिये जाने के डर से।

• यदि साधारण ईसाई दूध के धुले भलेमानुस थे, तो उन्हें इन टट्टी करने के स्थानों का बहिष्कार करना चाहिये था, जो उन्होंने नहीं किया, बल्कि उन्हे बड़े चाव के साथ खरीदा और उनको अपने घरों में लगाया, ताकि वे श्री गणेश व माँ काली के साथ हग सकें।

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

कई हिंदू संस्थाओं ने इस पर आपत्ति उठाई। हजारों की संख्या मे ईमेल गए, फैक्स एवं टेलीफोन किए गए।

- कोशिशें ज़ारी रहीं।
- काफी लम्बा चला यह आन्दोलन।
- अंत में कंपनी ने इन डिज़ाइनों को बजार से वापस लेना स्वीकार किया।

American Hindus Against Defamation नामक संस्था इस अभियान में सबसे आगे रही।

विवरण - http://www.iVarta.com

सन 2005 - हिंदू देवी-देवताओं की छवि की नुमाइश ईसाई औरतों की बिकनियों पर

"विश्व के चंद सर्वोत्कृष्ट डिज़ाइनरों में से एक हैं रोबेर्टो कावाल्लि जिन्होंने हिंदू देवी देवताओं की छवि बिकनियों के ऊपर छापी."

विवरण - Hindustan Times, 20-11-2005, p 10

अब विदेशों में इन चड्डियों को पहन कर गोरी-भूरी-पीली-काली ईसाई औरतें समुद्र तट पर धूप सेंकेंगी, घूमेंगी-फिरेंगी, खेलेंगी-कूदेंगी, खिलखिलायेंगी और मर्दों का ध्यान आकर्षित करेंगी।

साथ ही हिंदू देवी-देवताओं की छवि की नुमाइश करेंगी अपने शरीर के उन अंगों पर जिनसे वे पेशाब एवं टट्टी करती हैं (चड्डियाँ इन्हीं अंगों को ढाँकती हैं, उनके शरीर का बाकी हिस्सा तो प्रदर्शन के लिए होता है, यहाँ तक कि उनके वक्षस्थल भी -- प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार गोवा, वेनिस, ऑन्टैरियो के समुद्र-तट)।

यही है अधिकांशतः ईसाइयों की नज़रों में हिंदू धर्म का स्थान।

हमारे देश के धर्मान्तरित ईसाई तो विदेशियों से भी एक कदम आगे - गाँव में जिस शिवलिंग की नियमित पूजा होती थी उसी पर ये ईसाई टट्टी कर जाते हैं - उस ईसाई धर्मगुरु की शह पर जिसने उनका धर्मान्तरण किया

- 13-8-2003 ग्राम कोविलनचेरी जिला कांची प्रदेश तमिलनाडु - यह केवल अमरीका की बात ही नहीं, हमारे अपने भारतवर्ष में भी ऐसा होता है पर आपकी समाचार एजेंसियाँ इन्हें आपसे छुपा जाती हैं।

- अंतर केवल इतना है कि यहाँ आज माँ काली की फ़ोटो के साथ नहीं, बल्कि उससे एक कदम बढ़ कर, साक्षात शिवलिंग के **ऊपर** टट्टी करते हैं, उसे कोमोड मान कर। वह शिवलिंग जिसकी, तब भी गाँव में, नियमित पूजा होती थी।

सम्पूर्ण विवरण - हिंदू वॉइस (अँग्रेजी संस्करण), रिपोर्ट एस वी बादरी, सितम्बर 2003, पृ 40-41

मेरे बोलों में शब्दों की सुंदरता न खोजें

- जो जैसा है, उसे वैसा ही पेश करता हूँ मैं। मेरी बातें आपको बहुत कड़वी लगेंगी। कभी-कभी भाषा आपको सड़क-छाप लगेगी क्योंकि मैं भाषा की सुंदरता के द्वारा उन लोगों के भावों की गंदगी को छुपाने की चेष्टा नहीं करता।

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

• आपको कठोर शब्दों के माध्यम से ठोकर की आवश्यकता है। बहुत समय से आप उस काल्पनिक दुनिया में बसते रहे हैं, जहाँ आप अपनी पीठ स्वयं ही थपथपा लिया करते थे। अब अपने-आप से पूछिए कि कब तक आप अपने-आप को भुलावे में रखना चाहेंगे?

कब तक आप सत्य से भागते फिरेंगे?

• आपको सदा से सिखाया जाता रहा है कि अपने गरेबान में झाँक कर देखो (अपने अंदर झाँक कर देखो)। और आपने भी सदा अपने ही गरेबान में झाँकना सीखा है।

• इस प्रक्रिया में आपने इतनी महारथ हासिल कर ली है कि आप अपनी ही नज़रों में बहुत छोटे बन गए हैं। अपने हिंदुओं में ही सर्वदा दोष खोजने के आदी बन चुके हैं।

• यह उन भगोड़ों की विशेषता है जो समस्या के समाधान हेतु 'समस्या को पैदा' करने वालों के विरुद्ध खड़े होने का सत्साहस नहीं रखते।

• क्या आपने कभी दूसरों के गरेबान में भी झाँक कर देखने की चेष्टा की है? इसलिए नहीं कि आप उनकी गलतियाँ निकालें।

• बल्कि इसलिए कि वे सदा से आपको छोटा दिखाते आये हैं। एक बार उनकी खामियों की ओर भी नजर डाल कर देखें, केवल अपनों को हीन मानने के बजाय!

क्या कभी आपने सोचा है कि स्वाभिमान जैसी भी कोई चीज होती है?

• क्या आपने जाना है कि आत्मरक्षा का हमारी जीवन प्रक्रिया में कोई महत्व होता है? आत्मरक्षा की बात करें तो केवल यह न सोचिए--आपके शरीर पर हमला हो रहा है।

• हमला आपकी आत्मा पर भी हो सकता है। हमला आपकी आस्थाओं पर भी हो सकता है।

• हमले का उद्देश्य आपकी सोच को एक नया जामा पहनाने का भी हो सकता है। हमला एक षड़यंत्र के रूप में भी हो सकता है जिसके पीछे एक निहित स्वार्थ हो।

• और वह यह कि आपको अपनी जड़ों से उखाड़ कर अलग करना। जब आप अपनी जड़ों से ही कट जायेंगे तो आप अपनी पहचान को भी भूल जायेंगे।

• क्या यही नहीं हो रहा है आज के युवा वर्ग के साथ?

ऐसा क्या है ईसाइयों की सोच में, उनकी शिक्षा में, उनके संस्कारों में और उनके छुपे हुए अतीत में, जो उन्हें इस रूप में ढालता है?

- क्या वे ऐसा केवल आज ही कर रहे हैं? नहीं, केवल आज ही नहीं, वे सदा से ही ऐसा करते आए हैं।
- वे सदा से ऐसा क्यों करते आए हैं? ऐसा क्या छुपा है उनके अतीत में? क्या हिंदू धर्म भी उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करता है? कभी नहीं।
- वे किस मिट्टी के बनें हैं जो उनमें इतनी घृणा है हमारे प्रति? आइए चलें उनके अतीत में, जिसके आधार पर उनका वर्तमान खड़ा है।

आइये देखिए कुछ झलकियाँ, ईसाई धर्म के सर्वोच्च धर्माध्यक्षों एवं अन्य धर्मगुरुओं के चरित्र की, और फिर स्वयं सोचिए कि जब इनके अपने चरित्र इतने गंदे होंगे, तो उनकी सोच कितनी गंदी होगी, और उन्हें शिवलिंग में एक खड़ा शिश्न नहीं तो और क्या दिखेगा, तथा शक्ति में एक व्यभिचारिणी नही तो और क्या दिखेगी?

अधिक विवरण के लिए पढ़ें पुस्तक 12, 10, 08, 04

"पोप जॉन 13वे उपस्थित हुए महासभा के सामने अपने आचरणों का हिसाब देने। यह सिद्ध हुआ सैंतिस प्रत्यक्षदर्शी साक्षियों के द्वारा, जिनमें से अधिकांशतः धर्माध्यक्ष एवं पुरोहित थे, कि पोप दोषी थे कुमारीसंभोग के, परस्त्रीगमन के, कौटुम्बिक व्यभिचार के, लौण्डेबाजी के, चोरी के एवं हत्या के। विशाल संख्या में साक्षियों के द्वारा यह भी सिद्ध हुआ कि पोप ने 300 मठवासिनीयों का शील भंग एवं बलात्कार किया।"

ISBN 81-85990-46-8 p 97fn [quoting Dwight, *Roman Republic in 1849* p 115 and *The Priest, Woman and Confessional* p 268]

इन नराधमों के अनुयायी भी ऐसे ही नराधम बनेंगे

ऐसे नराधम जब किसी धर्म के सर्वोच्च रक्षक होंगे तो उनका अनुकरण करने वाले धर्माधिकारी कितने बदनीयत होंगे। आइये देखें चन्द उदाहरण -

"1274 में लीग के धर्माध्यक्ष हेनरी तृतीय ने (न्यायालय में) बयान दिया कि उनकी पैंसठ अवैध संतानें थीं। इसी धर्माध्यक्ष ने जनसमुदाय के महाभोज में अपनी शेखी बघारते हुए कहा कि बाईस महीने के बीच उनसे चौदह बच्चे पैदा हुए।"

ISBN 81-85990-46-8 p 97fn [quoting Lecky, *History of European Morals* p 350]

"इस बात की खुलकर पुष्टि की जाती है कि एक लाख स्त्रियों को इग्लैंड में पुरोहित-वर्ग द्वारा दुराचारी-लंपट बनाय गया।"

ISBN 81-85990-46-8 p 97fn [quoting *Intellectual Development of Europe* p 498]

• ऐसे दुश्चरित्र व्यक्तियों को शिवलिंग में भगवान का वास न दिखेगा क्योंकि उनका ध्यान तो सदा केंद्रित होता है अपने शिश्न पर।

• उन्हें शक्ति में व्यभिचारिणी ही दिखेगी क्योंकि स्त्री उनके लिए माता नहीं बल्कि उनकी यौन-तृष्णा की निवृत्ति का साधन-मात्र है।

• ऐसे दुश्चरित्र व्यक्ति जब धर्माधिकारी होंगे तो उनके अनुयायी कैसे होंगे यह आप स्वयं सोचें।

इन दोगलों की संतानें भी दोगली ही बनेंगी

"रोम में पैदा होने वाले दोग़ले बच्चों की संख्या इतनी विशाल होती है कि उनको रखने के लिए प्रकाण्ड मठों की व्यवस्था करनी पड़ती है, जहाँ उन्हें पाल-पोस कर बड़ा किया जाता है एवं पोप उनका पिता कहलाता है। जब रोम में किसी महान शोभायात्रा का आयोजन किया जाता है तो ये सभी दोगले बच्चे पोप के आगे-आगे चलते हैं।"

ISBN 81-85990-46-8 p 97fn [quoting *Familiar Discourses* 383]

• इन्हीं दोगलो में से कोई फिर पोप बनेगा और फिर ढेरों दोगले पैदा करेगा।

• इन दोगलों की संतानों की सोच दोगली होगी, चरित्र दोगला होगा, संस्कार दोगले होंगे, संस्कृति दोगली होगी, इन दोगलों की जात में कुछ भी शुद्ध न होगा, कुछ भी पवित्र न होगा।

• इन्हीं दोगलो में से कोई फ़ादर बनेगा और स्कूल चलायेगा, वहाँ से जो बच्चे पढ़कर निकलेंगे वे भी दोगली संस्कृति की उपज होंगी।

• उनकी भी सोच दोगली होगी, जबान दोगली होगी, धर्म दोगला होगा, शुद्ध और पवित्र कुछ भी न होगा।

गले तक डूबे ये 'यौनाचारी' जिन्हें हमारे पूर्वजों ने 'यवन' का नाम दिया था

"पोप ग्रेगरी के अविवाहित जीवन की पुष्टि करने के पश्चात उन्हें एक मछली तालाब में छः हजार नवजात शिशुओं के सर मिले जिसके कारण उन्हें पुनः पुरोहितों के विवाह का

अनुमोदन करना पड़ा।"

ISBN 81-85990-46-8 Ibid.

"यह मछली तालाब उस (महिला) मठ के पास था जिसमें 'ईसा मसीह के नववधुओं' का निवास था।"

ISBN 81-85990-46-8 preface

- ये धर्म के रक्षक यौन-लिप्सा में इस कदर डूबे कि उन्होंने समाज को अपनी यौनाकांक्षाओं की तृप्ति का अखाड़ा बना दिया।
- उनकी इज्जत करते-करते हम भी उनकी तरह यवन बनते जा रहे हैं।

सर्वोच्च धर्माधिकारी पोप भ्रष्टाचार का प्रतीक बना और अपने अनुयायियों को भ्रष्टाचार की सीख दी

"वह स्पेन से लेकर आया इटली में, चरित्रहीन सगे-संबंधियों का एक झुण्ड, जिन्होंने फैलाया भ्रष्टाचार एवं चरित्रहीनता सभी दिशाओं में, एवं खोला घिनौनेपन का एक ऐसा पन्ना इतिहास में जिसकी समता नहीं किसी भी धर्म के उच्च अधिकारियों के जीवन में।"

ISBN 81-85990-21-2 p79fn [quoting Joseph McCabe, *A Testament of christian Civilization]*

- जब सर्वोच्च धर्माधिकारी पोप ही भ्रष्टाचार का सरदार होगा तो उसका समाज भ्रष्टाचारियों का अड्डा होगा।
- उनकी संगत में हमने इतनी पीढ़ियाँ बिता दीं कि आज हम उनके जैसे ही बन गये हैं।

पुत्री के साथ सम्भोग और पुत्र के साथ वेश्यालयों में जाना, अपने अनुगतों को विष देकर उनकी सम्पत्ति हथियाना - यह सब कोई सीखे तो ईसाई धर्म के सर्वोच्च धर्माधिकारी पोप से

"उसने दुर्दम्य शक्ति-राजनीति का खेल खेला, चर्च के विशेषाधिकारों को खरीदा और बेचा। पोप के महल में होने वाली उच्छृंखल पार्टियाँ बहुत प्रसिद्ध थीं जहाँ अनियंत्रित रूप से शराब बहता था और अंधाधुंध यौनाचार होता था। इस पोप ने अपनी ही पुत्री के साथ सम्भोग किया (यौन संबध रखे)। वह अपने पुत्र के साथ वेश्यालयों में जाता रहा। उसने अपने कार्डिनलों को विष देकर मारा उनकी धन-सम्पत्ति हड़पने के लिए। अंत में

उसकी अपनी मृत्यु भी विष दिये जाने के कारण ही हुई।" ISBN 81-85990-21-2 p79
कार्डिनल पोप के द्वारा नियुक्त किए जाते हैं और उन्हीं में से एक कार्डिनल अगला पोप बनता है, वर्तमान पोप के मरनोपरान्त।

- पोप ईसाई धर्म का सर्वोच्च धर्मगुरु हुआ करता है।
- उसका अपना चरित्र उसके अनुयायियों को उसी दिशा में प्रेरित करता है।

उनके 'कल' और 'आज' में कोई फ़र्क नहीं

"प्रायः 800 व्यक्तियों ने कहा कि जब वे छोटे थे तब बॉस्टन के महाधर्मप्रान्त में 1940 से उनका यौन दुरुपयोग किया गया था। बॉस्टन चर्च के विरुद्ध इस प्रकार के आरोपों के इस पहले राजकीय लेखे में मैसाचुसेट्ट्स के महान्यायवादी टॉम रेली ने कहा कि इस महाधर्मप्रान्त में पुरोहित-वर्ग द्वारा यौन-दुरुपयोग का इतिहास आश्चर्यजनक है। बॉस्टन में होते रहे यौन दुरुपयोग के अपयश की प्रतिध्वनि समस्त विश्व के कैथोलिक धर्मप्रांतों में सुनाई देने लगी एवं विभिन्न दिशाओं से ऐसे आरोप सामने आने लगे।"

The Free Press Journal, Mumbai, 25-7-2003

"रोमन कैथोलिक धर्मगुरुओं ने रिपोर्ट दी कि पुरोहितों द्वारा यौन दुरुपयोगों के 1,092 नए आरोप सामने आये हैं। डॉ मैक्चेस्ने ने कहा कि 1950 से चर्च का खर्च 800 मिलियन डॉलर अर्थात 34 अरब 40 करोड़ रुपये से अधिक हो चुका है। केवल पिछले वर्ष ही इनके निपटारे, रोगोपचार एवं वकीलों की फ़ीस में 139.6 मिलियन डॉलर अर्थात 6 अरब रुपये खर्च हुए। पिछले वर्ष न्यू यॉर्क के जॉन जे कॉलेज ऑफ़ क्रिमिनल जस्टिस *द्वारा किए गए एक विश्लेषण से पता चला कि 1950 से 2002 के बीच 10,667 नाबालिग ईसाई धर्मगुरुओं के द्वारा यौन दुरुपयोग के शिकार हुए। डॉ मैक्चेस्ने ने कहा कि वास्तविक संख्या सम्भवतः कभी न जानी जा सकेगी क्योंकि अनेक व्यक्ति (इस प्रकार की आपबीती बताने) सामने नहीं आते।"*

The Times of India, Mumbai, 20-2-2005, p 10

ईसाई राष्ट्रों में यौनाचार को बड़ी गरिमा प्रदान की जाती है

सम्भवतः इसी कारण ईसाई राष्ट्रों में यौनाचार को बड़ी गरिमा प्रदान की जाती है। इन्हीं असाधारण चरित्रों की झलकियाँ आप देखते हैं आज अमरीका के जन-जीवन में।

- उसे आधुनिकता का प्रभाव समझने की भूल न करें।

- अमेरिका एक ईसाई राष्ट्र है।

1) अमरीकी जनता में 84% ईसाई हैं
2) अमरीकी सेना में जो भर्ती होते हैं उनमें 98% ईसाई हैं

विवरण - वॉशिन्गटन पोस्ट, पुनरुद्धृत हिंदू वॉयस

इन ईसाइयों ने हम हिन्दुओं को भी अपने ही साँचे में ढाल दिया और उनकी संगत में हम उनके जैसे ही बदजात बन गये

हमारे देश में भी, पिछले छः पीढ़ियों से ईसाई-अँग्रेज़ी शिक्षा पद्धति के प्रभाव में, हम हिंदुओं की सोच उसी साँचे में ढल चुकी है। आज हमारे समाचारपत्र, सिनेमा एवं टेलीविज़न यौन प्रदर्शन को बड़ा महत्व देते हैं।

सदियाँ बीत गईं पर वे तो न बदले

सदियाँ बीत गईं पर उनका चरित्र नहीं बदला। ये सारे उदाहरण केवल अपवाद मात्र नहीं हैं। सैकड़ों उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं पर मेरा उद्देश्य आपका मनोरंजन करना नहीं, अपितु आपको सावधान करना है।

- आप चाहेंगे समझना तो ये थोड़े-से उदाहरण ही पर्याप्त होंगे।

- न समझना चाहेंगे, अपितु केवल वाद-विवाद कर संतुष्ट होना पसंद करेंगे, तो सैकड़ों उदाहरण भी पर्याप्त न होंगे।

हमारे इतिहास को फिर से लिखा उन्होंने अपने ही रंग में रंग कर

- ऐसी ही बातें आपने बहुधा पढ़ी होंगी (अतीत के) हिंदू पुरोहित-वर्ग के बारे में।

- आपने कभी इस बात की परीक्षा करने की चेष्टा न की होगी कि उन सब का आधार कहाँ है।

- आप ऐसी ही बातें, बार-बार पढ़ते रहे होंगे, कहानियों में एवं उन ऐतिहासिक उपन्यासों में जिनमें लेखक की कल्पना अधिक होती है और ऐतिहासिक सत्य कम।

- जब एक ही बात, आपके सामने, बार-बार दोहरायी जाती है, भिन्न-भिन्न माध्यमों के द्वारा, तो आप, स्वाभाविक है कि, उन्हें सत्य मान कर चलते हैं।

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

• कहीं ऐसा तो नहीं कि एक स्थान से प्रारम्भ होकर ये बातें, अनेक माध्यमों के द्वारा, घूमती हुई, आप के समक्ष बार-बार आती रहती हैं?

• कहीं ऐसा तो नहीं कि जो बात आपके सामने, आपके इतिहास के रूप में लायी जाती है, वह आपका इतिहास नहीं, बल्कि किसी और का इतिहास है, जिसे आपके इतिहास का जामा पहनाया गया है?

पिछले छः पीढ़ियों के दौरान आपका इतिहास आपके नियंत्रण में रहा ही कहाँ?

• आप तो गुलाम थे। आपका इतिहास तो आपका मालिक लिखा करता था। उसने तो वही लिखा जिससे उसका स्वार्थ सिद्ध होता।

• उसने तो आपको वही इतिहास पढ़ाया जिससे आपको अपने इतिहास पर गर्व करने जैसा कुछ न मिला।

• आपने उनकी नज़रों से अपने पुरखों को देखना और पहचानना सीखा।

जब आपके ये गंदी सोच और गंदे चरित्र वाले मालिक, आपका इतिहास लिखने बैठे होंगे, तो क्या उन्हें कहीं दूर जाने की आवश्यकता हुई होगी?

• क्या उनके लिए केवल इतना ही पर्याप्त न रहा होगा कि वे केवल अपने ही इतिहास में झाँक कर देखते और आपका इतिहास उसी रंग में रंग देते?

• बाद में जब आप उस रंगीन इतिहास को पढ़ते होंगे तो उसे ही अपना अतीत जानते होंगे।

• पीढ़ी दर पीढ़ी आप उसी इतिहास को अपना इतिहास मानते गए, और अपनी संतानों को भी वही सीख देते गए।

मैं शिक्षा पर ही इतना ज़ोर क्यों देता हूँ

• हम जो कुछ पढ़ते हैं और जो कुछ अपने चारों तरफ़ देखते हैं वे सभी हमारे मनों-मस्तिष्क पर कोई न कोई छाप अवश्य छोड़ जाते हैं।

• शिक्षा चाहे किसी भी प्रकार की हो वह हमारी सोच एवं हमारी भावनाओं को दिशा देती है।

• हमारी सोच एवं हमारी भावनाएँ हमारे आचरण का निर्माण करती हैं।

- जब हिंदू शिक्षा पद्धति हमारी शिक्षा का माध्यम थी तो उसने हमारे चरित्र को एक ढाँचे में ढाला था।

- जब 1835 में ईसाई-अँग्रेज़ी शिक्षा पद्धति हम पर थोप दी गई तो उसने हमें धीरे-धीरे उनके जैसा बना दिया।

- आज का हिंदू, अब वह कल का हिंदू न रहा, जिसका आचरण पवित्र हुआ करता था।

अब तुलना कीजिए इन सब की हमारे पुरातन हिंदू समाज से

"विलासिता, लाम्पट्य, व्यभिचार से रहित होने का यह गुण हिदुओं को श्रेष्ठता प्रदान करता है। आचरण की पवित्रता की दृष्टि से उनकी (हिंदुओं की) श्रेष्ठता हमारे (अँग्रेज़ों के) अहंकार की संतुष्टि नहीं करता।"

ISBN 0-14-100437-1 [quoting Elphinstone's History of India, ed. Cowel]

एलफिन्सट्न मुम्बई प्रेसीडेन्सी के प्रथम गवर्नर थे। मुम्बई में उनके नाम पर *एलफिन्सटन कॉलेज* एवं *एलफिन्सटन रोड* नामक *रेलवे स्टेशन* आज भी है।

- उन्होंने यहाँ के लोगों के बीच में रह कर देखा था कि अँग्रेज़ी शिक्षा लादे जाने से पहले हम हिंदुओं का चरित्र क्या हुआ करता था।

- भारत के इतिहास पर अपनी पुस्तक में वे लिखते हैं -

    - हम अंग्रेज अपने आपको हिंदुओं से श्रेष्ठ समझने का दम भरते हैं, पर हमारा यह अहंकार बेमानी है।

    - उनके आचरण की पवित्रता से हम अपनी तुलना नहीं कर सकते।

    - वे हमसे कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं।

    - विलासिता से रहित उनका आचरण, लाम्पट्य और व्यभिचार से रहित उनका आचरण, उन्हें हमसे अधिक श्रेष्ठ बनाता है।

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

यदि हम हिन्दू अपने पूज्य शिवलिंग में एक कामातुर खड़ा शिश्न देखते, और शिव की पत्नी शक्ति में एक व्यभिचारिणी को देखते, तो क्या हम अपना आचरण विलासिता, लाम्पट्य, व्यभिचार से रहित रख सकते थे?

आप अपने-आप से यह प्रश्न पूछ कर देखें और आपको उत्तर स्वयं ही मिल जायेगा। इसे समझने के लिए न तो आपका बहुत पढ़ा-लिखा होना आवश्यक है, न ही बड़ा विद्वान-बुद्धिमान होना।

तो फिर ईसाइयों को शिवलिंग में एक खड़ा शिश्न, और शिव की पत्नी शक्ति में एक व्यभिचारिणी, ही क्यों दिखती है?

- उनके साथ ऐसा होता है क्योंकि उनका अपना आचरण ही इतना गंदा है, कि उनकी सोच इस गंदगी के घेरे से बाहर निकल कर पवित्रता की ओर जा ही नहीं पाती।
- नाली के कीड़ों को चारों ओर नाली जैसा गंदा ही दिखता है।
- चमड़ी सफेद होने से हृदय स्वच्छ नहीं हो जाता, सोच शुद्ध नहीं हो जाती, नाली का कीड़ा नाली का ही रहता है।

उनका साथ पाकर, हममें से भी अनेक, उनके जैसे, नाली के कीड़े ही बन गये हैं

जब इस पुस्तक का पहला संस्करण प्रकाशित हुआ तो उत्तर-पश्चिम भारतवर्ष के एक स्थान से एक फोन आया। ये महाशय किसी 'भारतीय सुराज्य मंच' के 'अध्यक्ष' हुआ करते थे। यह लगभग दो वर्ष पहले की बात है।

उन्होंने इतनी दूर से मुझे फोन किया यह जताने के लिए कि जो ये ईसाई कहते हैं शिवलिंग के बारे में, उसमें गलत क्या है। उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं शिव-पुराण पढ़ूँ।

- अब मेरी समस्या यह है कि इन पोथी-पढ़े पंडितों के प्रति मेरे मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रही है क्योंकि इनका सारा ज्ञान उधार का होता है, उन्होंने स्वयं "किसी चीज की व्यक्तिगत अनुभूति से" कुछ न सीखा होता है।
- उनकी बात सुनकर मेरे मन में एक प्रश्न उठा जो मैंने उनसे पूछा। सदियों जो करोड़ों-अरबों स्त्री-पुरुष शिव मंदिर में पूजा के लिए जाते हैं तो उनके मन में क्या भाव होता है? क्या वे एक कामान्ध खड़े शिश्न की पूजा करते हैं या फिर भगवान शिव की?
- इसके उत्तर में उन्होंने मुझसे कहा कि उन व्यक्तियों के मन में कोई भाव होता ही नहीं है। अर्थात वे एक भावना-रहित रोबोट (मशीन) की भाँति पूजा के लिए शिव मंदिर

में जाते हैं।

• उनकी यह बात सुनकर मुझे लगा शायद वह अपनी ही बात कर रहे थे - एक ऐसा व्यक्ति जो पोथी पढ़ कर एक भावना-रहित मशीन जैसा हो गया है।

• मैं सोचता रहा कि यदि ऐसे व्यक्ति भारत में 'सुराज्य' लाने की जिम्मेदारी लेंगे तो वह भारत कैसा होगा?

जब तक हमने अपने आपको ईसाई-अँग्रेज़ों से दूर रखा, तब तक हमने अपने आचरण की पवित्रता को बनाए रखा

• जब हम इनके क़रीब आते गए तो हमारी पवित्रता हमसे दूर होती गई।

• छः पीढ़ियों की संगत के पश्चात, आज हम उनके इतने निकट आ गए हैं, कि हमने अपनी आचरण की पवित्रता को पूरी तरह से खो दिया है।

• इसीलिए हमारे गुरुजन कहा करते थे कि बुरी संगत का असर बुरा ही होता है।

• आज तो हम इस प्रकार से घुलमिल गए हैं उनसे, कि उनके आचरण को हम उचित, एवं हमारे अपने पुरातन आचरणों को अनुचित समझने लगे हैं।

यह क्यों आवश्यक है कि हम जानें कि उनके बिना हम क्या थे और उनकी संगत में हम क्या बन गए

• हमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि ये पोप और अन्य ईसाई धर्माध्यक्ष अपने घरों में क्या करते हैं।

• पर उन्होंने हमारे घर में जबरन घुसकर हमें और हमारे बच्चों को अपने जैसा गंदा बनाना शुरू किया।

• इसलिए हमारा जानना आवश्यक है कि हम उनके बिना क्या थे और उनकी संगत में क्या बन गए।

सात फेरों का दृष्टांत

• हिंदू विवाह होता है सात फेरे पूरे कर।

• ईसाई-अँग्रेज़ी शिक्षा पद्धति का आरंभ हुआ सन 1835 में।

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

- 30 वर्ष में एक नई पीढ़ी तैयार हो जाती है।
- 1835 से 2005 तक कोई 170 वर्ष हुए।
- 10 वर्ष और हैं 180 वर्ष पूरे होने में।
- 180 वर्ष का अर्थ होगा 6 पीढ़ीयाँ जिसके अंतिम चरण की ओर बढ़ रहे हैं हम तेजी से।
- उसके पश्चात एक और पीढ़ी के गुजरने की देर रहेगी।
- तब होंगीं सात पीढ़ीयाँ पूरी।
- ईसाई शिक्षा पद्धति की सातवीं पीढ़ी।
- तब नाम के हम हिंदू रहेंगे, सोच हमारी ईसाई होगी, चरित्र हमारा ईसाई होगा।

और हमारे टी वी गुरु क्या कहते हैं?

- प्रत्येक सुबह हमारे टीवी-गुरु यह कहते सुनाई देते हैं कि हमें अंतर्मुखी होकर ईश्वर की साधना में लीन होना चाहिए।
- और हमें अपने दोषों के प्रति सतत जागरूक रहकर उन्हें दूर करते रहने की चेष्टा में सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए।
- क्या उन्हें दिखाई नहीं देता कि हमारे धर्म पर कैसे आघात हो रहे हैं?
- या फिर वे देख कर भी उसे देखना नहीं चाहते?
- उनका ऐसा ज्ञान और ऐसा प्रवचन किस काम का जो हमें आज की प्राथमिकता के प्रति जागरूक नहीं कराता?

तृतीय संस्करण में परिवर्धित विषयवस्तु

मेरी चेष्टायें आपको अर्पित

अप्रैल 2006 आज हिन्दू अपने गुरु की ओर देखता है मार्गदर्शन के लिए। जब हमारे सभी गुरु अपने अनुयायियों को यह बताना आरम्भ करेंगे कि आज की स्थिति में आम हिन्दू का क्या कर्तव्य बनता है, तभी हम इस दिशा में तेजी के साथ आगे बढ़ सकेंगे।

हालांकि, मैं अच्छी तरह इस बात को जानता हूँ कि आज की स्थिति में सभी गुरुओं से यह आशा करना अवास्तविक होगा। चूँकि मैं इसके कारण को भी समझता हूँ मेरी कुछ पुस्तिकायें हमारे आदरणीय गुरुओं के लिए भी हैं।

सभी गुरु उन्हें पसन्द नहीं करेंगे। मेरी स्पष्टवादिता से कुछ चिढ़ जायेंगे (उदाहरण पुस्तक 22)। पर जिनमें सनातन धर्म के प्रति सच्ची आस्था एवं सच्चा प्रेम है, वे मेरी चुभती हुई बातों में सच्चाई की कोई झलक तो देखेंगे, और अपनी राह बदलेंगे।

मेरा काम तो बहुत सीधा-सादा है। एक कोने में बैठकर लिखते रहना, एवं उसे श्री नारायण को अर्पित करते जाना। उसके पश्चात नारायण ही चुनेंगे किसे मेरे साथ चलना है, और किसे नहीं।

जब नारायण कहेंगे कि उठ उस कोने से, और निकल पड़ उस राह पर, जो मैने तेरे लिए चुना है, तब उस दिन होगा, "शंखनाद"।

पर वह दिन अभी दूर है। जब तक कि भारत जन-मानस उस युद्धघोष के पीछे एक साथ चल पड़ने का सत्साहस नहीं जुटा पाता, तब तक वह दिन दूर ही रहेगा।

मानोज रखित

8-7-2006 "आपके द्वारा प्रेषित 4 पुस्तकें (16, 18, 19, 20) प्राप्त हो गई हैं तदर्थ बहुशः साधुवाद। आपकी सभी पुस्तकें सनातन धर्मियों की आखें खोलने वाली, सुन्दर रूप में उत्तम विचार-प्रणाली को लेकर, पुष्ट तर्क से संपुटित सरल, बोधगम्य भाषा में लिखित हैं जिससे समाज समाधान की दिशा में अग्रसर हो सकता है। भैया हमारे

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

राम की 67 वर्ष की आयु है शरीर रोगवश जीर्ण हो गया है सो हम तो भगवन्नाम एवं भगवत महिमा लेखन ही यकिंचित कर पाते हैं। अतएव आपके इस जनता को चैतन्य करने के कार्य में हार्दिक शुभकामनायें हमारी आपके साथ हैं और सदैव रहेंगी। शेष श्री हरिकृपा।"

स्वामी नर्मदानन्द सरस्वती 'हरिदास', जबलपुर

20-11-2006 "यहाँ पुस्तक क्रमांक 20 की विषय-वस्तु का एक और पहलू उजागर होता है। हम सभी जीवन के अलग-2 मोड़ों पर खड़े हैं। यही निर्धारण करता है हमारे आज के कर्तव्य का। जब मनुष्य का शरीर जराजीर्ण हो चुका हो एवं वह इहलोक त्यागकर परलोक की ओर एक-एक कदम बढ़ा रहा होता है, तो भगवद्चिन्तन ही सर्वथा उचित है।

मानोज रखित

10-4-2006 "आप द्वारा प्रेषित 'कहानी एक षड़यंत्र की' पुस्तिका प्राप्त हुई। इसके पहले 'हिन्दू देवी-देवताओं' के प्रति अश्लील प्रचार संबंधी पुस्तिका प्राप्त हुई थी, जिसे पढ़कर अन्य जागरूक लोगों को पढ़वा रहा हूँ। लखनऊ के माननीय श्री रवि कान्त खरे बाबाजी से 'मज़हब ही सिखाता है आपस में बैर रखना' कुछ पुस्तिकायें प्राप्त हुईं थीं जिनका क्षेत्र में क्रमवार अध्ययन हो रहा है। आपके विचार प्रभावशाली एवम प्रेरक होने के साथ ही हिन्दू समाज के जागरण हेतु महत्वपूर्ण हैं। इसके लिए हम आपके प्रति आभार व्यक्त करते हुए साधुवाद देते हैं। यदि सम्भव हो तो ये पुस्तिकायें अपनी सुविधानुसार भेजने का कष्ट करें जिन्हें हम लोगों में वितरित कर आपके विचार जनसामान्य तक पहुँचाते हुए जनजागरण में अपने कर्तव्य का पालन कर सकें।"

डॉ ओम प्रकाश उर्फ़ 'विवेकानन्द प्रकाश', ग्राम छोटीपुरवा, पोस्ट इस्माइलपुर, जिला बाराबंकी, उ प्र
पिन कोड 225 301

मार्च 2006 "आपने निश्चित रूप से इस पुस्तक को लिखने में काफ़ी परिश्रम किया है और इसमें जो तथ्य प्रकट किए हैं वे किसी भी चिन्तनशील व्यक्ति पर भावनात्मक प्रभाव डालने में सक्षम हैं। पुस्तक में वर्णित अनेक तथ्य सत्य प्रतीत होते हैं, यह वास्तव में अत्यन्त दुःख की बात है कि हमारा हिन्दू समाज बहुत सारे तथ्यों से अनभिज्ञ है और अनेक मौकों पर उसकी एकजुटता का अभाव विपरीत स्थितियों को जन्म देता है।

आपने इस बाबत एक इतिहास की भांति कुछ तथ्यों पर प्रकाश डाला किन्तु इन सब विपरीत परिस्थितियों में समाधान क्या हो सकता है, इसका उल्लेख अथवा संकेत नहीं किया। आपने जब इतना विशद अध्ययन और श्रम किया है तब आपके दिमाग में कहीं न कहीं उसका समाधान अथवा उसके लिए किये जाने वाले क्रियाकलापों का विचार अवश्य

होगा। मैं चाहूँगा कि वह दिशादर्शन आप प्रस्तुत करें तो आपके साथ अधिक से अधिक लोग क्रमशः जुड़ते जायेंगे।

अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद के लिए मै अपनी सेवायें प्रस्तुत कर सकता हूँ। हाँ, विषय-वस्तु महत्वपूर्ण होना आवश्यक है।"

श्री प्रमोद प्रकाश सक्सेना, 91 चित्रगुप्त नगर, कोटरा, भोपाल, म प्र

मार्च, अप्रैल एवं नवम्बर 2006 श्री प्रमोद प्रकाश सक्सेना जी का आभार मानते हुए कि उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाये हैं, मैं उन्हें एवं बाकी पाठकों को - जिनके भी मन में ये प्रश्न उठे होंगे - उन सभी को यह आश्वासन देना चाहूँगा कि समाधान की बातें अवश्य होंगी पर उपयुक्त समय आने पर।

संकेत का कोई एक पहलू प्रत्येक पुस्तक में छुपा होता है पर उसे समाधान का नाम देकर नहीं। हमें एक-एक कदम लेना होगा। राह बीहड़ है। अँधेरा घना है। पहले रोशनी की जरूरत है। राह की पहचान आवश्यक है। तब न वे आगे बढ़ेंगे जो मेरे साथ जुडेंगे।

स्थिति की जटिलता से उन्हें पहले पूरी तरह अवगत कराना है। तब समाधान स्वयं नज़र आने लगेगा। थोड़ा समय लगेगा, पर उतना नहीं जितना उन्हें लगा था हमें तोड़ने के लिए (1835 से 1990)।

- युद्ध की ओर अग्रसर होने से पहले शत्रु की पूरी पहचान, उसकी शक्तियों एवं आसक्तियों की समझ, अपनी जड़ों की मजबूती की परख, एवं कुरुक्षेत्र की रणभूमि पर खड़े नारायण के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना जगानी आवश्यक है।

- क्रान्ति का बीज मस्तिष्क में बोया जायेगा, जड़ें हृदय तक पहुँचेंगी और मजबूत बनेंगीं। तब उठ खड़ा होगा आम हिन्दू। राजनीति उसे उद्वेलित न कर सकेगी। धर्म उसे प्रेरित करेगा अपने कर्म की ओर।

वह होगा तब, जब आयेगी आम हिन्दू को "धर्म" की सही समझ। आज हर कोई धर्म का व्याख्याता बन बैठा है। और उनमें से सबसे अधिक पहुँच है टीवी सीरियल वालों की जिनके जरिए पटकथा लेखक, निर्माता, निर्देशक आपस में तय कर लेते हैं - क्या होनी चाहिए गीता की व्याख्या अलग-अलग पारिवारिक स्थितियों में।

उदाहरण के लिए, आज (दिनांक 27-3-2006 समय 2030-2100) 'स्टार प्लस' पर प्रेरणा नामक मुख्य पात्र के सामने एक कठिन समस्या रखी गई 'देख प्रेरणा, उधर जाता है तेरे धर्म का रास्ता, और ठीक उसकी विपरीत दिशा में जाता है वह तेरा कर्म का रास्ता। अब तू किसको चुनेगी जब तेरे धर्म व कर्म हैं एक दूसरे के ठीक विपरीत?' दुविधा में पड़े प्रेरणा को, पृष्ठभूमि में गीता के ये दो श्लोक बार-बार याद दिलाये जाते रहे *'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'* एवं*'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत'।*

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

उसके बाद आती है एक आवाज़ पृष्ठभूमि से 'तुझे चुनना है कर्म का रास्ता, जब हो वह धर्म के रास्ते के ठीक विपरीत।'

इस प्रकार, करोड़ों दर्शकों की ज्ञान की पोंटली में समा गया गीता की व्याख्या का एक नया पहलू - धर्म व कर्म के रास्ते एक-दूसरे के ठीक विपरीत भी हो सकते हैं। यदि कर्म को धर्म के विरुद्ध खड़े होने की आवश्यकता हुई तो कहीं न कहीं कर्म एवं धर्म की समझ में कोई खोट रह गई है।

ऐसी खोटी व्याख्याओं का पृष्ठांकन (इन्डॉःसमेंट) *'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'* एवं *'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत'* जैसे ऐतहासिक महत्व के उद्धरणों के परिप्रेक्ष्य में नहीं किया जाना चाहिए। कर्म एवं धर्म जैसी महत्वपूर्ण संकल्पनाओं को जन-साधारण के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कुछ सावधानी बरती जानी चाहिए। यह नौटंकी लिखने वालों का काम नहीं।

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को प्रेरित किया था उस कर्म के लिए जो धर्म के विपरीत नहीं, बल्कि धर्म की रक्षा के लिए था। यह बात सम्भवतः इन लोगों की समझ के बाहर है।

कुछ इसी प्रकार 'स्टार प्लस' के एक और अत्यधिक लोकप्रिय सीरियल में (सन 2002-03) पटकथा लेखक, निर्माता, निर्देशक ने कहानी के एक वयस्क पात्र के माध्यम से, करोड़ों हिन्दुओं को यह सिखा दिया कि भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि -

"एक झूठ सौ सच के बराबर होता है, यदि उस झूठ से किसी का भला होता हो"।

जब मैं 'स्टार प्लस' के वेब-साइट पर गया और दर्शकों के पुनर्निवेशन (फ़ीडबैक) के स्थान पर इस प्रसंग का जिक्र करते हुए उनसे पूछा कि बताइये मुझे गीता के किस अध्याय में, कौन से श्लोक में ऐसा कहा गया है कि 'एक झूठ सौ सच के बराबर होता है...'। उनका कोई उत्तर न आया मेरे ईमेल पर।

उन दिनों मैंने गीता का गभीरता से अध्ययन किया था और लगभग सारी गीता मेरे हृदय में स्थित थी (आज नहीं है), और मैं भली-भाँति जानता था कि श्रीमद्भग्वद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने 'एक झूठ को सौ सच के बराबर' कहीं भी, किसी भी श्लोक में नहीं कहा है। मैने उनसे अपने फीडबेक में यह भी आग्रह किया था कि यदि वे मुझे गीता का वह अध्याय और वह श्लोक नहीं बता पाते हैं तो उन्हें अपने सीरीयल के आरम्भ में अपनी गलती स्वीकार करनी चाहिए ताकि दर्शक इस भ्रम में न जीयें, और उससे भी महत्वपूर्ण, कि इस मिथ्या को गीता की आड़ में, उनकी ही तरह, आगे फैलाते न रहें। पर ऐसी कोई स्वीकारोक्ति मुझे देखने को न मिली।

मैं सोचता रहा, क्या वह कबीर ही था जो कह गया था "एक अंधा दूसरे अंधे को राह दिखायेगा, तो दोनों कुँए में जा गिरेंगे"। क्या यही बात लागू होती है इन टीवी सीरियलों

के बारे में?

टिप्पणी - यद्यपि मैं इस बात को अस्वीकार नहीं करता हूँ कि इन 'एकता कपूर' के सीरियलों में अनेक अच्छी बातें भी रहती हैं, विशेषकर इनका प्रयास आजकी पीढ़ी को हमारी संस्कृति से बाँधे रखने की दिशा में। यह अलग बात है कि यह प्रयास भी अनेक स्थानों पर सही-गलत कि खिचड़ी जैसी हुआ करती है। इन सबके बावजूद, 'आज की पैदावार एकता कपूर' के इन प्रयासों में बहुत-कुछ अच्छा भी है, जिसे किसी भी तरह नजरंदाज नहीं किया जा सकता है।

मानोज रखित

अप्रैल 2006 "लखनऊ के श्री रविकान्त खरे (बाबाजी द्वारा भेजी गई आपकी पुस्तक 'वे जो हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में...' प्राप्त हुई। आपने जो लिखा है उसका आभास तो मुझे समय-2 पर मिलता रहा है और मैंने अपने स्तर पर इनका विरोध कविता आलेख आदि के माध्यम से किया है। आपकी इस पुस्तक में कुछ और नई सूचनायें मिली। ये निश्चय ही भारतीय अस्मिता को चोट पहुँचाने वाली हैं। अब पानी इतने ऊपर से गुजर चुका है कि हमें भी हिन्दुत्व और राष्ट्र की रक्षा के लिए सभी माध्यमों से इन पर प्रहार करना चाहिए और लोगों को सारी असलियत समझाकर सत्ता प्रखर राष्ट्रवादियों को सौंपना चाहिए। मैं आपकी धारणाओं का समर्थन करता हूँ और जब तक बस चलेगा आपके नक्शेकदम पर चलता रहूँगा।"

डॉ परमलाल गुप्त संयोजक ?? साहित्यकार परिषद ?? बस स्टैंड के पीछे, सतना 485001 (म प्र)

19 नवंबर 2006 मैं आपसे सहमत हूँ कि "हमें भी हिन्दुत्व और राष्ट्र की रक्षा के लिए सभी माध्यमों से इन आततायियों पर प्रहार करना चाहिए"।

• यदि हम दबते ही रहेंगे तो वे हमें दबाते ही रहेंगे। विनम्रता की भी एक हद होती है। कोई आपके सर पर पाँव रखकर आपको जमीन की ओर दबाता रहे और आप उठ खड़े होने की चेष्टा न करें, तो वह आपको तब तक दबाता रहेगा जब तक आप जमीन के अंदर गाड़ नहीं दिये जाते। वह मनुष्य ही क्या जिसमें स्वाभिमान न हो? उसमें और एक मुर्दे में फ़र्क ही क्या? हमें अच्छी सीख दी गई है कि हम अनाचार न करें। पर हमें यह तो सिखाया नहीं गया है कि हम अनाचार का विरोध न करे? अतः आपकी इस सोच का पूर्णतः समर्थन करते हुए, आपसे अनुरोध करना चाहता हूँ कि इस भावना को जन-जन में फैलायें।

आपने लिखा है "लोगों को सारी असलियत समझाकर सत्ता प्रखर राष्ट्रवादियों को सौंपना चाहिए"।

• समस्या इतनी सहज नहीं कि इस सोच को अभी अंज़ाम दिया जा सके, या अंजाम देने की बात सोची जा सके। समस्या के अनेक पहलू हैं और उनकी पहुँच इतनी गहरी है, कि उन्हें प्रबुद्ध लोगों की समझ में लाने में ही काफी समय लगेगा। सत्ता प्रखर राष्ट्रवादियों के हाथ में सौपना ही समस्या का हल न होगा, क्योंकि राष्ट्रवादी होना ही

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

अपने-आप में पर्याप्त नहीं है, एक अच्छे समाज की रचना करने के लिए।

जो अमरीका की नाड़ी को पहचानते हैं वे यह भी जानते होंगे कि अमरीका एक प्रखर राष्ट्रवादी राष्ट्र है। अमरीकी जनसाधारण अपने अमरीकी होने पर सदा गौरव बोध करते हैं। उनमें राष्ट्रवादिता कूट-कूट कर भरी है। इसे उनका धनी राष्ट्र या शक्तिशाली राष्ट्र होने का अहंकर मात्र न समझें। उनकी सत्ता भी प्रखर राष्ट्रवादियों के हाथ में है। इन सब के बावजूद, अमरीकी समाज एक अच्छा समाज नहीं है।

इसका कारण है, उस समाज की आत्मा बसी है एक ऐसे धर्म में जो आसुरिक प्रवृत्ति का है। उस धर्म के बारे में जब आप पढ़ेंगे (पुस्तक क्रमांक 04 पृष्ठ संख्या 260) तो अनेक चौंकाने वाली बातें मिलेंगी। उस धर्म के नाड़ी की पहचान आपको उस पुस्तक से ही होगी।

• हमारे लिए यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि राष्ट्र की आत्मा राष्ट्रवादिता से नहीं बल्कि धर्म से 'सींची' जाती है। अतः एक अच्छे समाज की रचना के लिए अच्छे धर्म की आवश्यकता होती है जो लोगों की सोच को, भावनाओ को, जीवन मूल्यों को सही दिशा दे सके।

• यह योग्यता हिन्दू धर्म में है, पर कितने प्रखर राष्ट्रवादी हिन्दू धर्म की नाड़ी को पहचानते हैं? उसे पहचानने के लिए हिन्दू पैदा होना पर्याप्त नहीं, हिन्दू कुल मे पल-बढ़ कर बड़ा होना पर्याप्त नहीं, हिन्दू धर्म की मूल पुस्तकों को पढ़ लेना पर्याप्त नहीं, हिन्दू धर्म के बारे में ढेर सारी किताबें पढ़ना पर्याप्त नहीं, पंडिताई पर्याप्त नहीं, विद्वता पर्याप्त नहीं। इन सब से आगे बढ़ कर कुछ और भी आवश्यक है।

वह 'कुछ और' क्या है इसकी आलोचना मै यहाँ नहीं करूँगा। कारण, इस पुस्तक का विषय वह नहीं है, न ही इस पुस्तक का उद्देश्य। अतः समय आने पर ही उन विषयों पर चर्चा करूँगा। यदि मुझ पर भरोसा है तो अभी इतने पर ही विश्वास कर लें, बाकी 'समय' पर छोड़ दें। एक-एक कदम चल कर ही हमें अपनी मंजिल तक पहुँचना है।

मानोज रखित

21-4-2006 "देवी-देवताओं के बारे में आपकी पुस्तक पढ़ी। वास्तव में हमारी स्थिति उस अर्जुन की तरह हो गई है जो युद्धस्थल से भागना चाहता है। बिल्ली के डर से कबूतर आँखे बंद कर लेता है - पर क्या संकट टलता है?

आपका हर कार्य सराहनीय है। ईश्वर आपको स्वस्थ रखें। अगले अंक में आपका भगवदगीता पर लेख दूँगा। प्रति भी भेजूँगा।"

श्री दामोदर भगेरिया, सम्पादक 'गीता से जुड़ें', 13 एम-जी-डी मार्केट, जयपुर 302 002 फोन 0141-2212510

17-3-2006 "आपकी दोनों पुस्तिकायें क्रमशः 'मज़हब ही सिखाता है आपस में बैर करना, एक सनातन धर्म के सिवा' तथा 'वे जो हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में इतनी गंदी-गंदी बातें कहते हैं, और आप हैं कि बस चुप्पी साधे बैठे रहते हैं' मिलीं। दोनों पुस्तकों का गहराई से अध्ययन किया। इन पुस्तिकाओं की रचना गम्भीर शोध का परिणाम है। आपने अपने कथन को सप्रमाण पेश किया है।

कितनी दुःखद बात है कि ईसाई धर्मगुरु टीवी एवं इंटरनेट के द्वारा विश्वभर के लाखों-करोड़ों व्यक्तियों को हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में गंदी-गंदी बातें कहते हैं। इसका विरोध तो हिन्दुओं को करना ही चाहिये। जिस प्रकर ईसाई धर्मगुरु टीवी व इंटरनेट जैसे इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का उपयोग हिन्दुओं के विरुद्ध घृणा फैलाने में कर रहे हैं, उसी प्रकार हिन्दुओं को भी बदले की भावना से न सही पर उनके दुश्प्रचार का विरोध तो करना ही चाहिए। ईसाई धर्म वाले पूरे देश भर में छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के माध्यम से अपने धर्म के प्रसार में लगे हुए हैं। इसी प्रकार आपने भी हिन्दू धर्म-रक्षार्थ इन पुस्तिकाओं की रचना की है और वास्तविकता को हिन्दुओं के बीच उजागर करने का प्रयास किया है।

ईसाई, मुस्लिम तथा सनातन धर्म की तुलना यह सिद्ध करती है कि किस प्रकार बाइबिल और कुरआन जैसे तथाकथित धर्मग्रंथ समाज में घृणा फ़ैलाने का काम कर रहे हैं। अब आवश्यकता है इन पुस्तिकाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार की, अधिक-से-अधिक हिन्दुओं के हाथों में पहुँचाने की, जिससे इन सोये हुए हिन्दुओं को जगाया जा सके, सनातन धर्म की रक्षा की जा सके और दुनिया में हिन्दुओं के प्रति भड़काई गई घृणा पर लगाम लगाया जा सके।"

श्री अभय कुमार ओझा, सहायक, व्यवहार न्यायालय, खगड़िया 851204, बिहार

19-11-2006 आपने लिखा है "इसी प्रकार आपने भी हिन्दू धर्म-रक्षार्थ इन पुस्तिकाओं की रचना की है और वास्तविकता को हिन्दुओं के बीच उजागर करने का प्रयास किया है। अब आवश्यकता है इन पुस्तिकाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार की, अधिक-से-अधिक हिन्दुओं के हाथों में पहुँचाने की, जिससे इन सोये हुए हिन्दुओं को जगाया जा सके, सनातन धर्म की रक्षा की जा सके और दुनिया में हिन्दुओं के प्रति भड़काई गई घृणा पर लगाम लगाया जा सके।"

- आपसे अनुरोध है कि आप अपनी तरफ से, इस दिशा में कुछ करने का प्रयास करें, ताकि आपकी देखा-देखी अन्य लोग भी इस दिशा में कदम बढ़ायें। हम में से किसी के पास भी असीमित साधन नहीं है। अपनी-2 व्यक्तिगत स्थिति के अनुसार हमें अपना-2 योगदान करना चाहिए। अन्यथा हमारे सुझाव अपनी महत्ता खो बैठेंगे।

मानोज रखित

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

24-4-2006 ""आपकी दो पुस्तिका - हिन्दू देवी-देवताओं के संबंध में तथा मज़हब ही सिखाता..... की प्रति प्राप्त हुई। हार्दिक धन्यवाद।

हिन्दूवाद का विरोध हिन्दू देवी-देवताओं को गाली देकर ही शुरु हुआ है। भारत में इसका इतिहास अति प्राचीन है। अन्य धर्मावलम्बी जिनमें ईसाई और मुसलमान इस कुकृत्य में सबसे आगे हैं।

ईसाइयों की धार्मिक व्यवस्था में कितनी अनैतिकता है, इसका भंडाफोड़ आपकी पुस्तिका से भलीभाँति हुआ है।

मज़हब ही सिखाता है आपस मे बैर रखना - इस प्रकार का सोच ही सकरात्मक है। छद्म धर्मनिरपेक्षता के दलदल में ऐसा विचार दबा हुआ है। भारत में विदेशी आक्रान्ताओं के मजहबी उन्माद के कारण ही गुलामी को फलने-फूलने का मौका मिला। आज के समय में मज़हबी उन्माद का चेहरा बदल गया है। इसे पहचानने और इसका विरोध करने की आवश्यकता है।

दोनों पुस्तिका अपने विषय-वस्तु को ठीक से प्रतिपादित करती है।

(डॉ) जनार्दन यादव, लेखक/पत्रकार, पो0 नरपतगंज 854 335, जिला अररिया (बिहार), फोन 06455-243393

21-6-2006 "आपके द्वारा शोध की गई पुस्तक को भाई डॉ0 ओम प्रकाश के द्वारा प्राप्त होने पर पढ़ी काफ़ी जिज्ञासु (?) और अपने धर्म के बारे में इतनी घिनौनी बातों को जानकर काफ़ी क्षुब्ध ह्रदय से घृणा का उदय हो रहा उन गोरी चमड़ी वालों पर परन्तु हम कुछ भी नही कर पा रहें। यह अपने ऊपर क्षोभ भी है। हम शासन व्यवस्था को दोष देकर अपने मन को समझा भी नहीं पा रहे और कुछ न कर सकने की छटपटाहट हो रही है। आपने हिन्दुत्व जागरन का अद्‌भुत प्रयास किया है। कोई भी दल (राजनैतिक) इन पर कोई निर्णय नहीं लेता सभी चुप्पी साधे राजनीति की रोटी सेंकते हैं। मै एक मित्र के साथ एटा, मैनपुरी व इटावा में घूमा हूँ, वहाँ तो गाँव के गाँव ईसाईयत में डूबते जा रहे हैं। ऐसा ही नहीं लखनऊ में नेताओं के नाक तले एक ऐसी संस्था कार्य कर रही है जिसका नाम चौंकाने वाला है। नाम है 'इन्डिया एवरी होम क्रूसेड' (India Every Home Crusade). और उनका प्रयास भी है वे गरीबों को नौकरी देते हैं, नवयुवकों को रोजगार देते हैं, और जाने क्या-2 लालच देकर ईसाई बनाते जा रहे हैं। और हमारे नेता एवं समाजसेवी तथाकथित हाथ पर हाथ धरे मौन स्वीकृत (?) स्वीकार किया है। आपके विचार एवं शोध सराहनीय है। समय रहते यदि सोच न बदली तो एक दिन हम सब देखते रह जायेंगे और समय हाथ से निकल जयेगा।

आर0 वर्मा, छोटी इस्माइलपुर, बाराबंकी

20-11-2006 ऐसा नहीं कि हम कुछ नहीं कर सकते। हर व्यक्ति कुछ न कुछ तो कर ही सकता है, चाहे वह कुछ 'बड़ा' हो या 'छोटा'।

• भूल गये 'सिंह और चूहे' की कहानी जो बचपन में पढ़ी थी आपने? वह चूहा जिसकी जंगल के राजा सिंह के सामने कोई औकात ही नहीं थी, उसी चूहे ने एक दिन शिकारी के जाल में फँसे सिंह की जान बचाई, शिकारी के लौटने से पहले उस जाल को अपने नुकीले दाँतों से काटकर!

• मत भूलिए कि प्रत्येक व्यक्ति को भगवान ने कुछ न कुछ दिया ही है। जरूरत है उसे पहचानने की। आपको जो भी साधन ईश्वर ने दिया है, उसे जब आप पहचान लेंगे, तब स्वयं ही आप प्रेरित होंगे, कुछ कर गुजरने के लिए।

मानोज रखित

26-3-2006 "शुभाशीष। आपके द्वारा लिखित दोनों पुस्तकें 'मज़हब ही सिखाता है आपस में बैर करना' तथा 'वे जो.....बस चुप्पी साधे बैठे रहते हैं मिली। आपको बहुत-2 धन्यवाद जो आँखें खोल देने वाली तथा हिन्दुओं के ठस हो गये मस्तिष्क को ठोकर मारने वाली ऐसी पुस्तिकायें लिखीं।

मैं भी एक मासिक पत्र 'ठेंगे पर सब मार दिया' प्रकाशित व सम्पादित करता हूँ जो खरी-2 बातें सुना-2 कर सुप्त हिन्दुओं का (?) प्रयत्न करता है।

लेकिन ये हिन्दू ही हैं जो इस त्रासदी के पूर्णरूप से जिम्मेदार हैं। हिन्दुओं ने ही सारे राष्ट्र-हित को अनदेखा किया है और आज भी कर रहे हैं। सब कुछ जानते हुए भी मुस्लिम तुष्टीकरण में लगे रहते हैं, घुसपैठियों का (?) सिर आँखों पर बिठाते रहते हैं, और धर्मनिरपेक्ष बनकर सनातन धर्म का, धार्मिक ग्रंथों और मान्यताओं का उपहास उड़ाते (?) रहते हैं। हम लोग अंधों के आगे रो रहे हैं और अपनी आँखें फोड़ रहे हैं। वर्तमान परिवेश का भारत आतंकवाद और कट्टरपंथी हिंसा के दौर से गुजर रहा है। दोहरे चरित्र के राजनीतिज्ञ जो अधिकतर हिन्दू ही हैं, जातिवादी नेता जो हिन्दू ही हैं देश को विघटन की ओर ले जा रहे हैं। ऐसे में, इस तम में आपका प्रयत्न स्तुत्य है।

डॉ0 रामसेवक शुक्ल, होम्योपैथ, सम्पादक - ठेंगे पर सब मार दिया, 221/269-सी, तुलाराम बाग, इलाहाबाद-6, पत्र क्रमांक 21052

20-11-2006 आपके आशीष के लिए धन्यवाद! जाहिर है आप मुझसे उम्र में काफी बड़े है। ऐसी स्थिति में मेरा यह उत्तर कहाँ तक उचित होगा, कह नहीं सकता। फिर भी उत्तर देना आवश्यक जान पड़ा, उसी उद्देश्य के खातिर जिसके लिए आपने मुझे शुभाशीष दिय। भीष्म पितामह ने भी अर्जुन से कहा था कि उन पर तीर चलाने में उसे संकोच न करना चाहिए।

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

यहाँ मुझे आपकी बातों का खण्डन करना पड़ रहा है। आपकी-सी सोच मैंने अनेक विद्वतापूर्ण लोगों में पायी है। अतः मेरे ये उत्तर उन सभी के लिए हैं।

• हिन्दुओं को सम्पूर्ण रूप से दोषी ठहराते वक्त इस बात का स्पष्टीकरण कर देना उचित होगा कि हिन्दुओं में किस वर्ग को आप दोषी मानते हैं। अन्यथा ऐसा प्रतीत होगा कि आप आम हिन्दू को सर्वथा दोषी मानते हैं, जो पूर्णतः अनुचित होगा।

आम हिन्दू पढ़े-लिखे विद्वता-पूर्ण हिन्दुओं से कहीं अधिक 'हिन्दू' है अपने हृदय में। वह ठस मस्तिष्क वाला नहीं है। यदि होता तो वह अटल बिहारी और अडवानी जैसों को धूल न चटाता। उसे सोनिया जैसों से तो कोई आशा कभी थी ही नहीं, पर अटल बिहारी और अडवानी ने उन्हें एक छोटी-सी आशा किरण दिखायी थी, पर कुर्सी जब हाथ लगी तो बेपेंदी के लोटे की तरह लुढ़क गये। जिन्होंने उनकी हार को समय आने से पहले नहीं देखा था, यह कमी उनकी थी। ठस दिमाग आम हिन्दू का नहीं था। उसे आप-जैसे विद्वानों ने जितनी शिक्षा एवं जितने साधन दिये थे, उस तुलना में वह आप-जैसों से कोई कम पैनी दृष्टि नहीं रखता था।

• वह आम हिन्दू ही कल आपका साथ देगा यदि आप राष्ट्र के लिए वास्तव में कुछ करना चाहेंगे। आपके विद्वान साथी तो केवल आपस में बहस ही करते रहेंगे। आज राष्ट्र को बड़े-बड़े सोचने वालों की आवश्यकता नहीं है, बल्कि कुछ कर गुजरने वालों की है। हाँ यदि सोचने वाला, कर गुजरने वाला भी बन जाये, तो बात कुछ और ही है। जैसे, सभी के आदरणीय खरे बाबाजी। ऐसे-ही "खरे" लोगों की देश को जरूरत है।

• हिन्दू इतिहास की समझ पढ़े-लिखे विद्वतापूर्ण व्यक्तियों में उतनी ही है, जितनी उन्हें पढ़ायी और समझायी गयी थी। अतः हिन्दू के अतीत को उन्होंने उसी नजरिये से देखना सीखा है। इसका परिणाम आज यह है कि राष्ट्र की समस्याओं के बारे में उनकी समझ, उसी परिधि तक सीमित है, जहाँ तक उनकी नजर जाती है। पर सत्य तो, बहुधा धुन्ध के उस पार होता है, जहाँ उनकी नजर पहुँच ही नहीं पाती।

मानोज रखित

अप्रैल 2006 "सेवा में सम्माननीय साहब - आपकी 20 पृष्ठ की बुकलेट में देवी देवता सम्बन्धी विचार मिले। हिन्दू अपनी दुर्गति के लिए स्वयं जुम्मेदार है। बलवान लोग हिन्दू-निर्बल हिन्दू की जायदाद छीन रहे हैं। निर्बलों पर अत्याचार कर रहे हैं। गुण्डे सरे आम लूट-कत्ल-व्यभिचार कर रहे हैं जिनमें सफेदपोश व बल शामिल रहते हैं। जो गद्दी पर बैठे हैं वे केवल अपना ही घर भरना चाहते हैं। नंगे-भूखे-पीड़ित-शोषित-सताये लोगों का कोई हमदर्द नहीं है। न्यायालय न्याय नहीं दे पा रहे हैं। सर्वत्र आतंक छाया हुआ है तव लोगों को अपना समय किसी तरह कट जाय यही चिन्ता है देवी-देवताओं की ओर कौन देखे। (ये जिन्दा देवता ही लोगों को खाये जा रहे हैं।) सच्चे व्यक्ति के लिए न

सर्विस में गुजारा है न व्यापार में न कृषि में - सच्चे को कोई भीख देने को तैयार नहीं। जो मुस्टन्डे हैं वे ही देश का सुख चैन लूट रहे हैं गरीव तो आज भी पराधीन है। तव गरीव अपना समय काट रहे हैं। अब धन्ना सेठ जो छाये हुए हैं वे लूटने में लगे हैं केवल बुद्धिजीवी और विचारक (आप जैसे चन्द) हैं' वे विचारों से कितना कर सकते हैं? उनकी कोई बात भी नहीं सुनना चाहता। क्योंकि मुस्लिमों को रुष्ट करें क्यों ईसाइयों को रुष्ट करें बोट मिलता है सो फिर नहीं मिलेगा। तव गद्दी कैसे बहाल रहेगी। भवदीय-

आचार्य हर्षकवि, हर्षकुटी 205121, बमरौली (जसराना रोड), मैनपुरी (ब्रजभूमि), उ प्र

20-11-2006 मैं नहीं जानता कि आपने पुस्तक पढ़ी नहीं, या फिर उसे समझा नहीं। आपके उद्‌गार जो भी हैं, वे इस पुस्तक की विषय-वस्तु से परे हैं। सम्भवतः मेरी पुस्तकें आप-जैसों के लिए नहीं हैं।

समस्या यह नहीं कि क्या आपके चारों तरफ हो रहा है। समस्या यह है कि अपने-आपको बुद्धिजीवी समझने वाले, जो इस बात का भी दम भरते है कि उन्हें आम हिन्दू की कितनी परवाह है, ऐसे बुद्धिजीवियों की दृष्टि केवल अपने आस-पास के चारों तरफ ही सीमित है, उन्हें myopic कहा जा सकता है। उन्हें चित्र का वही पहलू दिखायी देता है जो उनकी सीमित दृष्ट देख पाती है। उन्हें कैनवॅस (canvas) के ऊपर फैला हुआ पूरा चित्र (the big picture) कभी नजर नहीं आता। उनमें जानने व सीखने की योग्यता खत्म हो चुकी होती है क्योंकि वे स्वयं आचार्य बन चुके होते हैं, जो आम हिन्दू से ऊपर कहीं बैठा होता है और अपनी समझ के अनुसार के एक सीमित समुदाय की निष्ठा का पात्र बन चुका होता है।

मानोज रखित

27-6-2006 "आपकी तीन पुस्तकें 15-16-18 मिली, हार्दिक धन्यवाद। आपने जिस वेबाकी से बाईबिल और कुरान के काले पृष्ठों को अन्यों को दिखाया है, आपके अन्दर हिन्दुत्व की धधकती आग को दिखाती है, परन्तु आज भी हम पाश्चात्य परिपाटियों का गुलामों की तरह अनुसरण कर रहे हैं, चाहे शिक्षा हो चाहे सामाजिक वि(?)रूपता, मैंने भी ईसाइयों के स्कूल और अमरीका द्वारा संचालित कालेज में शिक्षा पायी है, और मै ने देखा है चैपल का अनुशासन और लाजमी अनुपालन, चूँकि मै 70 से ऊपर हूँ अतः आजादी के पूर्व पान्की(?) और जानवुप्य(?) की सीमायें देखी हैं जैसे लखनऊ मे कई इमारतों पर लिखा होता था Indians and Dogs not allowed, यानी हम कुत्तों समान थे, बम्बई की सुपरीम(?) कोर्ट की चीफ जस्टिस एम0 सी0 छागला की Biography Roses in Dec में लिखा है कि बचपन में भूलवश वह बाइबिल पीरियड में सीट पर बैठे रहे और सजा में पाये सौ बेंत जिससे बुखार आ गया और वह पढ़ाई की हिम्मत हार गये। दूसरे world war में अंग्रेजो की नस्ल को बढ़ाने के लिए कालेज के लड़कों को

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

प्रलोभन देकर इंग्लैण्ड भेजा जाता था और उनसे साड़ों का काम लेकर (?) को बढ़ाया गया; आपका कार्य व्यापक है, ईश्वर आपको स्वस्थ समृद्ध रखें।

श्री रामकिशोर कपूर, 40 चौकसी नाथ मार्ग, शाहजहाँपुर, उ प्र 242 001

20-11-2006 आपकी बातों से मुझे अपने बचपन की एक घटना याद आ गई। एक वर्ष के लिए मुझे इलाहाबाद के जुमना क्रिश्चियन मिशनरी स्कूल में पढ़ने का मौका मिला था, उसके बाद पिताजी की बदली हो गई थी अतः हमें अन्य प्रान्त में जाना पड़ा।

एक दिन की बात है जो आज भी मुझे चित्र की भाँति याद है। स्कूल के सारे बच्चे एक जगह पर बिठाये गये जिनमें लड़कियाँ भी थीं और लड़के भी। स्कूल के समस्त अध्यापक-अध्यापिकायें भी अपनी-अपनी सीट पर मौजूद थे। प्रधानाध्यापिका भी वहाँ मौजूद थीं। शायद हम उन्हें मदर कहा करते थे पर आज जब सोच स्पष्ट हुई तो जाना कि 'मदर' का अर्थ सम्भवतः उन्हें स्वयं मालूम न था। खैर अब मुद्दे पर आते हैं।

मै उस समय कोई आठ-नौ साल का था। मेरे हम-उम्र एक बच्चे को लाया गया। उसका दोष बताया गया। सबके (लड़के-लड़कियों) के सामने उसे नंगा किया गया। फिर उसे बेंत मारे गये। यह शुभकर्म हमारी तथाकथित 'मदर' के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

मैं नही जानता कि उस छोटे-से बच्चे पर क्या गुजरी होगी। उसके मानस-पटल पर कैसा दाग रह गया होगा। मुझे यह भी याद नहीं कि उसका दोष क्या था। बाकी सारा दृष्य आज भी मेरे दिमाग में वैसा-का-वैसा ही है। मैं देख सकता हूँ वह स्थान जहाँ हम सारे बच्चे बैठे थे, जहाँ हमारे अध्यापक-अध्यापिकायें बैठीं थीं। और जहाँ हमारी पूज्य 'मदर' बैठीं थीं। उनके पास उस छात्र को लाया गया। अदालत की तरह उसका गुनाह सुनाया गया। वह बच्चा न तो अपनी पैरवी कर सकता था, न उसे कोई वकील दिया गया। उसे सबके सामने नंगा किया गया जहाँ छात्र और छात्रायें भी थीं। और फिर उसे पीछे मुड़ने को कहा गया ताकि उसके चूतड़ सबको भलि-भाँति दिख सके। फिर 'मदर' ने बेंत उठायी। वे बेंत बरसते रहे उस बच्चे के चूतड़ों पर।

मैं नहीं जानता कि उसके माँ-बाप को इस बात की खबर हुई होगी या नहीं। न मैने अपने माँ-बाप को यह घटना सुनायी। कम से कम इतना जानता हूँ कि मेरे माँ-बाप को यह नहीं मालूम पड़ा कि उनके बच्चे कैसे स्कूल में शिक्षा पाते हैं। वह स्कूल जिसका बड़ा नाम था उन दिनों, आज का हाल मालूम नहीं।

माँ-बाप बच्चों को भेजते हैं मिशनरी स्कूलों में क्योंकि उन्हें अच्छे स्कूल का खिताब दिया जाता है। मेरे माँ-बाप ने तो यह नहीं कहा पर अन्यों के माँ-बाप से मैंने यह अवश्य सुना है उन्हें गर्व के साथ कहते कि इन स्कूलों में डिसिप्लीन (अनुशासन) बहुत अच्छा होता है। किस प्रकार से यह अनुशासन बनाये रखा जाता है उसकी एक झलक तो देख ही ली आपने।

आज यदि मैं सोचने बैठता हूँ कि जब सारा वृत्तान्त मुझे एक चलचित्र की भाँति याद है तो फिर उस बच्चे दोष क्या था, जो हम सभी को स्पष्ट रूप से सुनाया गया था, वह मुझे क्यों याद नहीं? बस कुछ धुंधली-सी याद है कि हमारे क्लासरूम के बाहर एक तार था जो खिड़की से दिखाता था। समभवतः उसी तार से जुड़ा कोई हादसा रहा हो।

• तो क्या उसका दोष इतना बड़ा नहीं था जो मेरे याददाश्त पर कोई असर छोड़ने के काबिल था? तो क्या उस दोष की तुलना में, वह सजा जो उसे दी गई थी, वह इतनी बड़ी थी, कि उसकी याद मेरी बाल-स्मृति में गुँथ-सी गई?

• वे माँ-बाप जो आज भी इस बात पर गर्व करते हैं कि उनकी सन्तानें कॉन्वेण्ट या मिशनरी स्कूलों में अपनी शिक्षा पाते हैं, उनसे मैं अब क्या कहूँ। हिन्दू और हिन्दू धर्म की बुराई करने वाले तो सैंकड़ों मिल जाते हैं, और उसी प्रकार ईसाई धर्म और ईसाई शिक्षा को गौरवान्वित करने वाले भी हजारों मिल जाते हैं। पर, वह दिन भी आयेगा, जब उन्हें अपनी गलती का अहसास होगा।

मानोज रखित

? जुलाई 2006 "वे जो हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में इतनी गंदी-गंदी बातें कहते हैं और आप हैं कि बस चुप्पी साधे बैठे रहते हैं, पुस्तिका मिली। आपकी यह और इस तरह की राष्ट्र-विरोधी बातों को लेकर, मैं पिछले 60 वर्षों से विभिन्न समाचार-पत्रों में कड़ी और तर्कसंगत कलम घसीटता आ रहा हूँ, परिणाम ईश्वराधीन है।

मेरी तो यह दृढ़ मान्यता है कि जब तक राज-काज और शिक्षा में 'विदेशी भाषा अंग्रेजी' कि अनिवार्यता को हम समाप्त नहीं कर पायेंगे तब तक आम लोगों के लिए आजादी और लोकतंत्र का कोई महत्व नहीं है।

स्वतंत्र भारत में अपनी भाषा की उपेक्षा कर 'विदेशी भाषा अंग्रेजी' में शिक्षा देना और देश का शासन चलाना भारत की प्राचीन एवं सुविख्यात संस्कृति की जड़ें खोदना एवं पाश्चात्य संस्कृति को बेहिसाब बढ़ावा देकर देश की संस्कृति को गिरवी रखना, राष्ट्रीय अपराध है लेकिन हम सब मुर्दों की तरह पड़े हुए हैं।

पाश्चात्य संस्कृति ने हमारा रहन-सहन बदला, खान-पान बदला और अब हमारे चिन्तन-मनन एवं सोच की पवित्र धरती को बदलने मचल पड़ी है।

यदि अब भी हम सावधान और जागरूक होकर संगठित नहीं हुए तो निश्चय ही देश डूब जायेगा और आजादी के लिए बहायी गई खून की नदियाँ सूख कर मात्र बंजर भूमि ही रह जयेगी। साथ ही यह कहावत चरितार्थ होकर रहेगी कि 'अब पछताये क्या होत, जब चिड़िया चुग्ग गई खेत'।"

मोहन राज भण्डारी, पूर्व समाचार-सम्पादक--"दैनिक नवज्योति", संस्थापक संर क्षक-- कला संगम,

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

मंत्री--तत्कालीन अजमेर जिला गोवा विमोचन समिति एवं अजमेर जिला स्वतन्त्रता सेनानी संघ, भूतपूर्व संयोजक--स्वतंत्रता सेनानी प्रकोष्ठ (कांग्रेस आई), भूतपूर्व अध्यक्ष--अजमेर जिला पत्रकार संघ एवं अजमेर जिला श्रमजीवी पत्रकार संघ, प्रचार-प्रकाशन मंत्री--स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ, भूतपूर्व सम्पादक--न्याय, जनमन, मीरा, नवज्योति, डिक्टेटर, आदि साप्ताहिक, कुसुम पाक्षिक एवं सन्तवाणी, बन्धु आदि मासिक
62 महावीर कॉलोनी, पुष्कर रोड, अजमेर, फोन 24506 निवास, 21636 कार्यालय

20-11-2006 मैं आपकी भावनाओं को भली-भाँति समझ सकता हूँ, क्योंकि आपने जीवनभर इस दिशा में अथक परिश्रम करने के पश्चात कुछ ऐसा नहीं देखा जो आपको उत्साहित करे। पर इसे एक दूसरे ढंग से सोचकर देखें।

विदेशी भाषा अंग्रेजी हम पर लादी गई 1835 में जब मॅकॉले अपने साथ ईसाई मिशनरियों की बटालियन लेकर आया और 'प्राचीन पर अत्यंत उन्नत' हिन्दू शिक्षा पद्धति को सुनियोजित ढंग से समूल उखाड़ फेंका (विवरण - पुस्तक 07)। तब से यह छठी पीढ़ी है जो इस मानसिक दासता के शिकंजे में बँधी हुई है। महज भौगोलिक स्वतंत्रता इसे कैसे मुक्त कराती? उस स्वतंत्रता के समय क्या हमारे पास वह नेतृत्व था जो हमें उसके चंगुल से मुक्त कराता?

नेतृत्व के नाम पर गाँधी थे जिन्होंने सुभाष जैसे प्रखर राष्ट्रवादी को कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिलाकर अपने चहेते जवाहरलाल को अपना उत्तराधिकारी बनाया। उस जवाहरलाल को जिसकी निष्ठा भारतीय संस्कृति के प्रति शून्य थी, जो सत्ता हासिल करने के बाद यह कहने में गौरव बोध किया करता था कि वह 'शिक्षा से ईसाई, मनोवृत्ति से मुस्लिम और दुर्घटनावश हिंदू पैदायिश का है'। वह जवाहरलाल जिसके बाप मोतीलाल ने लंदन के होटल के रजिस्टर में अपना नाम, पता, धर्म लिखते समय यह भी जोड़ दिया कि 'उसका जन्म हिन्दू-कुल में हुआ उसके अपने पूर्वजन्मों के पाप स्वरूप'। उस नराधम को होटल के रजिस्टर मे केवल अपना धर्म लिखने को कहा गया था, अपनी जनमपत्री नहीं। जैसा बाप वैसा बेटा। पर गाँधी को तो चाहिए था एक जी-हुजूरी करने वाला, बिना रीढ़ का आदमी, जो कॉन्ग्रेस का अध्यक्ष बनकर गाँधी की सोच का सर्वथा समर्थन करे, बिना चूँ-चपड़ किए। गाँधी की जिद्द भी पूरी हो गई, नेहरू की सत्ता-लिप्सा भी, और देश रसातल में चला गया।

वही एक मौका था जब हम देश को एक नयी दिशा दे सकते थे। सुभाष जब किसी दुविधा में होते और कठिन निर्णय उनके समक्ष होता तो कमरा बन्द कर, धूप-बत्ती जलाकर, ध्यान में लीन हो जाते, हिन्दू ऋषियों की तरह। सुभाष जिनमें क्षत्रियोचित गुण थे अर्जुन की तरह। पर गाँधी ने तो अंग्रेजों का नमक खाया था, अंग्रेजों की सेना में नौकरी जो की थी [1] वह भला अंग्रेजों के खिलाफ हथियार कैसे उठाते। जहाँ तक जवाहरलाल का सवाल है, वह तो आत्मा से ही ईसाई-मुस्लमान-वर्णसंकर बन चुका था। उसे आधुनिक

भारत का नवनिर्माता भी कहते हैं। किस प्रकार के भारत के निर्माण की आशा करेंगे आप उनसे? गाँधी राष्ट्र के पिता कहलाते हैं। पर उन्होंने अपने उत्तराधिकारी स्वरूप एक अत्यन्त "ना" लायक व्यक्ति को चुनकर इस राष्ट्र पर थोप दिया। इसप्रकार वह इस राष्ट्र को अपने धरोहर स्वरूप एक उपहार नहीं बल्कि एक अभिशाप दे गये।

[1] अधिकंशतः भारतीय नहीं जानते कि गाँधी दक्षिण अफ़्रीका की ब्रिटिश आर्मी में नॉन-कमीशण्ड ऑफ़ीसर हुआ करते थे - ISBN 81-85990-52-2

अब उन छः पीढ़ियों की ओर लौट चलें जिनका जिक्र हमने आरम्भ में किया था। जब कोयले के इंजन वाली रेलगाड़ी चलना शुरु करती है तो पहले छुक-छुक करके धीरे-धीरे चलती है। फिर धीरे-धीरे रफ़्तार पकड़ती है। समय के साथ रफ़्तार बढ़ती जाती है। जैसे-2 वक्त गुजरता है और रास्ते में कोई रुकावट नहीं आती है (स्टेशन या चेन-पुलिंग), वैसे-2 रफ़्तार तेज होती जाती है। जब रफ़्तार शिखर पर पहुँच जाती है तो यकायक सामने यदि कोई अड़चन आ जाये तो उसे भी रौंदती हुई गाड़ी आगे बढ़ती जाती है। आगे यदि कोई स्टेशन आने वाला होता है तो काफ़ी पहले से ब्रेक लगानी पड़ती है। यह ब्रेक लगाना भी एक कला है। ब्रेक लगाने का समय, और ब्रेक पर दबाव की मात्रा, पर यह बात निर्भर करती है, कि गाड़ी प्लैटफ़ॉर्म पर रुकेगी, या फिर प्लैटफ़ॉर्म के पहले ही रुक जायेगी, या फिर प्लैटफ़ॉर्म छोड़ कर आगे निकल जायेगी। अब ऐसी स्थिति में यदि ड्राइवर निपुण न हो, या फिर अपाहिज बन गया हो तो उस रेलगाड़ी का क्या हश्र होगा, इसका अंदाजा आप स्वयं लगा सकते हैं।

• अब इसी उदाहरण को लेकर उन छः पीढ़ियों के बारे में सोचें। पहली पीढ़ी के दौरान हिन्दुओं के ईसाई-करण की गति क्या रही होगी, और जैसे-2 समय गुजरता गया होगा और कोई रुकावट सामने न आयी होगी, तो उस ईसाई-करण की रफ़्तार कितनी तेज़ हो चुकी होगी, जब आप छठी पीढ़ी तक पहुँचे होंगे। आज अपने चारों तरफ नजर घुमा कर देख लीजिए, आपको स्वयं इसका भान हो जायेगा।

• सम्भव है कि आपके मन में यह प्रश्न उठे कि आप तो पाश्चात्य संस्कृति की बात कर रहे थे और मैं ईसाई-करण की बात कर रहा हूँ। सोच कर देखें, ये पाश्चात्य राष्ट्र-समूह क्या ईसाई राष्ट्र नहीं हैं? भारत में तो 80 प्रतिशत जनसंख्या हिन्दू है, जिनमें से आप यदि कॉम्यूनिस्टों-मार्क्सिसिस्टों-नास्तिकों को निकाल दें, तो सम्भवतः कोई 50-60% ही बचें, जिन्हें आप हिन्दू कह सकें। ये जो मार्क्सिसिस्ट हैं न, उन्हें आप निरपेक्षतावादी या फिर छद्म-निरपेक्षतावादी कहते हैं, और उन्हें हिन्दुओं में ही गिनते हैं [2] क्योंकि उनके नाम सुनने में आपको हिन्दू-जैसे लगते हैं। यहीं आप धोखा खा जाते हैं। जो ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास तक नहीं करता वह हिन्दू कैसे हो सकता है, चाहे उसका नाम कैसा भी हो।

[2] दरअसल यह बात मुझे श्री रामसेवक शुक्ल या आचार्य हर्षकवि के पत्र के उत्तर में कहनी चाहिए थी,

पर ये भाव आपको पत्र का उत्तर लिखते हुए उपजे, सो यहाँ लिख दिया।

• यह आवश्यक है कि सर्वदा सही नाम का प्रयोग किया जाये। हर नाम के साथ हमारे मन में एक छवि जुड़ी होती है। गलत नाम का प्रयोग करेंगे तो हमारे मानस-पटल पर गलत छवि ही उभरेगी जो आपकी समझ को गलत दिशा देगा। नाम का बड़ा महत्व होता है। हम हिन्दुओं से बेहतर भला इसे कौन समझ सकता है? रत्नाकर दस्यु जब तक मरा-मरा जपता रहा तब तक वह रत्नाकर ही रहा। राम-राम जप कर वह महर्षि वाल्मीकि बन गया। अतः सदा सही नाम एवं सही उच्चारण का प्रयोग करें।

वापस चलें संस्कृति और जनसंख्या की ओर। जहाँ भारत की 'वास्तविक' हिन्दू जनसंख्या 80% से बहुत कम है, वहीं अमरीकी जनसंख्या का 84% ईसाई है। अमरीकी सेना में भर्ती होने वाले 98% ईसाई हैं। अतः पाश्चात्य शब्द का प्रयोग न करें। वह पाश्चात्य संस्कृति नहीं बल्कि ईसाई संस्कृति है। अब यहाँ मैं उन किताबी-पंडितों से बहस में नहीं पड़ूँगा जो यह कहकर अपनी विद्वता का परिचय देना चाहेंगे कि ईसाई एक धर्म है, संस्कृति नहीं। उन्हें बाल की खाल निकाल कर अपना समय गुजारने दें, हम आगे बढ़ें।

• हमारे चारों ओर जो कुछ तेजी से बदल रहा है वह पाश्चात्य-करण नहीं बल्कि पाश्चात्यकरण की आड़ में छुपा ईसाईकरण है। पाश्चात्यकरण शब्द हमें उतना नहीं सावधान करता जिताना ईसाईकरण शब्द हमें झकझोरता है। आप की सन्तानें अपना हिन्दुत्व खोती जा रही हैं और थोड़ा-2 करके ईसाई बनती जा रही है।

• कोयले के उस इन्जन ने [3] अब इतनी रफ़्तार पकड़ ली है कि उसे अपने सामने किसी पड़ाव (स्टेशन) के होने का भान ही नहीं रहा। वह कालका-मेल [4] की तरह भागती जा रही है। उस पर कौन ब्रेक लगाये? इंजन में ड्राइवर तो है नहीं। है भी तो नशे में धुत पड़ा है। उस नशे ने उसके दिमाग को अपने काबू में कर रखा है। वह नशा धन का नहीं, वह नशा सत्ता का नहीं, वह नशा है उस ईसाई शिक्षा का जिसने आज उसे ऐसा बनाया। वह ऐसा नहीं था जब उसके पास थी अपनी हिन्दू शिक्षा पद्धति। विश्वास नहीं होता? पढ़िये पुस्तक क्रमांक 07

[3] ईसाई-करण की प्रक्रिया ने

[4] जब मैं बच्चा था तो उन दिनों कालका-मेल तीव्र गति का पर्याय हुआ करता था। आजकल तो उससे भी तेज अनेक गाड़ियाँ चल रही हैं।

• अब वह गाड़ी तभी रुकेगी जब उसके इंजन में होगा एक निपुण ड्राइवर, उसके हाथ में होगी लगाम, उसके सोच में होगी स्पष्टता, उसके जीवन-मूल्यों में होगी 'अनुचित' से 'समझौता' न करने की दृढ़ता।

• सत्य कभी 'डूबता' नहीं। वह अमर होता है। सत्य होता है धर्म के पक्ष में। धर्म की व्याख्या जरूर अलग-2 होती है अलग-2 लोगों की सोच में। पर इससे धर्म का अर्थ

नहीं बदल जाता क्योंकि 'धर्म का अस्तित्व' उन विवादों पर टिका नहीं होता। धर्म किसी का मोहताज नहीं होता। सत्य का साथ यदि रहा है, और रहेगा, किसी धर्म के साथ, तो वह है सनातन धर्म। सनातन वह है जो सदा से रहा है और सदा ही रहेगा। नये-नये धर्म उपजते रहे हैं, उपजते रहेंगे, और अपना-2 समय पूरा कर, अपनी-2 प्राकृतिक मौत मरेंगे।

• धर्म आपकी रक्षा तभी करेगा, जब आप धर्म की रक्षा करेंगे। आप धर्म के प्रति उदासीन रहेंगे, तो धर्म भी आपके प्रति उदासीन रहेगा। अतः धर्म के प्रति अपना कर्तव्य करें, धर्म अपना करेगा।

मानोज रखित

25-6-2006 "आपकी पुस्तिका 'वे जो, हिन्दू देवी-देवताओं...' पढ़ी। पढ़कर एकबार तो उसके लिए अपने को ही उत्तरदायी माना। हम मुद्रणालयों के माध्यम से और अपने नामों के माध्यम से जो अनजाने में अपने देवी-देवताओं का अनादर कर रहे हैं उसे समझें और उस पर विराम लगायें तो बहुत सम्भव है कि हमें शुभ परिणाम देखने को मिलें। इस पर साथियों में चर्चा की गई परन्तु उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। एक छोटे-से उदाहरण से स्थिति को यों समझाने का प्रयास किया गया - आपके पिताश्री का नाम भरत है। अब आप अपने पुत्र का नाम भरत रखकर अपनी भावनाओं को तौलिये। रामायण-महाभारत काल में लक्ष्मीनारायण, किशोरीलाल, विश्वनाथ, इन्दिरा, पार्वती आदि नाम नहीं हुए। अशोक-काल तक भी ऐसा नहीं था।"

श्री एम एस सिंगला, पूर्व वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, पश्चिम रेलवे
'राम कृपा' बैंक कॉलोनी, नाका मदार, अजमेर 305 007, फोन 0145-2670225, 2671930

21-11-2006 यह बात सोचने लायक है कि प्राचीन हिन्दू समाज में बच्चों का नाम देवी-देवताओं के नाम पर नहीं रखा जाता था। इस प्रथा में ऐसी कोई बात अवश्य ही छुपी होगी जिसका ज्ञान हमें अब नहीं रहा।

• जिसका ज्ञान हमें आज न रहा उसे हम मानने से इंकार करते हैं। कोई उस बात के महत्व को समझाना चाहे तो उसे हम तर्क संगत न मान कर उसकी अवज्ञा कर देते हैं।

• यह प्रवृत्ति हम में तब से उपजी जब से हमने ईसाई शिक्षा पद्धति का स्वाद चखा। हमने कभी यह सोचकर देखने की चेष्टा न की, कि जिस किसी भी विषय पर ईसाई अज्ञानी थे, हर उस विषय को उन्होंने अज्ञान करार दिया।

• हमने यह भी कभी सोचकर देखना आवश्यक न समझा कि वह सब कुछ हमें तर्कसंगत नहीं लगता है जो हमारी सीमित तर्क-शक्ति की परिधि के बाहर हो।

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

• हमने यह भी न सोचा कि तर्क की दौड़ केवल वहीं तक होती है जहाँ तक हमारे ज्ञान की पहुँच है।

• ये सारी प्रवृत्तियाँ हममें तबसे आयी जबसे हमने ईसाई शिक्षा का दामन थामा।

• पर क्या हम स्वयं इसके लिए दोषी थे? क्या हमने स्वेच्छा से ईसाई शिक्षा को गले लगाया था? या फिर वह हम पर जबरन थोप दी गई थी? क्या हमारे पास कोई विकल्प बचा था जब हमारी प्राचीन एवं उन्नत शिक्षा प्रणाली को सुनियोजित ढंग से नष्ट कर दिया गया?

• क्या हमारे पास केवल दो ही रास्ते नहीं बचे थे? एक - जो हमने अपनाया, ईसाई शिक्षा को अपनाकर। दूसरा - जो मुसलमानों ने अपनाया, ईसाई शिक्षा को अस्वीकार कर, मदरसों के सहारे चलकर।

• समय से बड़ा निर्णायक कोई नहीं होता। आज हम देखते हैं कि हिन्दू कहाँ हैं और मुसलमान कहाँ हैं।

• हमें सबसे पहले यह बात समझनी होगी कि अपने-आपको दोषी मानकर हम कभी कोई जंग नहीं जीत सकते। चाहे वह जंग अपने खोये हुए गौरवशाली अतीत को लौटा लाने की जंग ही क्यों न हो।

• हीन मनोबल के आधार पर कोई भी जंग, कभी भी, जीती नहीं जा सकती है। आम हिन्दू को इतनी हीन-भावना से ग्रसित मैंने नहीं देखा जितना अपने बुद्धिजीवी वर्ग को।

• सम्भवतः यह हीन-भावना कि हम स्वयं अपने पतन के लिए दोषी हैं, हमारे बुद्धिजीवी वर्ग की पहचान बन चुकी है। इसका पहला कारण है उनकी शिक्षा। वह शिक्षा जिसका उद्देश्य ही था हिन्दू को हीन-भावना से ग्रसित करना।

• इसका एक कारण और भी है। नेतृत्व जैसी योग्यता का अभाव। उस अभाव के पीछे भी छुपा है उनकी वही शिक्षा। जिस शिक्षा का उद्देश्य नेतृत्व की योग्यता को कुचल कर उन्हें अपना (ईसाई-अंग्रेजों का) अनुचर बनाना।

• जिनमें नेतृत्व की योग्यता होती है, वे यह जानते हैं कि अपनी सेना को दोषी मानना, अपने सैन्य-बल को क्षीण करना होता है। और वे यह भी जानते हैं कि क्षीण सैन्य-बल के सहारे कोई जंग जीती नहीं जा सकती।

मानोज रखित

5-5-2006 "प्रिय श्री, सादर नमस्कार! आपकी पुस्तक "वे जो, हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में.... ।" पुस्तक पढ़ी। सत्य चिन्तन एवं भारतीय संस्कृति तथा परम्परा

के रक्षार्थ आपका प्रयास प्रशंसनीय है। अमरीकी इशारे पर मकबूल फ़िदा हुसैन भारतीय मान्यता का चित्रों के माध्यम से घिनौना सौदा करता है। विदेशी साजिश के आड़ में अंधश्रद्धा निर्मूलन समितियाँ तथा बुद्धिवादी संगठन देश-प्रदेश में हमारी पूज्यनीय आस्था के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। हमारा ट्रस्ट संघर्षरत है। पत्र दें - आपका अनजाना चिश्ती

खानकाह सूफी दीदार शाह चिश्ती, हाजी मलंगवाडी, पोस्ट कल्याण, जिला ठाणे 421 301 (महाराष्ट्र), मोबाइल 09869720880 फोन 0251-2662496

21-11-2006 पत्र पढ़कर मुझे आनन्द भी हुआ एवं मन में कु छ प्रश्न भी उभरे। सोचा बाद में उत्तर दूँगा पर वह 'बाद' कभी नहीं आया। आज इन पंक्तियों को लिखते समय मन में यह भावना उपजी कि कभी उनसे प्रत्यक्ष मिलूंगा। साथ यह भी खयाल आया कि मिलूंगा अवश्य - अपने समय पर। और वह समय अभी आया नहीं।

मानोज रखित

पाठकों के नाम संदेश

सतत परिवर्तन संसार का नियम है। वही नियम लागू होता है मेरी प्रस्तुतियों में भी। इस सतत परिवर्तन के कारण, विषय-वस्तु में बेहतरी के साथ-2 एक समस्या भी उपजती है। कहीं न कहीं गलतियाँ छूट जाती हैं। स्वाभाविक है कि आपकी नजरों से वे बच न पायेंगी। आप अगर मेरा ध्यानाकर्षण करेंगे तो अगले संस्करण में सुधार हो जायेगा।

- यह आवश्यक है कि जब भी आप पत्र लिखें तो इस बात का जिक्र अवश्य करें कि किस पुस्तक के संदर्भ में आप अपनी बात कहना चाहते हैं। तभी संभव होगा मेरे लिए, उनकी सोच को उस पुस्तक के अगले संस्करण में शामिल करना, एवं आवश्यकता पड़ने पर उत्तर भी देना। कुछ पाठक पत्र लिखते हैं, और काफी महत्वपूर्ण बातें लिखते हैं, पर इस बात का जिक्र नहीं करते कि किस पुस्तक के संदर्भ में पत्र लिख रहे हैं। अतः उन पत्रों को मैं किसी भी पुस्तक विशेष में शामिल नहीं कर पाता हूँ।

- यदि आप चाहते हैं कि आपका नाम-पता दोनों, या फिर दोनों में से कोई एक, न प्रकाशित किया जाये तो आपको उसी पत्र में यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिये।

मैं आपके पत्रों का व्यक्तिगत रूप से जवाब नहीं दे पाऊँगा। यदि ऐसा करूँ तो लेखन एवं प्रकाशन का कार्य रुक जायेगा। आशा है आप मेरी बात को समझेंगे, और मुझे अपने सीमित समय एवं साधनों का सदुपयोग करने का अवसर देंगे। इसका मतलब यह नहीं कि आप पत्र लिखना बंद कर दें। केवल व्यक्तिगत उत्तर की आशा न करें, यही मेरा अनुरोध है।

मानोज रखित, 22-11-2006

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

वे जो कहते हैं, कि इस दुनिया में अच्छी और बुरी दोनों चीजें है - अच्छी को ग्रहण करो, बुरे की ओर से मुँह फेर लो

आप में से कुछ बड़े दरिया-दिल होतें हैं। उनका कहना और सोचना है कि जो बुरा करते और कहते हैं, उन्हें करने दो, उन्हें उनके कर्मों का फल स्वयं मिलेगा, हम क्यों उसकी चिंता करें? हमें अपनी दृष्टि और सोच को अच्छी बातों कि ओर लगाना चाहिए।

समाज एक समष्टि है, जहाँ अनेक प्रकार के लोग रहते हैं।

• जो बुरी बातें बेधड़क कहते हैं, और जो उसे अनदेखा करते हैं, दोनों दोषी हैं। कारण, बुरी बातें समाज के अन्य व्यक्तियों को भी प्रभावित करती है। विशेषकर उन्हें जिनकी सोच अभी परिपक्व नहीं हुई है।

• उदाहरण के लिए आपके बच्चे। उनकी सोच गीली मिट्टी की तरह होती हाट जिसे कुम्हार अपनी इच्छानुसार रूप दे सकता है। यदि आपके देवी-देवताओं के बारे में ऐसी बातें फैलती रहेंगी, और आप उन्हें अनदेखा करते रहेंगे, तो निश्चित जानिये, आपके बच्चे उन गन्दी सोचों से अछूते नहीं रहेंगे।

किस भ्रम में जीते हैं, कि आपके बच्चे, आपके-ही संस्कार, पाते हैं?

आप इस भ्रम में न रहिये कि आप अच्छे संस्कार देते हैं अपने बच्चों को, इसलिए आपके बच्चे ऐसी गंदी सोच से प्रभावित नहीं होंगे। जरा अपने बच्चों की ओर ध्यान से देखिए।

कितना समय आपके बच्चे आपके साथ बिताते हैं? सुबह उठकर भागा-भागी में स्कूल जाते हैं, जहाँ शिक्षक उन्हें हमारे देवी-देवताओं के बारे में कुछ अच्छी बातें नहीं बताते क्योंकि आप अपने बच्चों को 'इंग्लिश-मीडियम' 'कॉनवेंट-मिशनरी-ईसाई' स्कूलों में भेजते हैं उन्हें 'स्मार्ट' बनाने के लिए।

स्कूल से लौटकर जल्दी-जल्दी खाना खाकर वे भागते हैं खेल के मैदान की ओर। वहाँ से लौटकर बैठ जाते हैं स्कूल का 'होमवर्क' पूरा करने के लिए। फिर समय मिला तो टी वी देखने बैठ जाते हैं।

इन सब व्यस्तताओं के बाद यदि उन्हें बात करने का समय मिलता भी है तो वह फोन पर अपने दोस्तों के साथ बात करने में बीत जाता है। और यदि आपके बच्चों में 'रोमांस' का बुखार चढ़ा हो तो फिर उन्हें खयालों की दुनिया में जीने की आदत पड़ जाती है, तब उनके पास और किसी से बात करने का कोई समय नहीं होता।

इन सब के दौरान यदि थोड़ा-सा समय उन्हें आपके साथ बात करने को मिल भी जाता है तो वे आपसे 'दिल खोलकर' कितनी बातें करते हैं? क्या वे मन ही मन ऐसा नहीं

सोचते कि आपके और उनके खयाल मिलते नहीं? उनकी नजर में आपका 'नजरिया' पुराना है, सम-सामयिक नहीं।

• सो इन सब के बीच आपसी वार्तालाप का जो थोड़ा-सा समय मिलता है तो उस दौरान आप उनकी सोच को कितना प्रभावित कर पाते हैं? और यदि नहीं कर पाते हैं तो फिर किन संस्कारों के भरोसे आप इतने आश्वस्त होकर बैठे रहते हैं?

• आज के बच्चे जो संस्कार पाते हैं वे अपने स्कूल से पाते हैं, अपने दोस्तों से पाते हैं, टी वी मे दिखायी जाने वाली घटिया हास्य-नाच-हिंसा-नग्नता-विवाह के पूर्व यौन-संबधों की सम-सामयिकता से ओत-प्रोत प्रोग्रामों से पाते हैं।

वे कलाकार जो अपनी कला के माध्यम से सारे विश्व को बताते हैं कि उनकी नजरों में हमारे भगवान शिव एक कुत्ते जैसे हैं

इन ईसाई धर्मगुरुओं की सीख को आगे बढ़ाते हैं वे कलाकार जो अपनी कला के माध्यम से विश्व को बताते हैं कि हमारे शिव-शंकर की अहमियत उनकी नज़रों में क्या है। उदाहरण के लिए देखिए http://www.timnortonart.com/pages/painting%20pages/Saints%201.html यह चित्रपट (कैनवास) के ऊपर एक तैलचित्र (ऑयल पेंटिंग) है जिसमें कलाकार टिम नॉर्टन ने हमारे भगवान शिव को कुत्ते के रूप मे दिखाया है। इस तैलचित्र का आकार 30" x 24" है और इसका मूल्य एक हज़ार डॉलर रखा गया है (चालीस-पैंतालीस हजार रुपये)।

19-11-2006 2:05 AM अभी मैं टिम नॉर्टन के वेब साइट पर गया क्योंकि अगले दो-तीन दिनों में इस तृतीय संस्करण को प्रेस में भेजने की तैयारी में लगा हुआ हूँ। वह फोटो मुझे वहाँ नहीं दिखी। आज से नौ महीने पहले द्वितीय संस्करण को लिखते समय मैंने वह फोटो वहाँ देखी थी। मुझे आश्चर्य हुआ और मैंने अभी-अभी टिम नॉर्टन को एक ईमेल भेजा। उसके बाद मैं 'हिन्दू जागृति समिति' के वेब-साइट पर गया (www.hindujagruti.org). उन्होंने एक 'आपत्ति अभियान' चलाया था जिसमें मैंने भी हस्ताक्षर किये थे। वहाँ जाकर पता चला कि टिम नॉर्टन ने क्षमा-प्रार्थना के साथ उस तैल-चित्र को अपने वेब-साइट से हटा लिया है।

• इससे हम यह तो जान पाते हैं कि जब तक हम चेष्टा नहीं करेंगे तब तक हम यह नहीं जान पायेंगे कि इसका फल मिलेगा या नहीं। हाँ, यह सत्य है कि हर चेष्टा का फल तुरंत नहीं मिलता। पर इस बात से हतोत्साहित होकर यदि हम चेष्टा करना छोड़ दें तो हम यह कभी नहीं जान पायेंगे कि हमारी कितनी चेष्टायें केवल इस लिए फलीभूत न हो सकी क्योंकि हमने कभी चेष्टा ही न की।

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

इटली की कम्पनी मिनेल्ली ने जूतों पर भगवान श्री राम के चित्र छापे

इटली की कम्पनी मिनेल्ली ने जूतों पर भगवान श्री राम के चित्र छापे। अपने विज्ञापनों में इस बात विशेष रूप से उल्लेख किया ताकि अधिकाधिक लोग उन्हें खरीदें।

- जिन्होंने इन जूतों को बाजार में बेचने लिए बनाया और जिन्होंने उन्हें चाव से खरीदा, उन सभी की नजरों में हमारे भगवान श्री राम की जगह उनकी जूतियों में थी।
- हिन्दुओं ने इस बात पर आपत्ति की। अन्त में कम्पनी को ये जूतियाँ बाजार से वापस लेने पड़े।

पर जो खरीद चुके थे, उनसे वापस नहीं लिया जा सकता। उनके लिए अब यह अपने दोस्तों के साथ चर्चा एवं नुमाईश की वस्तु बन गई।

विवरण - www.hindujagruti.org 19-11-2006

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

न्यू यॉर्क अमरीका की गोल्ड मेडल होज़ियरी (Gold Medal Hosiery) नामक कम्पनी ने मोजों पर ॐ छाप कर बेचना शुरू किया। इन मोजों की डिज़ाइन तैयार की गई थी न्यू यॉर्क की लिन्डा मैड्डॉक्स (Linda Maddocks) के द्वारा एवं मोजे बनवाये गए थे दक्षिण कोरिया में।

• यदि साधारण ईसाई दूध के धुले भलेमानुस थे, तो उन्हें इन मोजों का बहिष्कार करना चाहिये था, जो उन्होंने नहीं किया, बल्कि उन्हे बड़े चाव के साथ खरीदा और पहना, ताकि वे महसूस कर सकें कि हमारे ॐ का स्थान उनके पैरों तले है।

• यह सोच, यह भावना उनमें कैसे उपजी यह जानने के लिये आपको मेरी अन्य पुस्तकें पढ़नी होंगी, जो आपको इस बात से अवगत करायेंगी ईसाई धर्म का धर्मग्रंथ बाइबिल उन्हें हिन्दू धर्म जैसे मूर्तिपूजक धर्मों को किस दृष्टि से देखना सिखाता है।

4-7-2003 को अमरीका की IndiaCause नामक हिंदू संस्था ने इस पर आपत्ति करते हुए कम्पनी को लिखा। 11-7-2003 को कम्पनी केअध्यक्ष पॉल रोटस्टीन (Paul Rotstein) ने खेद प्रगट करते हुए IndiaCause को ईमेल भेजा इस आश्वासन के साथ कि वे इस गलती को दुहरायेंगे नहीं, पर उन्होंने न ही इस बात का आश्वासन दिया कि बाजार में बिक रहे मोजों को वापस लेंगे या नहीं, और जो माल उनके गोदामों में है उन्हें बाजार में बिकने लिए छोड़ेंगे या नहीं।

विवरण - www.indiacause.com

वैसे जो हानि होनी थी वह तो हो चुकी। लाखों ईसाई जनसाधारणों के घर-घर पहुँच गयीं ये मोजे, और उन्हें मौका मिल गया इस बात का कि वे हमारे ॐ को अपने पाँवों मे अपने जूतों के साथ स्थान दें।

• जहाँ तक कंपनी के अध्यक्ष द्वारा खेद प्रगट करने का प्रश्न है, उसे दुनिया न जान पायेगी, और अन्य कम्पनियाँ इसे अपने-अपने ढंग से दोहरायेंगी, और अगर किसी ने आपत्ती की तो खेद प्रकट कर छुट्टी पा लेंगे।

• कोई आपत्ति करेगा तभी, जब कि उसे मालूम पड़ेगा कि दुनिया के किस कोने में क्या हो रहा है। इस प्रकार दुनिया भर में जगह-2 समय-2 पर ऐसी वारदातें होती रहेंगी ईसाइयों के संसार में इस तरह की हरकतें फैलती रहेंगी, और हम अपने जान-पहचान वालों में डींग हाँकते फिरेंगे एवं पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहेंगे कि सारी दुनिया में हमारे हिंदू धर्म की क्या साख है, और अपने ही देश में हम हिंदू अपने धर्म को उस इज्जत की नजर से नहीं देखते।

• कभी तो ऐसे लोग चेतेंगे, अपने दिल को बहलाना बंद करेंगे, और अपने हिंदू भाइयों को इस काल्पनिक दुनिया की ओर नहीं धकेलेंगे। अज्ञान अपने-आपमें उतना बुरा

नहीं है, जितना कि ज्ञानी होने का दम भरते हुए अपने अज्ञान को दूसरों में फैलाना।

ग्रीस में माँ दुर्गा को शराब बेचते हुए दिखाया जा रहा है

"एथेन्स (ग्रीस) के बालोन ओरिएन्टल डिस्को बार के अंदर एवं बाहर लगे पोस्टरों पर दुर्गा अपने दाहिने हाथ में सदर्न कम्फ़र्ट ह्विस्की (शराब) की बोतल लिए।"

विवरण - Hindustan Times, 14-2-2005, p 1

अब विदेशों में नाचने के स्थलों पर शराब बेचने के लिए हमारी पूजनीय माँ दुर्गा की छवि का प्रयोग किया जा रहा है।

वहाँ के रहने वाले भारतीय पिछले तीन महीनों से उन पोस्टरों के हटाये जाने की माँग कर रहे हैं पर इसे सदर्न कम्फ़र्ट ह्विस्की बनाने वाली शराब की अमरीकी कम्पनी पूरी तरह से नज़रअंदाज़ करती रही है।

ग्रीस का ईसाई धर्म के साथ बड़ा पुराना रिश्ता है। बाइबिल ग्रीक भाषा में लिखी गई थी। अमरीकी मूर्तिकला (Sculpture) पर ग्रीक मूर्तिकला का प्रभाव बहुत गहरा है। आधुनिक (ईसाई) औषधि विज्ञान का जन्मस्थान भी ग्रीस ही माना जाता है।

वहाँ हिन्दुओं की तादात कम होगी। उनकी आवाज़ उतनी बुलन्द न होगी। सो वहाँ व्यवसाय करने वाली अमरीकी कम्पनी ने इस बात का फ़ायदा उठाया। हिन्दुओं की माँग को नजरअंदाज कर दिया।

• ऐसी स्थिति में राजनयिक दबाव काम आ जाते हैं। यदि भारत एक शक्तिशाली हिन्दू राष्ट्र होता तो उसकी एक हुंकार पर पिद्दी से देश ग्रीस को सोचना पड़ता कि उस अमरीकी शराबी कम्पनी के साथ क्या सलूक किया जाये। राजनयिक दबाव के जरिए ऐसी न सुलझने वाली अनेक छोटी-मोटी समस्याओं का निदान ढूंढा जा सकता है।

पर उसके लिए राजनयिक मनोबल की आवश्यकता होती है। ईसाई सोनिया - मुसलमान कलाम - मार्क्सिसिस्ट मनमोहन के राज में यह सम्भव नहीं। न ही यह संभव होता नेहरुवादी-हिन्दू हाजपाई द्वारा क्योंकि कौआ अगर चले हंस की चाल तो वह हंस नहीं बन जाता। उसी प्रकर बेपेंदी के लोटे लालकृष्ण से भी यह न हो पाता, क्योंकि जाने कब वह किधर लुढ़क जाता।

• ऐसी स्थिति में, हिन्दू अगर अपने धर्म की रक्षा चाहता है तो उसे विकल्प तो ढूंढ़ना ही पड़ेगा।

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

टोरॉन्टो स्टार माँ दुर्गा की नंगी तस्वीर छापता है

टोरॉन्टो स्टार के पास यह पूर्ण वस्तावृत सुसज्जित अतीव सुंदर मूर्ति थी पर इसे उन्होंने छापने योग्य न समझा

Mega City Toronto कैनेडा मे स्थित है। भौगोलिक आयाम के अनुसार सन 2000 में यह विश्व का सबसे बड़ा शहर हुआ करता था। टोरॉन्टो स्टार नामक दैनिक वहाँ का सबसे अधिक जनप्रिय समाचार पत्र है। बात 2003 की है। जब उन्हें दुर्गा पूजा के अवसर पर माँ दुर्गा की फोटो अपने दैनिक में छापने की इच्छा हुई तो उनके पास चार चित्र थे जिनमें से तीन मूर्तियाँ जो बनकर तैयार थीं और एक मूर्ति जो अभी पूरी नहीं हुई थी।

टोरॉन्टो स्टार के पास ये तीन पूर्ण वस्तावृत मूर्तियाँ थीं जिनमें से एक वह चुन सकते थे यदि उनकी भावना माँ की फोटो को दर्शाने की होती। वे उनमें से एक को चुन सकते थे यदि उनकी दृष्टि में हिन्दुओं की एवं हिंदुओं के भावनाओं की कोई कद्र होती।

पर उन्होंने जानबूझकर उस असमाप्त मूर्ति को छापा। हिन्दू धर्म के प्रति ईसाइयों में घृणा इतनी प्रखर है कि उन्होंने माँ को पूर्ण नग्नावस्था में दिखाना अधिक आनन्ददायी पाया।

• बातों से आप उनके असली चेहरे को न देख पायेंगे। वे आपको बड़े-ही मिलनसार, भद्र, अन्य धर्मों का आदर करने वाले, सुनने-में अच्छी-लगने-वाली-बातें कहने वाले लगेंगे। उनके आचरणों का विश्लेषण कर पायें तो दूसरा-ही चेहरा नजर आयेगा।

टोरॉन्टो स्टार के पास यह दूसरी वस्तावृत सुसज्जित मूर्ति भी थी
पर इसे भी उन्होंने छापने योग्य न माना

टोरॉन्टो स्टार के पास यह तीसरी वस्तावृत मूर्ति भी थी
पर इसे भी उन्होंने छापने योग्य न जाना

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

यह मूर्ति जो अभी अपूर्ण थी उसे ही उन्होंने छापा
पूरे पृष्ठ के एक-तिहाई हिस्से पर फैला कर ताकि हरेक की नजर पड़े
उस फोटो में ये काली पट्टियाँ नहीं थीं

source: http://www.hindujagruti.org/ 22-11-2006

• यह प्रथा रही है कि मूर्तिकार पहले मूर्ति को पूरा करता है फिर उसे वास्तविक वस्त्रों से सुसज्जित करता है। वस्त्र मूर्ति के अंग नहीं होते अर्थात मिट्टी और रंग के बने वस्त्र माँ को नहीं पहनाये जाते, बल्कि असली वस्त्र पहनाये जाते हैं जो कपड़ों के बने हुए होते हैं। मूर्तिकार की चेष्टा होती है कि वह उसे मूर्ति से बढ़कर जीवन्त माँ का स्वरूप दे सके। जब पूजा का समय आता है तो माँ की उस मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है।

• जब तक मूर्तिकार माँ की मूर्ति को वस्त्रावृत नहीं कर देता, तब तक हम हिन्दू उसे नहीं देखते। जहाँ तक मूर्तिकार का प्रश्न है, वह गीली मिट्टि से गढता है, पल-पल उसे देखता अपने माँ के रूप में, इस भावना से सजाता है। उसकी आँखें एक स्त्री के शरीर को नहीं देखती। वह माँ को अपने भाव में गढ़ता है, उसकी सोच में वह पवित्रता होती है जो उस मूर्ति से झलकती है, जिसे हम देखते हैं।

• मुझे याद है अपना बचपन। हमारे मंदिरों में एक छोटा-सा बोर्ड लगा हुआ करता था। देवी-देवताओं के मूर्तियों की फोटो खींचने की मनाही हुआ करती थी। अपने-

आपको अधिक अकलमन्द मानने वाले व्यक्ति, इस मनाही पर एतराज किया करते थे। कारण, उन्हें यह मनाही तर्क संगत नहीं लगा करती थी।

• फोटो का कैसा दुरुपयोग हो सकता है इसका उन्हें भान न था। और जिस बात का उन्हें भान न होता, उसे वे तर्कसंगत मानने से इंकार करते थे। अन्य शब्दों में, वे मानते कि उनका ज्ञान ही, वह सीमा है, जो निर्धारित करता है, कि क्या तर्कसंगत है और उचित है। इन मन्दअकल वालों को, अपनी ज्ञान की सीमा का ही, ज्ञान न था।

यह उपहार था, टोरॉन्टो स्टार की तरफ से, दुर्गा पूजा के दिन, हिन्दुवों को। तारीख थी 4 अक्टूबर 2003। फोटो तो इतना बड़ा था कि समाचार पत्र के इतने बड़े पृष्ठ का एक-तिहाई हिस्सा उसने घेर लिया था। उस फोटो को इतनी महत्ता देकर छापने का कारण स्पष्ट था। वे जानबूझकर अ-हिन्दू पाठकों के मन में हिन्दू धर्म के बारे में गलत धारणा फैलाना चाहते थे।

10 अक्टूबर को इंडिया-कॉज़ ने ऑन-लाइन आपत्ति-अभियान आरम्भ किया। पहले चन्द घन्टों के अन्दर एक से दो हजार के बीच आपत्ति-ईमेल टोरॉन्टो स्टार के कार्यालय में पहुँचे। 11 अक्टूबर को टोरॉन्टो स्टार ने प्रकाशित किया दो पंक्तियों का खेद स्वीकारोक्ति "हमें खेद है कि हमारे द्वारा प्रकाशित देवी के चित्र ने कुछ व्यक्तियों की भावनाओं को ठेस पहुँचायी"।

आधे-मन से दिया गया यह खेद, इंडिया-कॉज़ को स्वीकार न था। आपत्ति-अभियान जारी रहा। स्थानीय भारतीयों ने घोर आपत्ति की - टोरॉन्टो स्टार के कार्यालय के सामने दो बड़े प्रदर्शन किये गये।

अन्त में 15 नवम्बर को टोरॉन्टो स्टार ने स्पष्ट रूप से क्षमा-याचना प्रकाशित की, देवी माँ की एक उपयुक्त फोटो के साथ, उसी पृष्ठ पर जहाँ पहले वह नग्न तस्वीर छापी थी।

• इस घटना से आप यह देखते हैं कि कोई भी कर्म विफल नहीं होता। हाँ, समय लगता है। चेष्टायें जारी रखनी पड़ती है। हार मान कर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से कुछ हासिल नहीं होता। और 'समय' से पहले कुछ नहीं मिलता।

• इसमें 'समय' सबसे महत्वपूर्ण घटक है। यदि समस्या विकट है, तो समय भी अधिक लगेगा। पर हमारा धैर्य बहुत जल्दी टूट जाता है।

• 'समय' को हम 'अपने जीवन-काल' की परिधि में बाँध लेना चाहते हैं। हमारी चेष्टा का फल यदि हमें, हमारे 'अपने जीवन-काल' में नहीं मिलता, या फिर मिलने की सम्भावना नहीं प्रतीत होती, तो बस हमारे धैर्य का बाँध टूट जाता है।

• हम मान बैठते हैं कि हमारी चेष्टाओं से कुछ होने वाला नहीं है। 'आजादी' कोई जादुई-चिराग नहीं है कि 'आजादी' मिलते ही सब कुछ ठीक हो जाना था।

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

अमरीकी नारी रोबिन फ़ोले की बनायी हुई माँ दुर्गा के अर्धनग्न गुड़िये बाजार में

पोर्टलैंड, अमरीका कि रॉबिन फ़ोले ने माँ दुर्गा की अधनंगी गुड़िया (dolls) बनाकार बेचना शुरू किया अपने वेबसाइट के द्वारा। हिन्दू जाग्रुति समिति ने ईमेल द्वारा अपत्ति की। अनेक आपत्तियों के पश्चात उसने वेबसाइट के मुख्य पृष्ठ से माँ की वह तस्वीर हटा दी पर इंडेक्स से नहीं हटाया।

ज आरम्भ में वह इसके लिए भी तैयार न थी। जब आपत्ति-अभियान शुरु की गई थी तो उसे हटाने के बजाय उसने धमकी दी थी कि वह यह मामला एफ़-बी-आई (FBI) को सौंप देगी। इसका जवाब दिया गया - "एफ़-बी-आई ही नहीं, तुम सारी अमरीकी फ़ौज को बुला लो" और "एफ़-बी-आई दुर्गा माई से बड़ी नहीं है"।

आपत्ति अभियान बढ़ता गया और अन्ततोगत्वा उसने मुख्य पृष्ठ से तस्वीर हटा ली और यह भी कहा कि वह स्वयं भी ये गुड़िये नहीं बेचेगी। पर चूँकि इंडेक्स सेक्शन में अभी छोटी तस्वीर बची है, हिन्दू जनजाग्रुति समिति ने अपना अभियान बंद नहीं किया है।

विवरण - http://www.hindujagruti.org 23-11-2006

नग्न माँ दुर्गा - बाघ के साथ - सम्भोगरत

source: www.hindujagruti.org 19-11-2006

नराधम मकबूल फ़िदा हुसैन का बनाया तैलचित्र

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

यह सम्भव है कि पहली नजर में अनेक व्यक्ति इस चित्र में आधुनिक कला की सांकेतिक अभिव्यक्ति को न समझ पायें। विषय की गभीरता एवं गम्भीरता को स्पष्ट करने के लिए निम्नोक्त व्याख्या प्रस्तुत करनी पड़ रही है, जो न तो आपको अच्छी लगेगी, न मुझे।

मैंने खण्ड-1 में ही इस बात को स्पष्ट कर दिया था कि इन नराधमों की गंदी सोच को, शब्दों के सुन्दर परिधान में समेट कर, आपके सामने प्रस्तुत नहीं करूँगा। कलाकार की सोच जितनी गंदी है, उसे उतनी ही स्पष्टता के साथ आपके सामने रखना चाहूँगा।

एम एफ़ हुसैन की परिकल्पना में एक नग्न स्त्री सम्भोगरत है एक नर व्याघ्र के साथ। स्त्री के नग्न नितम्बों की स्थिति क्या दर्शायी है इस तथाकथित कलाकार ने? स्त्री के उघड़े स्तनों की गति-विधि को किस प्रकार से दर्शाया है उस नराधम ने? स्त्री के शरीर के ऊपरी हिस्से की गति-विधि को कैसे दर्शाया है इस व्यक्ति ने? तीरों की दिशा क्या संकेत करती है? तीरों के बीच स्त्री के सर के खड़े-बाल सम्भोग के दौरान किस अवस्था की ओर संकेत करते हैं? तीरों की दिशा से दर्शाया गया, स्त्री का उठा हुआ सर, फटी-आँखें ऊपर की ओर, सम्भोग में रत व्यक्ति के अनुभव की किस स्थिति की ओर इशारा करते हैं? स्त्री ने अपने हाथ में क्या पकड़ कर रखा है और तीरों की दो दिशायें क्या बताती है? बाघ के सर की गति-विधि और फटी-फटी आँखे सम्भोग के दौरान उसकी किस अभिव्यक्ति का द्योतक है? सम्भोगरत दो प्राणियों की अनुभूतियाँ, क्रिया के आरम्भ से लेकर चरमोत्कर्ष की स्थिति तक की यात्रा को, एक कलकार कैसे दर्शाता है?

इस क्रिया में मानव-स्त्री का साथी कोई कोई मानव-पुरुष नहीं, पशुओं में से भी एक पशु-विशेष का कलाकार के द्वारा चयन, क्या किसी विशेष सम्बंध को दर्शाता है? क्या वाहक और वाहन का संबंध है वह? चित्र के ऊपर चित्रकार का अपने-ही हाथों से "दुर्गा" लिख देना, क्या उस चित्र के पात्रों की ओर इंगित करता है? सोचिए और सोच कर देखिए।

मैंने भी एक प्रकार से सांकेतिक भाषा का ही प्रयोग किया है, आपके मन में कुछ प्रश्नों के बीज बोने के लिए। इससे अधिक स्पष्टता सम्भवतः उचित न होगी हमारे अपने-ही पूज्य के लिए। इतना भी लिखना कष्ट-दायक है। इसे पढ़ना भी मानसिक पीड़ा का कारण बनेगा आपके लिए। अतः मैं इस बात को यहीं छोड़ना चाहूँगा।

"माँ दुर्गा व्याघ्र के साथ सम्भोगरत" शीर्षक है इस चित्र का। आप इसे देख सकते है http://www.hindujagruti.org पर।

नग्न सीता मैया - हनुमान जी की पूँछ पर

source: www.hindujagruti.org 22-11-2006

नराधम मकबूल फ़िदा हुसैन का बनाया तैलचित्र

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

जिस प्रदर्शनी के माध्यम से यह चित्र बिक रहा हैं उसके वेबसाइट पर जाकर आप इस चित्र को देख सकते हैं, उसका मूल्य जान सकते हैं और उसे खरीद सकते हैं।

खरीदना बहुत आसान है। वेबसाइट पर जायें, ऑर्डर फॉर्म भरें, भुगतान करें इंटरनेट से क्रेडिट कार्ड द्वारा, अथवा फोन से क्रेडिट कार्ड द्वारा, अथवा डाक से चेक भेज कर, या फिर मनीऑर्डर भेज कर।

वेब-साइट का पता है http://www.artswithoutborders.com/artsnet/Artartswork.aspx?prodid=5480&gs=L&title=HANUMAN%20WITH%20SITA

मूल्य - अमरीकी डालर 550 (बिना फ्रेम) 650 (फ्रेम सहित) कैनवास के ऊपर मशीन के द्वारा छापी गई प्रति। साइज़ - 18"x24"। मूल प्रति भी उपलब्ध, अधिक दाम पर। सम्पर्क - Gallery ArtsIndia फोन: 212-725-6092/877-ARTSIND

कैनवास के ऊपर मशीन के द्वारा छापी गई प्रति को हर कोई खरीद सकता है। चित्र विश्व के किसी भी कोने तक पहुँच सकती है डाक, कुरियर द्वारा।

यह सारा विवरण मैंने 'उदाहरण स्वरूप' केवल एक चित्र के लिए दिया है। अन्य चित्रों के बारे में वेबसाइट http://www.hindujagruti.org पर जायें और स्वयं शोध करें।

- इतना सारा विवरण मैंने इसलिए दिया है कि आप जानें कि यह सब कल्पना नहीं बल्कि वास्तविकता है, चाहे अविश्वसनीय-सी ही क्यों न लगे। बिना सबूत के आप विश्वास नहीं करेंगे।

- इन कटु सत्यों को हजम करना आसान नहीं। आपकी संस्कृति के साथ क्या खिलवाड़ किया जा रहा है, यह आपको और आपकी संतानों को जानना चाहिए।

- आपका ध्यानाकर्षण करना है मेरा कर्तव्य। आपका कर्तव्य क्या है, इसका निर्णय आपको करना है।

नग्न सीता मैया - नग्न रावण की जाँघों पर

source: www.hindujagruti.org 22-11-2006

नराधम मकबूल फ़िदा हुसैन का बनाया तैलचित्र

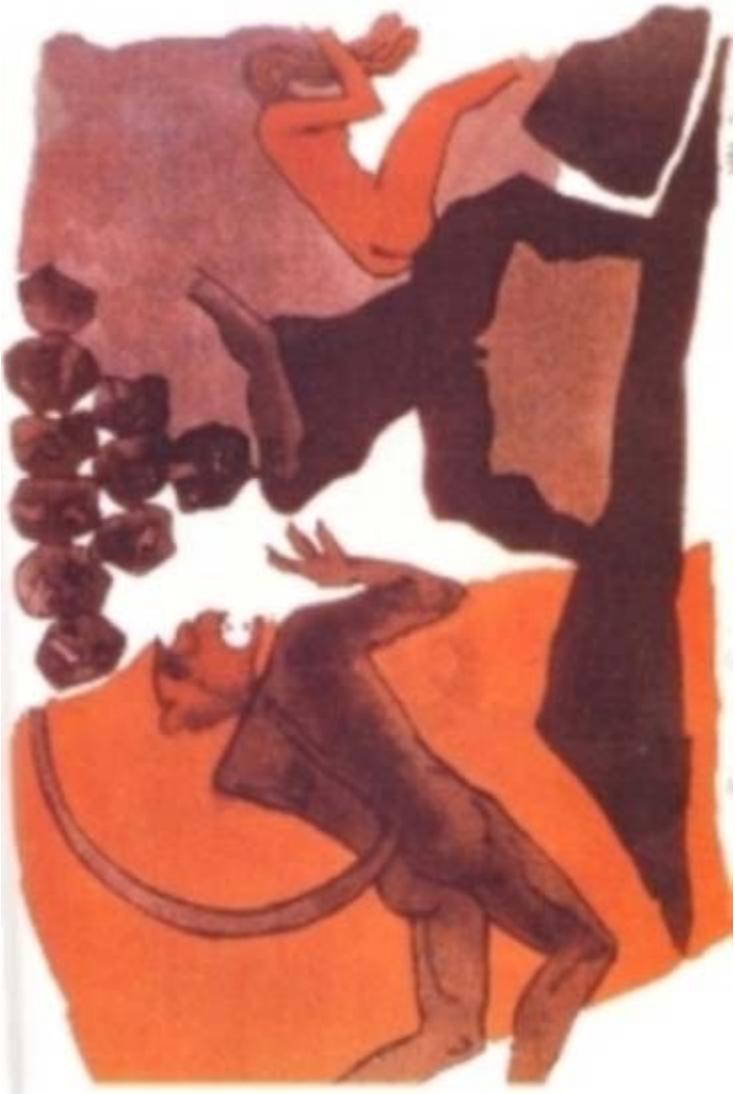

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

नग्न श्री राम एवं नग्न सीता मैया - हनुमान जी के काँधों पर

source: www.hindujagruti.org 22-11-2006

नराधम मकबूल फ़िदा हुसैन का बनाया तैलचित्र

नग्न श्री राम एवं नग्न सीता मैया - सम्भोगरत - हनुमान जी एक मूक दर्शक

source: www.hindujagruti.org 22-11-2006

नराधम मकबूल फ़िदा हुसैन का बनाया तैलचित्र

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

नग्न श्री राम - नग्न सीता मैया - नग्न हनुमान - श्री राम का सर कटा हुआ

source: www.hindujagruti.org 22-11-2006

नराधम मकबूल फ़िदा हुसैन का बनाया तैलचित्र

नग्न माँ लक्ष्मी

source: www.hindujagruti.org 19-11-2006

नराधम एम एफ़ हुसैन की पेंटिंग

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

नग्न माँ सरस्वती

source: www.hindujagruti.org 19-11-2006

नराधम एम एफ़ हुसैन की पेंटिंग

नग्न माता पार्वती

source: www.hindujagruti.org 19-11-2006

नराधम एम एफ़ हुसैन की पेंटिंग

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

नग्न हिन्दू ब्राह्मण - वस्त्रावृत सुल्तान

source: www.hindujagruti.org 19-11-2006

नराधम एम एफ़ हुसैन की पेंटिंग

नग्न भारत माता

source: www.hindujagruti.org 19-11-2006

नराधम एम एफ़ हुसैन की पेंटिंग

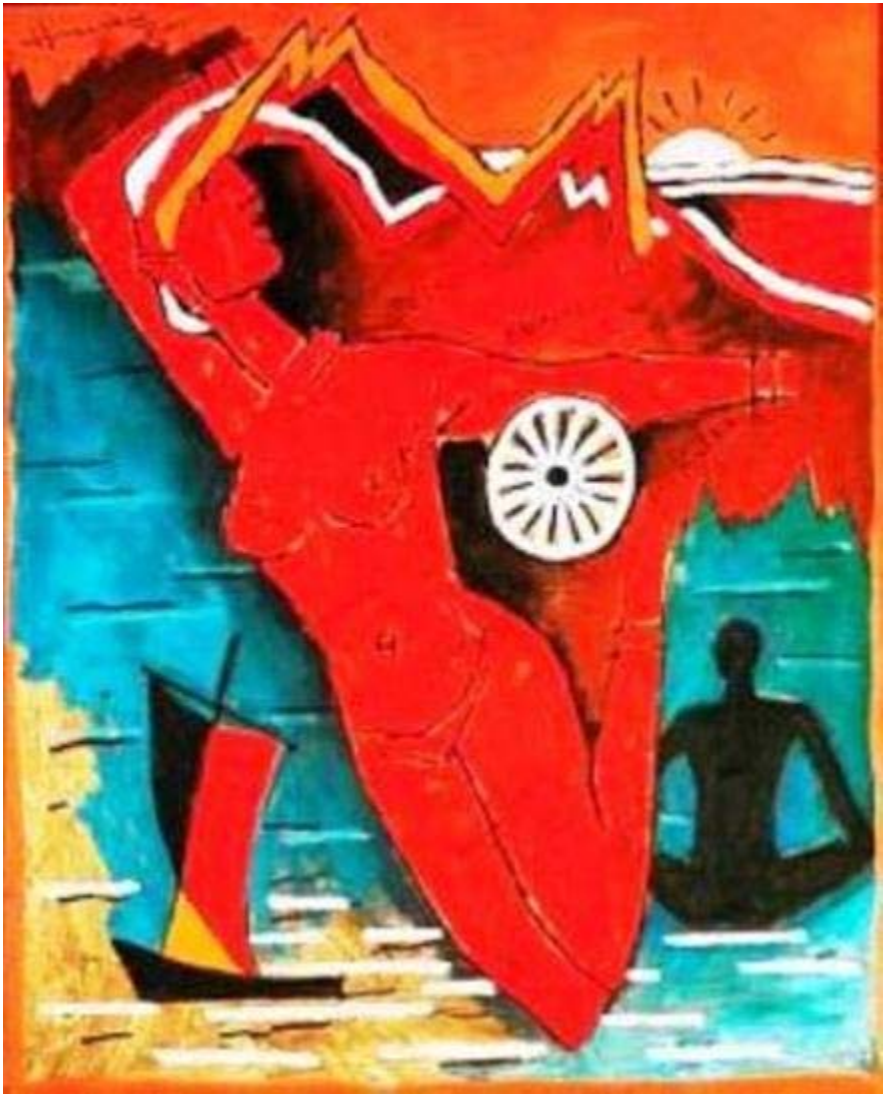

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

भारतमाता की तस्वीर पर उसने विभिन्न प्रान्तों के नाम लिख दिये हैं जो स्पष्ट पढ़ने में नहीं आ रहे हैं क्योंकि चित्र को अपने मूल आकार से बहुत छोटा कर दिया गया इस पृष्ठ पर उसे समाने के लिए, फिर भी आप उन नामों के छोटे-छोटे छाप देख सकते हैं इस चित्र पर।

एम एफ़ हुसैन जिसे केवल विश्व में ही नहीं बल्कि हमारे इस हिन्दू-बहुल देश में भी बड़ी इज़्ज़त दी जाती है क्योंकि हम हिन्दू उसके असली चेहरे को नहीं देखते

• एम एफ़ हुसैन को अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है एक बड़े कलाकार के रूप में। हमारा मार्क्ससिस्ट बुद्धिजीवी वर्ग भी उसका बड़ा समर्थक है। उनका कहना है कि यह कला है, और कलाकार को अपनी कला के माध्यम से, अपने आपको व्यक्त करने की पूरी छूट होनी चाहिये।

• तो फिर हुसैन अपनी, एवं अपने समर्थकों की, माँ-बहनों की नंगी तस्वीरें बना कर, अपनी कलाकारी का परिचय क्यों नहीं देता? वह अपनी, एवं अपने समर्थकों की माँ-बहनों की नंगी तस्वीरों को, बेचने के लिए वेबसाइट पर क्यों नहीं लगाता?

• आइए देखिए, हुसैन की माँ की फोटो, हुसैन कि बेटी की फोटो, पैगम्बर की बेटी फ़ातिमा की फोटो, यहाँ तक कि एक साधारण मुसलमान औरत की फोटो -- क्या इनमें से कोई भी नग्न है या फिर अर्ध-नग्न है? हर एक का शरीर अच्छी तरह से कपड़ों से ढका हुआ है। हुसैन जब उन सब के चित्र बनाता है तो उन्हें कपड़ों से पूरी तरह ढक देता है क्योंकि उनकी लज्जा उसे ढकनी है, क्योंकि वे उसकी नज़रों में बाजारू नहीं हैं, बाजार में बिकने के लिए नहीं हैं।

हुसैन की माँ

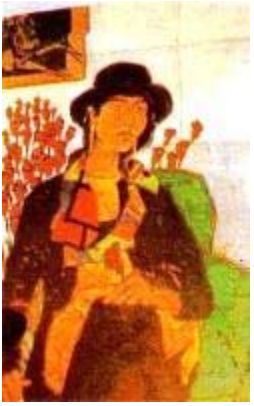

हुसैन की पुत्री

पैगम्बर की पुत्री फ़ातिमा

एक साधारण मुस्लिम औरत

• पर उसी नराधम की नजरों में हमारी माँ दुर्गा और सीता मैया वेश्यायें हैं, इसलिए उसने न केवल उन्हें पूर्ण नग्न ही दिखाया है, बल्कि सम्भोग करते हुए भी दिखाया है। उस नराधम की नज़रों में हमारी माँ लक्ष्मी, माँ सरस्वती, माँ पार्वती और भारतमाता, ये सभी बाजारू हैं, बाजार में बिकने वाली हैं।

• अब यह तो आपको तय करना है कि आप कब तक सहेंगे, और अपने मोक्ष की चिंता में स्वार्थी बने रहेंगे। आपको अपने-आपसे एक प्रश्न और भी पूछना है -- जब मोक्ष के कगार पर आप खड़े होंगे तो क्या ईश्वर आपसे यह नहीं पूछेंगे कि जिस धरती से तुम आ रहे हो, उस धरतीमाता की लज्जा ढकने के लिए तुमने क्या किया? क्या तुमने अपना कर्तव्य निभाया, या फिर भगोड़े की तरह मेरी शरण में आ गये? मैंने तुम्हें जो शक्ति और जो विवेक दिया था, क्या तुमने उसका सदुपयोग किया?

• आइए देखें कि हुसैन मुसलमान पुरुषों को कैसे चित्रित करता है। ये हैं शायर फ़ैज़ और ग़ालिब। आप देख चुके हैं वस्त्रावृत सुल्तान और पूर्ण नग्न ब्राह्मण को।

फ़ैज़ और ग़ालिब

हुसैन स्वयं को पूरे वस्त्रों में दिखाता है

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

• एम एफ़ हुसैन मुसलमान है। उसकी रग-रग में बसी हिन्दू के प्रति शत्रुता की भावना। यह कुरआन और हदीस की देन है, जिनके प्रति वह नराधम निष्ठावान है।

एम एफ़ हुसैन की अपनी वेबसाइट http://www.mfhussain.com/ पर जायेंगे तो ये शीर्षक पायेंगे (24-11-2006) -

• उस नराधम की 100 पेंटिंगें 100 करोड़ में बिकी हैं

• पेंटिंग नीलामी के द्वारा उस नराधम ने 300 करोड़ कमाये हैं

माँ दुर्गा माँ काली के प्रति इतनी अवज्ञा और इतनी घृणा क्यों?

माँ दुर्गा महिषासुर मर्दिनी हैं और माँ काली ने रक्तबीज असुर का संहार किया। असुर संस्कृतियों में इनके प्रति अवज्ञा एवं घृणा स्वाभाविक है।

• असुर सन्तानों की हर पीढ़ी इस शत्रुता को विरासत के रूप में अगली पीढ़ी को दे जाती है।

हर युग की तरह, कलियुग में भी, किस प्रकार से, असुर संतानों ने अपनी शक्ति को बढ़ाया इसकी दासताँ आप पायेंगे पुस्तक क्रमांक 12, 14, 22 इत्यादि में।

पर यह कहानी बहुत लम्बी और जटिल है। इस कहानी के हर पहलू पर रोशनी डालने के लिए अभी बहुत कुछ बाकी है -- पुस्तक क्रमांक 04, 06, 07, 10, 13 से हिन्दी में रूपन्तर के बात और भी बहुत कुछ सामने आयेगा।

• ये पुस्तकें आपकी पहचान करायेंगी असुर संतानों की सोच से, उनकी मनोवृत्ति से, उनके कलियुगी इतिहास से, उनकी शक्तियों से, एवं उनकी कमजोरियों से।

इंदिरा गांधी नैशनल ओपन यूनिवर्सिटी की एम-ए (इतिहास) की पाठ्य-पुस्तकों में देवी-देवताओं का अपमान

> *"दुर्गा एक ऐसी महिला हैं, जिन्हें शराब बेहद पसन्द है। महिषासुर के साथ संघर्ष के दौरान उन्होंने शराब पी रखी थी। दुर्गा के पुरुष शत्रु उन पर आसक्त रहते थे। वे उनसे युद्ध नहीं, बल्कि विवाह करना चाहते थे। देवी दुर्गा के परिवार ने शर्त रखी थी कि जो कोई दुर्गा को युद्ध में हरा देगा, उसका विवाह दुर्गा से करा दिया जायेगा। दुर्गा ने साफ कर दिया था कि वह अपने प्रेमियों के साथ कैसे युद्ध करेंगी। देवी दुर्गा के शत्रु इसे प्यार क इजहार मानते थे।"*

"यह सारी ऊलजलूल बातें इंदिरा गांधी नैशनल ओपन यूनिवर्सिटी के उन छात्रों को

पढ़ाई जा रही है, जो इतिहास में एम-ए कर रहे हैं। 'धार्मिक परम्परायें और भक्ति दर्शन' नाम की इस पुस्तक में दुर्गा के अलावा अन्य हिन्दू देवी-देवताओं का भी जमकर अपमान किया है। इस किताब के पेज नंबर 29 में भगवान शंकर के बारे में लिखा है कि -

> *"वह एक नग्न रहने वाले साधु थे, जो तपस्वियों एवं देवताओं की पत्नियों का शीलभंग करते थे। शिव का चरित्र विरोधाभासों से पटा था। वह तपस्वी भी थे और कामुक भी।"*

इसी तरह पेज 27 पर कृष्ण के बारे में लिखा है -

> *"महाभारत युद्ध में उनकी सलाह चालाकी भरी ही नहीं बल्कि धूर्तता पूर्ण भी होती थी।"*

इग्नू (इंदिरा गांधी नैशनल ओपन यूनिवर्सिटी) के पाठ्यक्रम के लिए एक भारी भरकम विशेषज्ञ समिति बनाई गई है। उसी की अनुमती से किताबें लिखवायी जाती हैं, लेकिन किसी ने भी इन बातों के लिए आपत्ति नहीं दर्ज कराई।"

लेख - शिशिर श्रीवास्तव, चैनल 7, नई दिल्ली
संदर्भ - दैनिक जागरण, नई दिल्ली, 19 जुलाई 2006
प्रेषक - मुरारि पचलंगिया, 462 सरस्वती बिहार, गुरुग्राम - 122 002 (हरियाणा)
प्रेषक का संदेश - *"अपने देश में भी दुष्प्रचार सरकारी संरक्षण में खूब हो रहा है।"*

उनका उद्देश्य

उन लोगों का उद्देश्य, अवज्ञा रूपी विष का बीजारोपण कर, हिन्दुओं की वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों को धीरे-धीरे, सुनियोजित ढंग से, पहले अ-हिन्दू और फिर हिन्दू-विरोधी बनाना। क्या यह एक षड़यन्त्र है हिन्दू समाज के विरुद्ध? सोच कर देखिए।

अमरनाथ यात्रा का संदेश

"इस पवित्र गुफ़ा के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द के अनुभव याद करते हुए बहन निवेदिता ने लिखा था -

> *"स्वामीजी ने कभी इतनी आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव नहीं किया था। ईश्वर की उपस्थिति को अनुभव कर वह इतना मुग्ध हो गए कि इसके बाद न जाने कितने दिनों तक वह किसी और चीज के बारे में बात ही नहीं कर सके।"*

बाद में स्वामी विवेकानन्द ने खुद भी लिखा -

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

"मैं इसके पहले इतने सुन्दर और प्रेरक स्थान में कभी नहीं रहा।"

अमरनाथ की यात्रा ऐसा ही प्रभाव यात्रियों के मन-मस्तिष्क में डालती है। दुनिया के सर्वाधिक सम्मोहक और जादुई मार्ग, जो स्वयं ही यात्रियों को दैवीय अहसास प्रदान करता है, पर चलने के बाद यात्रियों को 'हिम लिंग' के दर्शन होते हैं। इस हिमलिंग की कीर्ति निराली है और महानता अप्रतिम। जो इसके दर्शन करते हैं उन्हें उस सत्ता की उपस्थिति का अनुभव होता है जो अदृश्य होकर भी हर जगह व्याप्त है, जो अबोध होकर भी सब समझाने वाली है।

आध्यात्मिकता के उच्चतम बिंदु पर जब श्रद्धालु की सम्पूर्ण आस्था जागृत होती है तो उसकी मन की आँखों में भगवान शिव का रूप प्रकट होता है-अमरता के पर्वत द्वारा प्रदत्त एक अविनाशी छत्र के नीचे शांति से बैठे भगवान शिव। वह निरापद शंति के साथ सृजन और विनाश की प्रक्रियाओं के अपृथकीय स्वरूप का संदेश दे रहे हैं। अर्थात हर प्रारम्भ का अन्त है और हर अन्त का एक प्रारम्भ। शिव ईश्वरों के ईश्वर हैं। इसीलिए उन्हें महादेव कहा जाता है। महाभारत में भीष्म उनके बारे में कहते हैं -

> *"मैं उस विलक्षण महादेव के गुणों को व्यक्त करने में असमर्थ हूँ जो सर्वव्यापी हैं, लेकिन कहीं नजर नहीं आते। सभी देवता उनकी आराधना करते हैं। महादेव सभी प्राकृतिक घटनाओं से ऊपर हैं सपूर्ण आध्यात्मिकता के पर्याय। शिव अविनाशी हैं। सर्वोच्च हैं। वह तो स्वयं ब्रह्मा हैं।"*

अमरनाथ की पवित्र गुफा हिमालय की शुद्धतम तथा सबसे दृढ़ चोटियों में से एक पर स्थित है। हिमालय खुद भी हिन्दू परम्परा के अनुसार कठोरता, धीरता और शक्ति का प्रतीक है। हिमालय और भगवान शिव के बीच बहुत ही नजदीकी रिश्ता है। कालिदास ने हिमालय की व्याख्या शिव के अट्टहास के रूप में की।

भगवान श्रीकृष्ण ने भी भगवद्गीत में कहा 'पर्वतों में मैं हिमालय पर्वत हूँ'। एक बार जब विवेकानन्द से पूछा गया कि भारत में इतने अधिक देवी-देवता क्यों हैं तो उनका जवाब था--इसलिए कि हमारे पास हिमालय है। अमरनाथ की पवित्र गुफा तक वर्ष की एक छोटी सी अवधि में ही पहुँचा जा सकता है। आम तौर पर यह समय जुलाई और अगस्त का होता है। उस समय गुफा के अंदर एक शुद्ध श्वेत हिम लिंग का निर्माण हो जाता है। गुफा के शीर्ष से पानी कुछ रहस्यमय तरीके से टपकता है और बर्फ के रूप में जम जाता है। पहले एक ठोस आधार बनता है और फिर उसके ऊपर एक लिंग उभरने लगता है। पूर्णिमा पर यह पूर्ण आकार ग्रहण कर लेता है। यह माना जाता है कि उसी दिन भगवान शिव ने हिमालय की सुन्दर पुत्री पार्वती से जीवन के रहस्य उजागर किए थे।

यह भी माना जाता है कि जब भगवान शिव और पार्वती का वार्तालाप चल रहा था तब कबूतरों का एक जोड़ा वहाँ आया और उसने इसे सुना। शिव और पार्वती के अवतार के

रूप में यह जोड़ा आज भी यात्रा के समय गुफा में आता है। जम्मू-कश्मीर में राज्यपाल शासन के दौरान अगस्त-सितम्बर 1986 में मैंने पवित्र गुफा की पैदल यात्रा की थी। मेरे साथ संबंधित अधिकारी भी थे। हमारी कोशिश इस यात्रा मार्ग को श्रद्धालुओं के लिए और अधिक सुविधाजनक बनाने के तौर-तरीके जानना था, जैसा कि मैंने वैष्णो देवी की यात्रा के मामले में किया था।

हम सभी ने यात्रा के दौरान कबूतरों के जोड़े को देखा, जबकि वहाँ कोई अन्य पक्षी मौजूद न था। यह रहस्य की बात है कि बर्फ़ के आधार पर हिम लिंगम कैसे बन जाता है, कैसे यह खास पूर्णिमा के दिन पूरा आकार ग्रहण करता है और कैसे हर वर्ष कबूतरों का एक जोड़ा इसी समय वहाँ पहुँच जाता है? यहाँ तक कि सर्वाधिक नास्तिक माने जाने वाले लोग भी यह मानने को विवश हैं कि ये समस्त घटनायें महज संयोग से नहीं हो सकतीं।

अमरनाथ यात्रा अपने मौजूदा धार्मिक स्वरूप में दशनामी मंदिर, अखाड़ा, श्रीनगर में छड़ी मुबारक समारोह के साथ आरम्भ होती है। इस समारोह के बाद यात्री जत्थों में पहलगाम के लिए प्रस्थान करते हैं, जहाँ से संकरा रास्ता चंदनवाड़ी जाता है। यात्रा मार्ग के आसपास का वातावरण बेहद सुरम्य है। चंदनवाड़ी से पिशू घाटी (3171 मीटर) की खड़ी चढ़ाई आरम्भ होती है, जो यात्रियों को यह याद दिलाती है कि मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग कितना दुष्कर और श्रमसाध्य है। शेषनाग (3570 मीटर) पहुँचते ही यात्रियों के अन्दर ऐसी भावना प्रवाहित होती है जैसे उन्होंने स्वर्ग की दस्तक दे दी हो। वहाँ मौजूद सुन्दरता और शांति की व्याख्या ही नहीं की जा सकती। शेषनाग में बर्फ के समान ठंडे पानी में स्नान कर यात्री तरोताजा हो जाते हैं और चल पड़ते हैं सबसे दुर्गम स्थान महागुना (4350 मीटर) की चढ़ाई के लिए। वहाँ से एक छोटा सा ढलान पोशपठान के लिए आरम्भ होता है। अगला पड़ाव पंचतारनी है, जो पाँच पौराणिक धाराओं का संगम है। अन्त में यात्री अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा और आस्था के साथ अमरनाथ की गुफा पहुँचते हैं, जहाँ देवों के देव शिव विराजमान हैं।

ईश्वर के दर्शन कर लेने की भावना सारी थकान मिटा देती है। तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस होने के बावजूद यात्री अमरावती में स्नान का कोई भी अवसर खोना नहीं चाहते। हाल में माता वैष्णो देवी बोर्ड की तर्ज पर जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल की अध्यक्षता में एक सांविधिक बोर्ड का गठन किया गया है, जो परंपरागत यात्रा मार्ग के साथ ही मौसमी मार्ग (बाल ताल होकर) को सुगम बनाने के बेहतरीन प्रयास कर रहा है। एक हेलीकॉप्टर सेवा को भी आरंभ किया गया है। बोर्ड और राज्य सरकार के बीच जो मतभेद उत्पन्न हो गये थे उन्हें अधिकांशतः सुलझा लिया गया है। इस वर्ष यात्रा 11 जून से आरंभ होकर 9 अगस्त तक जारी रहेगी। इस यात्रा का संबंध भारत की सांस्कृतिक एकता से भी है, जिसमें समाहित है कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और काठियावाड़

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

से लेकर कामरूप तक एक होने की दृष्टि। जब कुछ लोग केवल संविधान के अनुच्छेद 370 के अर्थों में कश्मीर के शेष भारत के साथ संबंध की बात करते हैं तो आश्चर्य होता है। वे नहीं जानते कि कश्मीर से भारत का संबंध कितना गहरा है? यह संबंध तो लोगों के मन-मस्तिष्क में हजारों वर्षों से कायम है।

जगमोहन (लेखक पूर्व केन्द्र मंत्री हैं)

संदर्भ - दैनिक जागरण, नई दिल्ली, 19 जुलाई 2006

प्रेषक - महेश चन्द्र, 1-ए बिशप राकी स्ट्रीट, फ़ैज़ाबाद रोड, लखनऊ 226 007, मो 9235552983

आपके सामने केवल दो ही विकल्प हैं

- या तो आप इन असुरों का समूल नाश करने हेतु कटिबद्ध हों
- या फिर आप, अपनी संतानों के हाथों ही, अपनी ही संस्कृति का नाश होने दें
    - आपकी संताने, इन असुरों से शिक्षा पाकर एवं उनकी संगत में रहकर, स्वयं आपकी संस्कृति का नाश करने का कारण बनेंगी।
        - आपके पास केवल एक पीढ़ी का समय और बचा है - आपकी सातवीं पीढ़ी।

परिशिष्ट

आपका अगला कदम - ज्ञान आँखें खोलता है, आपको अपने कर्तव्य का बोध कराता है। आपको सही और गलत के बीच पहचान करने की योग्यता देता है, और सत्य के पक्ष में खड़े होने की क्षमता देता है। ज्ञान आपको सत्य की रक्षा करने के लिए कटिबद्ध करता है। परन्तु अधूरा ज्ञान आपकी क्षति भी कर सकता है। अधूरा ज्ञान आपको उत्तेजित कर सकता है, और आपको ऐसे कार्य की ओर प्रेरित कर सकता है जो हलचल तो मचा दे, पर कोई स्थायी समाधान न दे। अतः एक-एक कदम आगे बढ़ायें। अभी तो आपकी यात्रा आरम्भ हुई है। अनेक पड़ाव आने बाकी हैं।

प्रेरणा के स्त्रोत - अखिल भारत वैचारिक क्रांति मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष वयोवृद्ध आदरणीय श्री रवि कान्त खरे (जिन्हें लोग आदर से "बाबाजी" कह कर बुलाते हैं) 72 वर्ष की इस आयु में भी स्वयं उत्तर भारत के गाँव-गाँव में जाकर इन पुस्तकों का निःशुल्क वितरण करते हैं। उनके इस प्रयास की जितनी प्रशंसा की जाये वह कम है। उनके सहयोगी 82 वर्षीय श्री महेश चन्द्र भगत जी जहाँ भी जाते हैं, इन्हें लोगों तक पहुँचाते हैं।

बनवासी कल्यान परिषद की सुश्री शची रैरिकर अपने सहयोगियों के साथ "शबरी कुम्भ" (गुजरात 2006) में गईं, उस समय उपलब्ध पुस्तकों को लेकर, जिन्हें वहाँ आये हुए आदिवासियों ने बड़े आग्रह के साथ अपना धन देकर खरीदा। शची जी के इस योगदान का मैं अत्यंत आदर करता हूँ।

मुम्बई की एक गृहस्थ महिला ने पुस्तकें खरीदीं उन्हें अपने साहू समाज के लोगों के घर-घर तक पहुँचाने के लिए। यदि मैंने उनमे कुछ देखा तो वह थी उनकी अकृत्रिम सादगी। उन्होंने अपने उद्देश्य को बहुत ही सहज रूप में मेरे सामने रखा। उनके सामने कोई बहुत बड़े सपने नहीं थे। यदि कुछ था उनके पास तो (1) आत्मविश्वास (2) इस बात की प्रतीति कि आज समाज को इसकी आवश्यकता है (3) इस प्रयास के द्वारा वह अपने परिवार के लिए थोड़ा पैसा घर ला सकेंगी।

उनके इस प्रयास को मैं अत्यन्त सराहनीय मानता हूँ। आज यदि हमारे समाज में मातृ-शक्ति का पुनर्रुत्थान हो तो हमारे पावन धर्म को, एवं हमारी पावन संस्कृति को पुनर्जीवन मिल पायेगा। यह ईश्वर की महिमा है जो उन्होंने इस अनजान महिला को मुझ तक पहुँचाया। इन सबके पीछे ईश्वर की अदृश्य इच्छा है जो हम सभी घटकों को एक-एक करके साथ ला रहे हैं। हमें यह कार्य अपनी सफलता के लिए नहीं करना है, बल्कि इसे ईश्वर को समर्पित करते हुए करना है।

इनके अलावा अनेक ऐसे कर्मठ व्यक्ति हैं जिन्होंने इन पुस्तकों को अनेक प्रान्तों के विभिन्न व्यक्तियों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके नाम यहाँ अलग-अलग नहीं दिये गए हैं पर इसका अर्थ यह नहीं कि उन सभी के योगदान की महिमा इस कारण कुछ कम हो गई। पाठकों से निवेदन है कि इन सभी कर्म योगियों का अनुसरण करें एवं हमारे धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हेतु कटिबद्ध हों।

आभार - मुम्बई के श्री आनन्द शंकर पाण्ड्या जी ने, एवं कैलिफ़ोर्निया के श्री नरेन्द्र देवदास ने, अपने खर्चे पर, भारतवर्ष के अनकहे इतिहास पर अँग्रेज़ी में लिखित पुस्तक क्रमांक 7 को, विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पुस्तकालयों को भिजवाया।

श्री नेमीचन्द सिंघवी (नागौर, राजस्थान) एवं श्री त्रिलोकीनाथ गुप्ता (रायबरेली, उ प्र) ने पुस्तक क्रमांक 15 की एक-एक हजार प्रतियाँ अपने खर्चे पर छपवायीं, उन प्रतियों को अपने इलाके के लोगों में बाँट कर उनमें हिन्दू धर्म के रक्षार्थ जागृति लाने के पुनीत

उद्देश्य से।

आप में से यदि कोई, किसी भी पुस्तक को, स्वयं स्थानीय रूप से छपवाना चाहें तो, प्रकाशक के स्थान पर मेरा नाम नहीं दे सकेंगे, एवं मेरे नाम से नियत की गई ISBN का प्रयोग नहीं कर सकेंगे। टाइपिंग में हुई, एवं प्रूफ रीडिंग में छूट गई, गलतियों का दायित्व भी आप पर ही होगा। आप चाहें तो, मैं आपको मुम्बई से छपवाकर भिजवा सकता हूँ। छपवाने एवं भेजने का खर्च आप मुझे अग्रिम भेज सकते हैं। पुस्तक लेखन, एवं प्रकाशन में, अनेक अन्य खर्च भी होते हैं, पर मैं उनकी माँग आपसे नहीं करूँगा, आप स्वेच्छा से यदि कुछ देना चाहेंगे तो वह स्वीकार्य होगा।

किसी भी प्रकार से, आर्थिक योगदान के इच्छुक व्यक्तियों से, मेरी प्रार्थना है कि धन का स्रोत स्वच्छ हो, जो मेरी दृष्टि में अत्यन्त आवश्यक है।

श्री आनन्द शंकर पाण्ड्या (मुम्बई); श्री नरेन्द्र देवदास (अमेरिका), श्री किरण अग्रहारा (अमेरिका), डॉ सत्यांशु कुण्डु (अमेरिका), श्री पन्ना लाल (अम्बाला); श्री चिराग गोधानिया (इंग्लैण्ड); श्री महेश चन्द्र (लखनऊ); श्री के राजगोपाल (कोयम्बटोर); श्री पी एस नायर (दुबई); श्री वसन्त पेंढारकर (पुणे); प्रोफेसर रमेश दुदानी (मुम्बई) ने, अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार, मेरे प्रयास में कुछ न कुछ, आर्थिक योगदान दिया है।

लेखन, प्रकाशन, संग्रहण तथा प्रेषण की प्रक्रिया मे अनेक प्रकार के खर्चे होते हैं। छपाई खर्च केवल उनका एक हिस्सा मात्र है। इन सब पर हुए खर्च का बोझ मैं स्वयं ही उठाता हूँ। इन सभी खर्चों का बोझ कुछ हद तक कम हो जाता है, इन सभी आर्थिक योगदानों से। अतः इन सभी व्यक्तियों के प्रति आभार प्रकट करना मेरे लिए स्वाभाविक ही है। हालांकि मैं जानता हूँ कि ये सभी व्यक्ति, बिन माँगे, सहायार्थ सामने आते हैं, ईश्वरीय इच्छा से प्रेरित होकर। अतः यह सब सामग्री ईश्वर को ही समर्पित है।

अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद - आप में से यदि कोई व्यक्ति इस पुस्तक का किसी भी अन्य भारतीय भाषा में अनुवाद करने के इच्छुक हों तो कृपया मुझे लिखें. अनुवाद का सहज होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि मेरा उद्देश्य इन्हें गाँव-गाँव तक पहुँचाना है. और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि अनुवाद करते हुए मूलभाव में कोई परिवर्तन न किया जाये.

किस दृष्टि से देखा मैंने अन्य धर्मों को

मैं हिंदू पैदा हुआ - हिंदू हूँ - हिंदू ही मरना चाहूँगा। अपने इष्टदेव श्री सिद्धि विनायक गणपति को मैंने प्रत्येक स्थान पर पाया चाहे वह मंदिर रहा हो, या मस्जिद, या गिरजा। अपने पाकिस्तानी ड्राइवर मलिक के साथ मैं शारजाह के मस्जिद में गया और उसके बगल में बैठ कर अपने इष्टदेव को याद किया, जबकि उसने अपनी नमाज़ पढ़ी। तंज़ानियन-ओमानी हमूद हमदून बिन मुहम्मद के घर पर, उसके परिवार के साथ, एक ही बहुत बड़ी थाली में से, हम सभी ने एक साथ भोजन किया, उनके एक करीबी रिश्तेदार की मौत के बाद, मस्जिद से लौट कर। मुम्बई में एक कैथोलिक चर्च के "मास" के दौरान मैं गिरजे में मौजूद था। कैनेडा के एक प्रोटेस्टेंट चर्च में "सरमन" के समय मैं उपस्थित रहा। मुम्बई में यहूदियों के "सिनगॉग" एवं पारसियों के टेम्पल में मैं गया। कैनेडा में बौद्धों के एक मंदिर में मैंने मेडिटेशन किया। मैने यह सब किया एक हिंदू के रूप में जो यह मानता है कि (1) ईश्वर एक है (2) लोग उसे विभिन्न रूपों में अनुभव करते हैं और (3) प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है, अपने ढंग से उसे अनुभव करने के लिए।

अपने आप को भुलावे में रखा कि सभी धर्म समान हैं

एक हिंदू को यह "नहीं" सिखाया जाता कि केवल मेरा ईश्वर ही "सच्चा" ईश्वर है और बाक़ी सभी के ईश्वर "झूठे" ईश्वर हैं, जैसा कि यहूदियों को सिखाया जाता है, ईसाइयों को सिखाया जाता है, और मुसलमानों को सिखाया जाता है। धरती के जिस किसी भी कोने में मैं रहा, मैंने सभी धर्मों को एक जैसा जाना, और माना। जाने कितने लोगों को मैंने नौकरी दी, पर कभी यह न सोचा कि वह हिंदू था, या मुसलमान था, या ईसाई था।

उन दिनों मेरी सोच धर्मों की भिन्नता की ओर न जाती क्योंकि मैं "अनजान" था। मैं जानता नहीं था कि विभिन्न धर्म क्या सिखाते हैं। मैं एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में जीता रहा था जिसमें सभी धर्म "समान" हुआ करते थे। अभी भी मैंने उस कड़वी सच्चाई को न जाना था, क्योंकि मैंने इस बात की आवश्यकता कभी न महसूस की थी कि मुझे "स्वयं" विभिन्न धर्मों का अध्ययन करना चाहिए।

एक अज्ञानी के रूप में वस्तुतः मैं बड़ा "सुखी" था, उन ज्ञानियों पर पूर्णतया विश्वास कर जिन्होने मुझे उस "महान असत्य" का पाठ पढ़ाया था कि सभी धर्म "समान" हैं एवं "सभी

 ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

धर्म प्रेम व शांति की शिक्षा" देते हैं। उन्होंने ऐसा क्यों किया? क्या वे स्वयं अज्ञानी थे, और उसी अज्ञान को, अपने अनुयायियों में बाँटते रहे थे? या फिर सत्य की प्रतीति थी उन्हें, पर किसी निहित स्वार्थ की पूर्ति हेतु वे असत्य को सत्य का रूप देते रहे थे?

फिर एक दिन हुआ सच्चाई से सामना

जीवन के पचास वर्ष बीत चुके थे, और तब जाकर मैं बैठा, विभिन्न धर्मों की शिक्षाओं का अध्ययन करने। मैंने पाया कि ये शिक्षाएँ बहुत ही स्पष्ट रूप से झलकती हैं, उन धर्मों के अनुयायियों की "सोच" में एवं उनके "आचरण" में। गहराई में गया तो मैंने जाना - किस प्रकार से प्रत्येक धर्म ने, मानव "इतिहास" एवं "वर्तमान" की घटनाओं को रूप दिया। मैंने देखा कि धर्म, इतिहास एवं वर्तमान की घटनाओं के बीच एक गहरा, और सीधा संबंध है। निष्कर्ष बहुत ही स्पष्ट था - हम इन जानकारियों को नज़र अंदाज तो कर सकते हैं, पर अपनी ही क्षति करके। जब तक मैं सत्य से अनजान रहा, तब तक बड़ा "सुखी" रहा। जब सत्य से सामना हुआ तो एक बवंडर उठा मेरी भावनाओं के क्षितिज पर। जब ज्वालामुखी शांत हुआ तब बहुत कुछ पीछे छूट चुका था।

किसी दल, किसी पंथ, किसी संस्था का सदस्य नहीं मैं

मैं "न" तो किसी संगठन का सदस्य हूँ, "न" किसी राजनैतिक दल का, "न" किसी धार्मिक पंथ का, "न" किसी सामाजिक संस्था का। मैं स्वतन्त्र ही भला हूँ। मैं किसी भी संस्था के बंधनों में अपने आपको जकड़ा हुआ पाना नहीं चाहता। "न" ही कोई अभिलाषा है मुझमें, राजनीति के दलदल में फँसने की। ख्याति की मुझे चाह नहीं, इसलिए जन सभाओं में भाग लेने की इच्छा नहीं, ख्याति प्राप्त लोगों से मिलने की उत्कंठा नहीं।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

एक ऐसे परिवार में जन्मा था मैं, जहाँ "अध्यात्म एवं उच्च शिक्षा" का प्रचलन अनेक पीढ़ियों से रहा था। मेरे पिता स्वर्णपदक प्राप्त इंजीनियर थे। पितामह डॉक्टर थे। प्रपितामह शिक्षाविद् एवं लेखक थे। पितामह के पितामह, व्यवसाय त्याग कर, अपने जीवन के अंतिम काल में, संसार में रह कर भी, एक योगी बन गए थे। सभी के कुछ-कुछ अंश मुझे मिले। मातृपक्ष के पितामह एक जाने-माने शल्यचिकित्सक थे। अपने माता-पिता की प्रथम संतान होने के कारण, परंपरा के अनुसार, मेरा जन्म, मातृपक्ष के पितामह के घर, 25 जनवरी 1952 को बाँकुड़ा (पश्चिम बंगाल) में हुआ था। इस प्रकार मैं एक "हिंदू बंगाली" परिवार में जन्मा, पला और बड़ा हुआ। श्री राम कृष्ण परम हंस देव का,

अनन्य भक्त भी रहा था मैं।

शिक्षा एवं कार्य

विश्वविद्यालय की डिग्री एवं भारतवर्ष तथा विदेश से तीन प्रोफ़ेशनल योग्यताओं के आधार पर, मुझे कई देशों के निगमित क्षेत्र में उच्च स्तर पर, व्यापक प्रशासनिक कार्यभार सँभालने का अवसर भी मिला। इस बीच, 20 विभिन्न देशों के व्यक्तियों के साथ निकट संपर्क में कार्य करने का, एवं उन्हें जानने का भी, समुचित अवसर मिला। पचीस वर्षों तक अथक परिश्रम करने के पश्चात, अब मैंने कार्य निवृत्त होकर एकांत वास का आश्रय लिया है।

व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की तृप्ति

श्री नारायण की दया से मेरे जीवन की "व्यक्तिगत" महत्वाकांक्षाएँ तृप्त हो चुकी हैं। अब मैं, अपने समय एवं परिश्रम के बदले में, कुछ भी नहीं चाहता। इस कारण, मैं कार्य में पूर्ण मनोयोग के साथ, एकांत ही चाहता हूँ।

किसके लिए है मेरा आज का यह कर्म

मेरा कार्य, केवल उन्हीं लोगों के लिए है जो इसकी महत्ता को पहचानने की योग्यता रखते हैं। मुझमें अब कोई इच्छा नहीं रही कि मैं उन व्यक्तियों को समझाने में अपना समय एवं अपनी ऊर्जा नष्ट करूँ जो मेरी बात को समझने की स्थिति तक अभी नहीं पहुँचे। ऐसे व्यक्ति, इन लेखों की महत्ता को तभी समझेंगे, जब पानी सर तक आ पहुँचेगा एवं डूबने की संभावना उन्हें बहुत ही "निकट" से दिखने लगेगी। फिर भी मुझे अपना दायित्व पूर्ण समर्पण की भावना के साथ निभाते जाना है, एवं उस कर्म को श्री नारायण को अर्पित करते हुए, आगे बढ़ते जाना है। आज यही मेरी "पूजा" है।

जो कर्म ईश्वर के निमित्त हो एवं ईश्वर को समर्पित हो,
उसे काल (समय) की परिधि में नहीं बाँधा जा सकता।

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04

संदर्भ सूची

क्रम - अंतर्राष्ट्रीय मानक पुस्तक क्रमांक ISBN [संस्करण] लेखक, शीर्षक

ISBN 0-14-100437-1 [2000] F Max Muller, *INDIA what can it teach us?*
ISBN 81-85990-21-2 [1995] Ishwar Sharan, *The Myth of Saint Thomas and the Mylapore Shiva Temple*
ISBN 81-85990-46-8 [1997] Matilda Joslyn Gage, *Woman, Church and State - a historical account of the status of woman through the Christian ages with reminiscences of the matriarchate*
ISBN 81-85990-60-3 [2000] David Frawley (Vamadeva Shastri), *How I became a Hindu-my Discovery of the Vedic Dharma*
The Free Press Journal, Mumbai edition
Hindustan Times, Mumbai edition
The Times of India, Mumbai edition
दैनिक जागरण, नई दिल्ली
फ़ादर कामिल बुल्के, *अंगरेजी-हिन्दी कोश,* काथलिक प्रेस, राँची, 1968
हिन्दू वॉइस, मासिक पत्रिका (वार्षिक सदस्यता 125 रु, 3 वर्ष 250 रु), 4 अलक ज्योति, आरे मार्ग, गोरेगाँव पूर्व, मुम्बई 400063, संपादक पी. दैवमुथु, फोन 28764418, 28764460, 28742812

अन्य भाषाओं में हमारे प्रकाशन

01 Arise Arjun - Awaken my Hindu nation (4th edition soon)
02 Ayodhya Shri Raam Mandir - Facts that did not reach you all (3rd ed current)
04 Christianity in a different Light - Face behind the Mask (4th edition soon)
05 Gita Today - a different perspective (2nd edition soon)
06 Judaism Christianity Islam Communism Hinduism (5th edition soon)
07 History of BhaaratVarsh in a new Light (4th edition soon)
08 Popes Saints Cardinals Archbishops Bishops (3rd edition soon)
09 Compact edition of Book 04 (2nd edition current)
10 Volume II of Book 04 (1st edition current)
11 These documented Results of 4-Varn system can make you proud of your Hindu heritage (2nd edition soon)
13 Muslim BhaaratVarsh - expect this to happen to 'You' pretty soon (2nd ed next)
17 யூத மதம், கிறித்துவம், இஸ்லாம், கம்யூனிஸம், இந்துமதம் (पुस्तक 06 तमिल में)
21 Split edition of Book 04 (Part 1)
23 Split edition of Book 01 (Part 1 Journey of Hindu society)
24 Split edition of Book 01 (Part 2 Frauds on Hindu society)
25 Religions Teach Hatred and Enmity - Sanaatan Dharm does not

हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों की सूचि -

"मज़हब ही सिखाता है आपस में बैर करना, एक सनातन धर्म के सिवा" पुस्तक क्रमांक 15 बाइबिल, कुरआन, वेद, उपनिषद एवं भगवद्गीता की कुछ झलकियाँ, जो आप में से अनेकों की सोच को बदल सकती है।

"कुरआन क्या सिखाता है मुसलमानों को और उसे जानना हिंदुओं के लिए कितना आवश्यक है" पुस्तक क्रमांक 14 कुरान की विस्तृत व्याख्या।

"यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम, कॉम्यूनिज़्म, हिंदू धर्म" पुस्तक क्रमांक 22 लोकप्रिय धर्मों एवं पंथों की तुलना, एक नये दृष्टिकोण से, एवं नई व्याख्याओं के साथ (प्रथम खण्ड उपलब्ध है)।

"यदि सत्य का ज्ञान होता आपको तो शायद आपकी सोच ही बदल जाती" पुस्तक क्रमांक 12 ईसाई धर्म के सर्वोच्च धर्माध्यक्षों, ईसाई संतों, ईसाई धर्मगुरुओं के जीवन की वे सच्चाइयाँ जो आपको अचम्भे में डाल देंगी।

"वे जो हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में इतनी गन्दी-गन्दी बाते कहते हैं, और आप हैं कि बस चुप्पी साधे बैठे रहते हैं" पुस्तक क्रमांक 16 ईसाई धर्माध्यक्ष, हिन्दू धर्म को किस दृष्टि से देखते हैं, और वे ऐसा क्यों करते हैं। ईसाई-अँग्रेज़ी शिक्षा-पद्धति में पढ़े पले-बड़े, मार्क्ससिस्ट सोच से प्रभावित, हमारी शिक्षा-पद्धति को दिशा देने वाले, किन गंदी नज़रों से हिन्दू धर्म कि ओर देखते हैं, और अपनी इस गन्दी सोच का कैसे प्रचार-प्रसार करते हैं, इसकी गाथा।

"धरती माता का थोड़ा सा ऋण तो चुकाते जाइए, जाने से पहले" पुस्तक क्रमांक 20 सनातन धर्म की रक्षा हेतु विद्यार्थियों, गृहस्थों, एवं सन्यासियों का दायित्व, आज के संदर्भ में।

"राम मंदिर तुम्हें पुकारता" पुस्तक 3 भावना+तर्क का संगम, "कहानी एक षड़यंत्र की" पुस्तक 18 "हमारे बुद्धिजीवी, हमारी मीडिया, हमारे न्यायाधीष" पुस्तक 19 तर्क प्रधान प्रस्तुति (अयोध्या से संबंधित वे सच्चाइयाँ जो आप सब तक नहीं पहुँची)।

"आतंकवाद का एक अन्य पहलू, राष्ट्र का इस्लामीकरण" पुस्तक क्रमांक 27 एक अलग नजरिए से देखें आतंकवाद के विषय को।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान -

श्री रवि कान्त खरे (बाबाजी), DS-13 निराला नगर, लखनऊ 226 020 फोन 0522-2787083
श्री महेश चन्द्र लखनऊ मोबाइल 92355 52983
सुश्री शची रैरिकर इन्दौर मोबाइल 98935 67122
मानोज रखित मुम्बई 400 066 मो 98698 09012

PRINTED BOOK छपी हुई पुस्तक
वजन **100 ग्राम** से कम डाक टिकट **1 रुपया**

डाक टिकट

यहाँ चिपकायें

TO पुस्तक पाने वाले का नाम पता -

FROM पुस्तक भेजने वाले का नाम पता -

पुस्तक किसके अनुरोध पर भेजी गई -

ISBN 81-89746-16-2 पुस्तक क्रमांक 16 संस्करण 04 कोड 16_04